श्री सद्गुरुवे नमः

70 प्रलय मारग माहीं

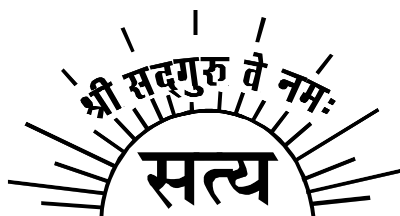
बाहर भीतर व्यापक को है सकल ठौर में बासा।
उत्पति प्रलय कौन करत है को कर सकै तमासा।।

सन्तो सो सतगुरु मोहि भावे जो आवागमन मिटावै।
द्वार न मूदे पवन न रोके न अनहद उरझावे।।

ज्योति निरंजन लग काल पसारा।
मन माया इन्से भई किया सृष्टि विस्तारा।।

—सतगुरु मधु परमहंस जी

साहिब बन्दगी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के .)

70 प्रलय मारग माहीं

—सतगुरु मधुपरमहंस जी

First Edition	—	June, 2011
Copies	—	5000

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri
Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)
Ph. (01923) 242695, 242602

Mudrak : Deepawali Printers, Sodal Road, Preet Nagar, Jalandhar

विषय सूची पृष्ठ संख्या



दो शब्द

आपके पास शुद्ध आत्मज्ञान पहुँचाना चाहता हूँ। आज शुद्ध आत्मज्ञान की बात कोई नहीं कर रहा है। सब भटके हुए हैं। कुछ बाहर में भटके हुए हैं तो कुछ अन्दर में। कोई भी सच्चे आत्मज्ञान की बात नहीं कर रहा है।

इस संसार में सगुण-निर्गुण से संबंधित जितनी भी भक्तियाँ प्रचलित हैं, सब काल की हैं। उनमें किसी में भी पूर्ण आत्मज्ञान नहीं है। जब तक आत्मज्ञान नहीं हो जाता तब तक जीव सदा के लिए भवसागर से नहीं छूट सकता है। इस जीव को सत्य-भक्ति की राह दिखाने वाला भी कोई नहीं मिलता। अमर-लोक का संदेश देने वाला भी कोई नहीं मिलता।

वा घर की सुधि कोई न बतावे, जहँवा से हंसा आया है॥

यदि मिलता भी है तो वो खुद वहाँ नहीं पहुँचा होता है, केवल साहिब की वाणियों की नक़ल करके ही बोलता है। इसी कारण फिर आ-जाकर निरंजन में ही उलझा देता है। इस तरह सत्य-भक्ति से रहित जीव आत्मज्ञान से बहुत दूर हो गया है। जब तक जीव अमर-लोक में नहीं पहुँच जाता, जब तक जीव सच्चे साहिब को नहीं पा लेता, तब तक सदा के लिए मुक्त नहीं हो सकता है। अमर-लोक में पहुँचकर ही पूर्ण आत्मज्ञान होता है। और उस लोक में पहुँचने के लिए सच्चे सद्गुरु के सच्चे नाम की ज़रूरत है। पर दुनिया इस रहस्य को नहीं समझ पाती है और पाखण्डियों के चंगुल में फँसकर बाहर भटक जाती है। वो प्रभु तो अन्दर में बैठा हुआ है, पर दुनिया उसे बाहर खोज रही है, क्योंकि स्वार्थियों ने उलझा दिया है। मनुष्य भटक रहा है, उसे पाने के लिए कमाई, योग, जप, तप, ध्यान आदि कर रहा है, पर इन चीज़ों से वो नहीं मिलने वाला। वो प्रभु तो सहज में ही मिलने वाला है। वो तो अन्दर में ही बैठा है। ज़रूरत है तो केवल सद्गुरु के द्वारा उसे प्रकट कर देने की। अन्यथा वो प्रभु आपसे कहीं दूर नहीं है।

पानी में मीन पियासी। मोहि सुनि सुनि आवत हाँसी॥
घर में पड़ी वस्तु नहिं सूझे, बाहर खोजन जासी॥
मृग की नाभि माहिं कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी॥
आत्म ज्ञान बिना सब सूना, का मथुरा का कासी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सहज मिले अविनासी॥



न तो यह मन बाँध नचाए

जो रक्षक तहँ चीह्नत नाहीं। जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं।।

कैसी सेवा कर रहे हैं ? इतने सुरक्षित स्थान पर रहता है कि लाख कोशिश करने पर भी पकड़ में नहीं आता है। बड़े-बड़े बुद्धिजीवी भी नहीं जान पाए कि कैसे नचा रहा है।

मनही आहे काल कराला, जीव नचाए करे बेहाला।
जीव के संग मन काल रहाई, अज्ञानी नर जानत नाहीं।।

मन जब सुलाना चाहे, सुला देता है। जब खिलाना चाहे, खिला देता है।

मन हंसे मन रोवे, मन जागे मन सोवे।
मन लेवे मन देवे, मन का सब व्यवहार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से।।

मन ने हंसी की तरंग छोड़ी तो आप हंसने लगते हैं। मन ने दुख की तरंग छोड़ी तो आप दुखी हो जाते हैं।

मन ही कायर मन ही दाता।।

इस तीन-लोक में पूरा मन ही विराजमान है। उसी का राज्य चल रहा है।

ताहि न चीह्नत पंडित काजी।।

किसी तपस्या का असर उसपर नहीं पड़ता। इतनी सुरक्षित जगह बैठा है। काबू नहीं हो पा रहा है। किसी ध्यान, ज्ञान का, किसी तपस्या का असर नहीं पड़ रहा। रावण बड़ा ज्ञानी था। चारों वेदों का ज्ञाता था, लेकिन पराई स्त्री को हरण करके ले गया। साहिब का शब्द कितना जोरदार है।

क्या हुआ वेदों के पढ़ने से न पाया भेद को।
आत्मा जाने बिना कोई ज्ञानी कहलाता नहीं।।

मन चाहता क्या है? वो चाहता है कि आत्मा को किसी कीमत पर न समझे। मन का एक लक्ष्य है। मन किसी भी कीमत पर आपको आत्मा के पास नहीं जाने देगा। मन का यही लक्ष्य है कि आत्मा से दूर रखे। तभी तो कह रहे हैं-

तेरा वैरी कोई नहीं, तेरा वैरी मन।।

मैं गोण्डा में सत्संग के बाद विश्राम कर रहा था। एक बंदा काफी देर से बाहर बैठा हुआ था। जब मैं बाहर आया तो कहा कि एक घंटे से बैठा हूँ। मैंने पूछा कि क्या बात है। कहा कि साढे 6 कुण्टल गन्ना है और 7 रूपये कुण्टल पिराई है, तो कितने पैसे हुए। यह पूछने के लिए वो एक घंटे से इंतज़ार कर रहा था। बाकी पर भरोसा नहीं था। उसके घर में 80 जीव हैं वह 4 भाई हैं, उनके बच्चे, फिर उनके बच्चे। कुल मिलाकर 80 जीव हैं। उनमें से किसी को भी नहीं आ रहा था हिसाब। मैंने पूछा कि बच्चे स्कूल में नहीं पढ़ते हैं क्या? कहा कि इस गाँव में स्कूल ही नहीं है। एक हेडमास्टर को पूछा तो उसने कहा कि कुछ बड़े-बड़े ज़मीदार यहाँ स्कूल नहीं बनने देना चाहते हैं। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों? कहा कि ग़रीब लोगों से वो जमीन का काम करवाते हैं। स्कूल दूर ले जाते हैं। एक बच्चा वहाँ जाता था। एक दिन सड़क क्रास करते हुए एक्सीडेंट हुआ और मर गया। अब ये किसी को नहीं भेजते हैं वहाँ। मैंने कहा कि 10-10 बीघा जमीन दो, दाम ले लो, मैं स्कूल बनवा देता हूँ। बच्चों को मुफ्त शिक्षा देंगे, मुफ्त किताबें, मुफ्त में सबकुछ करेंगे। 4 लोगों ने कहा कि हमारी थोड़ी जमीन है, आप ऐसे ही ले लें। जब बाद में महीने बाद मैं वहाँ गया तो बात फैली थी कि महाराज ने जबरन जमीन छीन ली है। मेरे बंदों ने कहा कि जमीन वापिस कर दो। अब टेकनीक कैसी थी! वो जमीदार लोग चाहते थे कि बच्चे अनपढ़ रहें। अगर पढ़ेंगे तो उनको नुक़सान होगा।

इसी तरह मन आत्मा को अनपढ़ रखना चाहता है। वो चाहता है कि यह अपने को न समझ पाए। नहीं तो मन की नहीं चलेगी। जैसे

ज़मीदारों ने स्कूल न बनने दिया, इसी तरह पाखंडियों ने बाहर उलझा दिया। जो सत्य का संदेश देने वाले थे, उन्हें मार डाला गया। किसी को ज़हर दे दिया, किसी को जिंदा जला दिया।

आत्मदेव जब भी अपने नज़दीक आने लगता है तो अन्दर के शत्रु रोक लेते हैं। वो बड़े स्टाइल से आत्मा को खींच बाहर ले जाते हैं।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे।
दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए।।

जीव काया में आकर ही तो दुखी है। अगर यह अपने में हो तो किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है—न धन की, न भाई, बंधुओं की, न किसी और की। आत्मा स्वयं आनन्द में ओतप्रोत है। उसे किसी बाहरी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। जैसे जीभ को तो खाने वाली चीज़ चाहिए। आँखों के आनन्द के लिए सुंदर दृश्य चाहिए। पर आत्मा को किसी की ज़रूरत नहीं है। ऐसा आत्मा तक कौन पहुँचने नहीं दे रहा है? किसे मज़ा आ रहा है आत्मा को दुखी रखने में?

देह धरे का दंड है, भुगतत हैं सब कोय।
ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूरख भुगतत रोय।।

मुसीबत में किसने डाला है आत्मा को? शरीर के धारण से ही संकट है। इस संकट में किसने डाला है?

जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गयी।।

यह जबसे शरीर में आई, तभी से दुखी है। इस शरीर धारण के पीछे मन का पूरा हाथ है, माया का पूरा हाथ है। बहुत बड़ी शातिर ताक़त आत्मदेव को नचा रही है। अगर सोचें कि किसी तंत्र, मंत्र से छूट जायेंगे तो यह भूल है। अगर सोचें कि तीर्थ करके कल्याण हो जायेगा तो बहुत बड़े धोखे में हो। किसी तपस्या से, किसी बाहरी साधन से यह काबू में नहीं आने वाला है। एक ही साधन बोल रहे हैं–

नाम होय तो माथ नवावे। न तो यह मन बाँध नचावे।।



काल का जीव माने नहीं

काल का जीव माने नहीं, मैं कोटिन कहूँ समुझाय।
मैं खींचत हूँ सत्लोक को, यह बाँधा यमपुर जाय।।

काल का जीव कौन है? जो-जो काल (मन) कहे, वो-वो करता जाए, वो काल का जीव है। काल के कहे अनुसार ही सब जीव काम कर रहे हैं। परम-पुरुष से बिछुड़ कर काल के बस हो, उसी के अनुसार काम करते हुए सब अनात्म भक्ति करने लगे। बुद्धि कुंद हो गयी। टोना-टोटका, भूत-प्रेत आदि की तरफ झुक गये। लेकिन जो अंकुरी जीव हैं, वो चेतन हैं। उनकी बुद्धि यथार्थ में चेतन है। वो किसी भी चीज़ को जल्दी समझते हैं। यह बुद्धि कर्मानुकूल है।

कर्मसानी बुद्धि उत्पानी।।

कर्मानुकूल बुद्धि की प्राप्ति होती है।

होय बुद्धि जब परम सयानी।
तब होय जीव कल्याणी।।

जब यह परम चेतन हो जाती है तो आत्मदेव सार, असार, हित, अनहित सब समझने में सक्षम हो जाता है। अन्यथा संसार के जीवों की बुद्धि पर तो मन का पर्दा पड़ा हुआ है। साहिब कह रहे हैं-

मैं आया संसार में, फिरा गाँव की खौर।
ऐसा बंदा न मिला, जो लीजै फटक पिछौर।।

कह रहे हैं कि ऐसा जीव नहीं मिला, जो फौरन चेतकर सच्ची भक्ति की तरफ चल पड़े। शब्दों में सार है।

ऐसा कोई न मिला, जासों कहिये रोय।
जासों कहिये भेद को, सो फिर बैरी होय।।

ऐसा कोई नहीं मिलता, जिससे भावसहित परम तत्व का ज्ञान बोलें। वो सार भक्ति जल्दी नहीं समझते। जब बुद्धि परम सयानी हो जाती है तो संसार से विरक्त होकर सच्ची भक्ति को समझती है। गोस्वामी जी भी कह रहे हैं-

भक्ति स्वतंत्र सकल गुणखानी। बिनु सत्संग न पावत प्राणी।।

यह भक्ति ज्ञमा, दया, सत्य, शील आदि गुणों का बोध देने वाली है। यह साधारण चीज नहीं है। पर इंसान अनात्म भक्तियों में क्यों लगा है? क्योंकि काल ने बुद्धि को भ्रमित कर दिया है।

सहज शून्य में कीन ठिकाना, काल निरंजन सबने माना।
ब्रह्मा विष्णु और शिव देवा, सब मिल लाग निरंजन सेवा।।

कितने रहस्य की बात बोल रहे हैं। सब निरंजन की सेवा कर रहे हैं।



खेचरि भूचरि साधै सोई। और अगोचरि उनमुनि जोई॥
उनमुनि बसै अकास के माहीं। जोगी बास करे तेहि ठाहीं॥
ये जोगी मति कहा पसारा। संत मता पुनि इन से न्यारा॥
जोगी पांचौ मुद्रा साधै। इंडा पिगला सुखमनि बाँधै॥
—तुलसी साहिब हाथरस वाले

पाँच शब्द औ पाँचों मुद्रा, सोई निश्चय माना।
आगे पूरण पुरष पुरातन, तिनकी खबर न जाना।
—कबीर साहिब जी

धन निरंजन तेरो दरबार

कैसी है दुनिया? मुझे बड़ी चिढ़ आती है। दुनिया के लोग कैसे हैं? मैं पूरी दुनिया को अव्वल दर्जे का बुद्धू मानता हूँ। बेकार मान्यताएँ हैं।

किस नाल लगाऊँ प्रीत, यह जग चालनहारा।।

कह रहे हैं–

संतो यह जग बौराया।।
साँच कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाया।।

साहिब कह रहे हैं कि यह दुनिया पागल है। हम सबकी सोच कैसी है। जन्माष्टमी के दिन टी.बी. पर एक वासुदेव बना था। उसने सिर पर टोकरी उठाई थी, जिसमें एक बालक था, जो कृष्ण दर्शाया गया था। जब वो बालक चला तो माइयाँ टूट पड़ीं दर्शन के लिए। हमारी मानसिकता तो देखें। जबकि पता है कि यह कृष्ण जी नहीं है। हम कितने भ्रमित लोग हैं। कोई लड़का हनुमान जी बनता है तो दुनिया माथा टेकती है, कहती है कि साक्षात् हनुमान जी हैं। हम भ्रम से दूर कर रहे हैं। आजकल लोग नाटक नौटंकी बहुत खेल रहे हैं। मैं बताना चाहता हूँ कि मान्यताएं कैसी हैं, कितनी गलत हैं, कितनी भ्रमयुक्त हैं। हम अपने कल्याण के लिए ऐसे पड़े हैं कि जिधर कोई दौड़ा रहा है, वहीं दौड़े जा रहे हैं। भेड़ चाल हो रही है। कृष्ण बने बच्चे को छूने के लिए कुछ माइयाँ दौड़ीं तो गिर पड़ीं। सब कह रही थीं कि छू लें तो धन्य हो जाएँ। वाह भाई, मान्यताएँ कितनी हलकी हैं, विचार से हीन हैं।

रामायण सीरियल चला। एक लड़की सीता बनी, एक लड़का राम बना, एक लक्ष्मण बना। निजी जीवन में वो अलग हैं। अब जब भी लड़की बाहर निकलती थी तो लोग पाँव पड़ने लग जाते थे। यह नहीं कि अनपढ़ लोग इस भ्रम में हैं, पढ़े लिखे भी इस भ्रम में पड़े हुए हैं। हमारा शास्त्रों से कोई झगड़ा नहीं है। मैं यह बताना चाह रहा हूँ कि हम कितने अँधश्रद्धालु हैं। मैं किसी से बात करता हूँ तो देखता हूँ कि कितने डोरे पहने हैं, कितनी अँगूठियाँ पहनी हैं। मंगल की, शनि की अँगूठियाँ पहनी होती हैं। मैं समझ जाता हूँ कि पढ़े लिखे को भी जाहिल सयानों ने अपने पीछे लगाया है। और-

साँच कहूँ तो मारन धावे, झूठे जग पतियाय।।

जगह-जगह सयानों ने डेरे डाल लिए हैं। मैं समाज को आपने दर्पन से देखता हूँ। एक मास्टर जी मेरा नामी है। उसने कहा कि एक शर्मा जी मेरे साथ टीचर थे। एक दिन उन्होंने अचानक इस्तीफा दे दिया। मैंने कहा कि यह क्या किया, 20-25 हजार की नौकरी थी। वो बोला कि आजकल मैं सतवा कर रहा हूँ, 50-100 रूपये का पाठ करने वाला लड़का रख लेता हूँ। एक दिन में 50-60 हजार रूपये मिल जाते हैं। 3-4 लाख रूपये 7 दिन में कमा लेता हूँ। तो मास्टर जी ने पूछा कि यह प्रेरणा आपको किससे मिली? उसने कहा कि मेरा चचेरा भाई आठवीं फेल है। वो सब्जी का काम करता था। वो शास्त्री बन गया। अब करोड़पति है। बड़े बड़े मिनीस्टर लोग सलाम करते हैं। पर वो चरित्र साइड से गुण्डा आदमी था। मैंने सोचा कि मैं एम.एस.सी किया हुआ हूँ और धक्के खा रहा हूँ। मैंने तब अपने आप से कहा—ओ मास्टरा, बाँध धौती, फड़ पोथी, फिर मोजा ही मोजा हैं।

आज हम अध्यात्म की भीड़ देख रहे हैं। वो महत्वाकांक्षी लोग हैं। इसमें मीडिया भी गुमराह करती है। इतिहासकार भी समाज को गुमराह करते हैं। इसका असर पड़ता है। पहले दुनिया में स्वाइन फ्लू की दहशत थी। मास्क बेचने का सिस्टम था शायद। अरबों के मास्क बिक

गये। यह मीडिया ने दहशत फैलाई। हमारा मीडिया गैरजिम्मेदार है। अगर कहा जाए कि मनमोहनसिंह जी को सींग आ गये तो मीडिया वाले लिखते हैं कि सींग आ गये। नीचे लिख देते हैं कि उड़ती खबर मिली है। यह क्या है। फिर मनमोहनसिंह जी को कहना पड़ता है कि मेरे सींग नहीं आए हैं। उन्हें दिखाना भी पड़ता है कि सींग सही में नहीं आए हैं। एक बार खबर उड़ाई गयी कि राँजड़ी वाले के पास बंदूकें मिलीं, सोने के बिस्कुट मिले, वो तिहाड़ जेल में है। लोगों के फोन आने लगे कि यह क्या है। मैंने कहा कि यह प्रचार हो रहा है। मीडिया आतंक को भी पोषित करता है। उग्रवादी ने इतनों को मार गिराया। यह खबर है छापने वाली। उन्हें हीरो बना देते हैं। क्यों कर रही है ऐसा मीडिया। क्योंकि व्यवसायिक हो गया। उन्हें खबरें चाहिए। दादा अपनी पोत्री को लेकर भाग गया। अरे, यह खबर है देने वाली। छोड़ उस गंदे दादे को। परे कर उसे।

कहीं अपनी बीमारी दूर करने के लिए लोग छपड़ी में नहाने लगते हैं और बीमारी दूर करने के बजाय लगा लेते हैं। बड़े बड़े लोग ऐसा करने लगते हैं, क्योंकि मीडिया उन्हें गुमराह करता है। हम सब ऐसे वातावरण में जी रहे हैं, जहाँ अँधश्रद्धा है। माई को नीले निशान पड़ जाते हैं तो कहते हैं कि जलबीर आ गया। मासिक धर्म की खराबी से ऐसा होता है। कैसा जलबीर है कि जम्मू के आगे नहीं जाता है। नहीं, यह भ्रमित किया जाता है। साहिब तो कह रहे हैं

ये केवल भ्रम के उत्पाती।।

साहिब को इसलिए बॉयकाट किया गया, क्योंकि पाखंडियों के हितों को नुकसान हुआ। कहा गया कि जाहिल था। आज 50 करोड़ लोग साहिब की विचारधारा पकड़े हुए हैं।

मैं किसी के खिलाफ नहीं हूँ। लोग कोई प्रोग्राम करते हैं तो पहले चंदा करते हैं। जबरन 11-11 हजार रूपये लिए जाते हैं। लुट जाने के बाद पब्लिक होश में आती है। वो माहिर लोग हैं। मैं 420 को भी सलाम

करता हूँ। वो एक बुद्धिमान आदमी है। वो अपनी अक्ल से दुनिया को घुमाता है। ठगराज नटवरराज भोपाल की जेल में बंद था। बाद में नेपाल में भेज दिया गया। उसे भोपाल की कोर्ट में पेश किया गया। जज ने कहा कि तुम्हारा वकील कहाँ है? उसने कहा कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, वकील कहाँ से करना है। जज ने कहा कि तुमपर चारसौबीसी का केस है। कहा कि क्या है चारसौबीसी। जज ने कहा कि तुमने पहले घड़ी वाले से घड़ियाँ लीं, धीरे धीरे 10 लाख की घड़ियाँ लीं। तुमने जो चेक दिये, वो बाउँस हुए। उसने कहा कि आपका भी कभी बैंक बैलेंस कम होता है तो चेक बाउँस हो जाते हैं। क्यों खाहमखाह मुझे जेल में रखा है। फिर जज ने कहा कि तुम कानपुर जेल से भाग गये थे। उसने कहा कि एक पक्षी को पिंजड़े में बंद करो तो वो भी निकलने की कोशिश करता है। मैं भी निकल गया। मैं अक्लमंद हूँ, मुझे बाहर निकालो। फिर कहा कि ठगी की है। वो बोला कि हर आदमी 10 रूपये की चीज लेकर 100 में बेचता है। यही व्यापार है। मैं एक व्यापारी हूँ।

वो बड़ा जोरदार है। किसी केस में दिल्ली ले जाना था। 4-5 महीने पहले उसने नाटक किया, कहा कि मेरी टाँगें काम नहीं कर रही हैं। उसे व्हील चेयर पर बिठा दिया गया। उसे ट्रेन द्वारा वहाँ ले जाना था। एक इंस्पेक्टर और दो सिपाही उसके साथ थे। स्टेशन पर इंस्पेक्टर ने कहा कि मैं रोटी खाकर आता हूँ, तुम इसका ध्यान रखना। फिर व्हील चेयर पर था। क्या कर सकता था। थोड़ी देर में एक सिपाही सिगरेट लेने चला गया। अब एक सिपाही रह गया। नटवरलाल ने उससे कहा कि बड़ी गर्मी है, ऐसा करो कि ठंडा लाओ, तुम भी पीयो, मैं भी पीता हूँ। वो ठंडा लेने चला गया। वापिस आया था व्हील चेयर खाली थी, नटवरलाल गुम था। देखा न, कितना बुद्धिमान था। उसने कितना लंबा इंतजार किया।

...तो मैंने कहा कि भ्रमित करने वाली टीमें समाज को गुमराह कर रही हैं, सावधान रहें। बीरपुर में एक सयाना मुझे पचास गालियाँ बकता था। दुनिया को बुद्धू बना रहा था। कहीं से सयाने का एक लड़का मेरे किसी नामी के सम्पर्क में आया और लड़के ने नाम ले लिया। थोड़े

दिन में वो माँ को, बहनों को भी लाया। लड़के के बाप से कहा कि आप भी नाम ले लो, साहिब की भक्ति बड़ी ऊँची है। सयाने ने कहा कि मैं तेरे साहिब को जानता हूँ। वो जो कह रहे हैं, सही है। लड़का चौक गया, कहा कि फिर इतनी गालियाँ। यह सब क्या है। कहा कि मैंने इसी काम से सारे परिवार का पालन पौषण किया है। राँजड़ी वाले की वजह से मेरे ग्राहक कम हो गये तो मैंने सोचा कि बाकी लोग न जाएँ। सयाने को हार्ट अटैक हो गया। फिर उसने भी नाम ले लिया।

इस तरह ठगी उनकी मजबूरी है। सीधा कहो कि बाकी काम नहीं आता है। नाटक ही तो है। हत्या में 99 प्रतिशत फ्राड होता है। माई बीमार हो गयी तो कहते हैं कि सास आ गयी।

एक था बूढ़ा। पलांवाला का था। ठकुरा कहीं चला गया। लोगों ने उड़ाया कि उसने खुदखुशी कर ली है। थोड़ी देर बाद उसकी जनानी बीमार हो गयी। सयाने ने कहा कि बूढ़ा आ गया है, देवतों का स्थान बनाओ। 40 साल हो गये। वो वहाँ ढ़ोल पीटने लगे और लोगों का जमघट जुटने लगा। एक दिन उसी ठकुरे के भतीजे की पोस्टिंग डोडा में हो गयी। उसने उसे एक मंदिर में देखा तो सोचा कि इसकी शक्ल तो बापू से मिल रही है। धीरे धीरे पूछा कि कहाँ के रहने वाले हो। लड़के ने भेद लिया। उसने वापिस आकर ताऊ आदि सबको बताया। वो गये और उसे पकड़कर ले आए। जब आ गये तो बंदे ने देखा कि हत्या मना रहे हैं। उसने पूछा कि कौन मर गया। जब लोगों ने बताया तो उसने बीबी को कहा कि मैं जिंदा हूँ, कौन सी हत्या आ गयी है तेरे में। उसने सयानों को भी पकड़ा, कहा कि क्या पाखंड है। मैं यहाँ पर जिंदा हूँ और आप मेरी 40 साल से हत्या मना रहे हो। देखा न, कैसा प्रूफ मिल गया।

एक बंदा 15 साल से कोर्ट के चक्कर काटता रहा यह प्रूफ करने के लिए कि मैं जिंदा हूँ। उसके भाई ने उसका डेथ सर्टिफिकेट भी तैयार करवा लिया था और सरपंच के साइन भी ले लिए थे और उसकी जमीन हड़प गया था। अब वो यह प्रूफ नहीं कर पा रहा था कि वो जिंदा है। तो मरे हुए का क्या प्रूफ देना है।

धन निरंजन तेरो दरबार, जहाँ तनिक न न्याय विचार।।

हम यथार्थ से बहुत दूर हैं। इस कमजोरी को पाखंडी तबका जानता है। कोई कड़ा पहनाकर संतान दिलाने की बात करता है। पब्लिक जुट जाती है। तमाम हुजूम इकट्ठा होता है। अब सारी माताएँ संतान उत्पन्न करने योग्य नहीं होती हैं। कुछ पुरुष भी नहीं होते। थोड़ी भी गड़बड़ हो जाती है तो संतान उत्पत्ति के चांस कम हो जाते हैं। कुछ माताएँ ऐसी हैं कि हर साल बच्चे को जन्म दे सकती हैं। कुछ 1-2 को ही जन्म दे सकती हैं। कुछ में ताकत नहीं होती है। तो ऐसी माताएँ चेले सयानों के चक्कर में आ जाती हैं। आप हमारे प्रवचनों को सुनें। हम आगाह कर रहे हैं कि बचो। वो भी हमारे शत्रु नहीं हैं। हमारी सोच बड़ी पाजीटिव है। मैं सोचता हूँ कि जीवन का आधार ही यही चुना है उन्होंने। उनके जीवन का साधन ही यही बन चुका है।

एक चोर मेरा नामी था। बड़ा दानी भी था। 420 था। उसकी खूबी थी कि गरीबों की मदद करता था। वो बड़ा भावुक था। चोरी करके आता था तो कर्जा चुकाता था। वो आता जाता भी आटो में था। चाय पीता था तो कइयों को साथ में पिलाता था। एक दिन उसने मुझे 100 रूपये दिये। तब मेरी तनखाह 50 रूपये थी। उसने कहा कि रास्ते में फल खाना। मैं चुप रहा। मैंने कुछ नहीं कहा। उसने फिर हामी भरवाने के लिए पूछा कि खाओगे न। मैंने कहा—नहीं। उसने पूछा कि क्यों? मैंने कहा कि तुम्हारा पैसा हक का नहीं है। वो बड़ा हताश हो गया, कहा—अफसोस। आप जैसे ज्ञानी पुरुष ऐसा कह रहे हैं। मेरा पैसा आपसे भी ज्यादा हक का है। किसान से भी हक का है। मैं कहा कि कैसे? कहा कि जान हथेली पर लेकर किसी के घर चोरी करने जाते हैं। कभी पकड़े गये तो पब्लिक से मार भी पिटती है, पुलिस के हवाले कर दिया जाता है। बड़ा रिस्की काम है। कभी कभी 2-3 मंजिल से छलाँग लगानी पड़ती है, बड़ा भागना पड़ता है। इतना हक का पैसा है। उसका यह तर्क था। मैंने कहा कि एक बात बताओ, चोरी गलत काम है। इंसान बचा हुआ पैसा रखता है। कहीं बेटी की शादी के लिए बचाकर रखता है, कहीं बच्चों को ट्रेनिंग करवानी

होती है। तू उसकी गठरी उठा लाया। उसे कितना दुख पहुँचा होगा। आपने कभी सोचा कि वेश्या का जीवन कितना कठिन है। स्त्री अपना शरीर दूसरे के हवाले नहीं करना चाहती है। कितनी मजबूरी होगी उसे।

तो मैंने उसे कहा कि कोई काम करो। वो बोला कि कुछ काम नहीं आता है। शुरू से ही यही किया है।

वो कहीं से चुराकर इधर उधर बाँट देता था। अमीरों का पैसा लूटकर गरीबों की मदद करता था। बड़ा परमार्थी था। मैंने कहा कि चोरी छोड़ दो। कहा कि कुछ नहीं आता है। मैंने कहा कि वादा करो, छोड़ो। कहा कि ठीक है। वो फिर लकड़ी के टाल पर लकड़ी फाड़ने लगा। बड़ा तगड़ा था। उसके हाथ में छाले पड़ गये। एक दिन मुझसे कहा कि बड़ी दिक्कत आती है। मैंने कहा कि थोड़ी देर दिक्कत आयेगी, फिर ठीक हो जायेगा। वो ड्रग्स भी लेता था। वो अस्वस्थ हो गया। मुझे कहता था कि थोड़े दिन छुट्टी दे दो, चोरी करने दो। मैंने कहा कि नहीं करनी है, मैं मदद करूँगा। मैंने उसे मकान खरीदकर दिया। वो बोला कि आप मेरे खर्चे बर्दाश्त नहीं कर पाओगे। मैंने कहा कि तुम आश्रम की रखवाली करना। उसने कभी आश्रम में चोरी नहीं होने दी। मैंने उसके बच्चे को पढ़ाया। वो खुद बीमार हो गया। फिर कहा कि मैं आपको भी परेशान कर रहा हूँ। मुझे छोड़ दो। मैंने उसे नहीं जाने दिया। सही में उसे एक महात्मा की तरह बना दिया। वो था ही अच्छा।

बसे कुसंग चाहत कुशल, कहत रहीम बड़सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसेयो पड़ोस।।

एक दिन मैंने पूछा कि क्या इच्छा है? कहा कि कोई फिक्र नहीं है। बस, बेटा है। मैंने कहा कि मैं देख लूँगा। मैंने उसे पढ़ाया, उसका व्याह करवाया। वो बड़ा प्यारा निकला। क्योंकि उसका बाप था ही अच्छा।



तू मैं नू मार मुका बंदेया

धर्मदास जी प्रश्न कर रहे हैं, बड़ा सुन्दर।

धर्मदास विनवे कर जोरी। साहिब कहिये मुक्ति की डोरी।।

कह रहे हैं कि कृपा करके मुझे मोक्ष की डोरी बताओ। कैसे मैं मुक्त होऊँ। जिससे मैं मुक्त हो सकूँ, वही उपाय बताओ।

यह आत्मा कोई रस्सी या जंजीरों से नहीं बँधी है। आत्मा को जिस जाल में फँसाया गया है, वो जाल है मन का, वो जाल है माया का। कोई जंजीरों का जाल नहीं है, कोई संगलें नहीं हैं। विचार करें कि माया का कितना कठिन सिस्टम है। बड़ा अद्‌भुत सिस्टम है। आप जानते हैं कि संसार स्वप्न है, पर फिर भी सब सत्य मान रहे हैं। यह जानते हुए भी आत्मा हैं, सब शारीरिक जीवन ही जिए जा रहे हैं। इसका मतलब है कि बड़ा तगड़ा जाल है।

यह आत्मा किसमें फँसी है। लहरसिंह में अटकी है। जो महसूस कर रहे हो कि लहरसिंह हूँ, इसमें फँसी है। इसलिए कह रहे हैं

यह पिंजड़ा नहीं तेरा हंसा, यह पिंजड़ा नहीं तेरा।।

जब भी किसी को देख रहे हैं, आत्मा का दर्शन नहीं हो रहा है। पहला दिख रहा है व्यक्ति। क्या है व्यक्ति? जिस व्यक्ति को आप पहचान रहे हैं, वो तो आत्मा नहीं है। कहीं दूर से भी लक्षण मेल नहीं खा रहे हैं। सब माता के गर्भ से आ रहे हैं। मैथुन सृष्टि है।

हमारा शरीर कैसे बना है? आप देखते हैं कि पेड़ पर फल लगता है। उसके अन्दर बीज है। जैसे सेब टहनी से जुड़ा था। इसी तरह माँ की नाभि की नाड़ी से बालक जुड़ा था। इसी तरह माँ के रक्त से बालक पोषित हुआ। आँखें इसी से बनीं, नाक इसी से बनी, कान इसी से बने।

मेरी उँगली पर चोट लगी। टाँके लगे। फिर चोट पर चोट लगी। ऊपर की मोटी परत छिल गयी। उसे आने में एक महीना लगा। अब वहीं पर मोटी परत आई। क्यों? वहीं पर क्यों आई। क्योंकि वहाँ की कोशिकाओं ने अपनी ताकत से उस परत का सृजन किया। गूदे ने ही सेब के छिलके को बनाया। उसने अपनी सुरक्षा के लिए छिलके का सृजन किया। कब किया? जब मेचुअर हुआ। हम भी ऐसे ही हैं।

तो यह सब मैथुन सृष्टि है। आपने इस पर गहराई से नहीं सोचा होगा। उसी माँ के रक्त से नाखून बने, हमारा हाथ बना, भँवें बनी, हमारी उँगलियाँ बनीं। वो एक ही रक्त था। जब मेरी उँगली को डॉ० स्टिच कर रहा था तो बड़ा खून निकला। वो कह रहा था कि इधर न देखो। मैंने कहा कि सिलाई करो। बाद में उसने कहा कि आपका बड़ा पेशेंस है। मैंने कहा कि डॉ० साहब, यह पूरा शरीर ही तो खून है। कभी थोड़ा सा खून निकलता है तो कहते हैं कि हाय, मेरा खून चला गया।

...तो शरीर आत्मा नहीं है। कोई भी स्वभाव आत्मा से आत्मसात् नहीं हो रहा है। इसलिए शरीर के किसी भी अंग को आत्मा नहीं कह सकते हैं। किसी भी तरफ से आत्मा से मेल नहीं है। क्योंकि आत्मा को अविनाशी कहा गया। यह शरीर अविनाशी नहीं है। सीधी सी बात हुई कि यह शरीर आत्मा नहीं है। फिर क्या है? इसके बाद आपके पास और क्या चीज है?

कोई किसी को पहचानता है कि यह हमारा दोस्त है। उसके लिए कहता है कि यह बड़ा अच्छा है। मेरा दृष्टिकोण ऐसा नहीं है। मेरा दृष्टिकोण इससे अलग है। आप किसी भी आदमी को अच्छा या बुरा किसी आधार पर कहते हैं। आपका मूल्यांकण कैसा है? साहिब एक शब्द कह रहे हैं–

बुरा जो देखन मैं गया, बुरा न मिल्या कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।

मैं यह मानता हूँ। क्या यह मेरी नकारात्मक सोच है। मैं मानता हूँ कि कोई भी आदमी अच्छा नहीं है। महापुरुष अच्छे हैं। वो क्यों अच्छे हैं? समझें।

इंसान बड़ा गंदा है। जिस्म के बाद एक और चीज़ दिखती है—व्यक्तित्व। पंडित जी को केवल नाक-नक्शे के अनुसार नहीं जाना जाता है। व्यवहार आदि से भी जाना जाता है।

अब सवाल उठा कि आदमी अच्छा या बुरा क्यों होता है? मेरे सवाल बड़े साधारण लगते हैं, पर जवाब देने में पसीना छूट जाता है।

व्यक्तित्व आत्मा है क्या? इसमें मन, बुद्धि, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि है। ये चीज़ें अच्छी नहीं हैं। जैसे हम सबमें दिल है, नाखून भी हैं, चमड़ी भी है। ये हम सबमें हैं। इस तरह हरेक में काम, क्रोध आदि है। इनमें से कोई भी चीज अच्छी नहीं है।

जो महसूस कर रहे हैं कि लहरसिंह हूँ, यह बहुत बड़ा झंझट है। इसका नाम है—व्यक्तित्व। आदमी अपने आप को किस तरह जानता है? कुछ न कुछ तो अपने को जानता है। अपने को विचार से जानता है कि मेरे ऐसे विचार हैं। नास्तिक विचार हैं या आस्तिक विचार हैं। फिर कर्म से जानता है कि मैं फलाने-फलाने काम करता हूँ। संकल्प से जानता है कि ऐसी-ऐसी मेरी सोच है। इतने आधार पर अपने को जानते हैं। अब सवाल उठा कि सोच क्या है? विचार क्या है? यह तो आत्मा नहीं है। हम अपना मूल्यांकण इसी आधार पर कर रहे हैं। मान लो कि आपने एक सेब उठाया। आप अंदाजा लगाते हैं कि 200 ग्राम का है। यह कैसे हुआ? आपने पहले भी कभी 200 ग्राम की चीज उठाई थी। आपकी याददाश्त ने बताया कि इतना वजन लग रहा है।

इसका मतलब है कि आपका अपना परिचय झूठा है। आप तो अपने को इसी तरह जानते हैं कि बचपन में ऐसा था, वैसा था। यह आप नहीं थे। जो कर्म किये, वो भी आप नहीं थे। उन कर्मों का बेस आत्मा नहीं थी। आत्मा मन, बुद्धि से परे है। जो आप अपने को अनुभव कर रहे हैं, वो नहीं है। किसी को सब्जी खिलाते हैं, फिर पूछते हैं कि क्या है इसमें? वो चबाकर कहता है कि गोभी है। आप पूछते हैं कि और क्या है? वो कहता है कि टमाटर भी है। आप फिर पूछते हैं कि और क्या है। फिर वो गहराई में बताता है कि इसमें मिर्च भी है, नमक भी है। अब

लहरसिंह क्या है? गुरु नानक देव जी कह रहे हैं–

तू मैं नू मार मुका बंदेया।।

साहिब कह रहे हैं–

माया मरी न मन मरा, मर मर गया शरीर।
आशा तृष्णा न मुई, कह गये साहिब कबीर।।

देखते हैं कि इसमें क्या है। इसमें एक याददाश्त है। इससे पता चलता है कि यह फलाना है, वो मेरी बीबी है, मेरे इतने बच्चे हैं। इसमें एक दिमाग़ भी है जो सोच विचार कर रहा है। ये आत्मा नहीं है। इसका मतलब है कि लहरसिंह खूँखार है। जो अपने को नहीं जान पा रहा है, वो इसी अनुभूति के कारण कि लहरसिंह हूँ। जो अनुभव कर रहा है कि मैं हूँ, यह धोखा है। यह तो एक भ्रम है। इसका मतलब यह है कि जो अनुभूति कर रहे हैं, यह बहुत बड़ा वहम है। पूरा काम ही इसका चलता है। पूरा खंगालोगे तो यह पूरा मन ही है। तभी तो साहिब कह रहे हैं–

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी।।

यह है अध्यात्म। यह नहीं कि सुदामा जी कृष्ण जी के पास पहुँचे। ये तो किस्से कहानियाँ हैं, जो बीत चुका है।

...तो यह व्यक्तित्व धोखा है। इसी लहरसिंह की बीबी है, इसी के खेत हैं, इसी के दोस्त और इसी के दुश्मन हैं। इसी लहरसिंह का बेटा है। यह लहरसिंह बड़ा बवाल है। यह मैं है।

यही रूह को नहीं देखने दे रहा है। लहरसिंह नहीं देखने दे रहा है। इस व्यक्तित्व के अन्दर आत्मा छिपी है। बड़ा तगड़ा उलझाया है। इसलिए—

तू मैं नू मार मुका बंदेया।।



अन्दर सफा बाहर सफा

यह जग रैन बसेरा।।

यह दुनिया सब में रैन बसेरा है। कोई 60 साल का है, कोई 70 साल का है, कोई छोटा है। बड़ों से पूछना कि जिंदगी कैसे कटी। पता भी नहीं चला होगा। पर छोटे इस उम्मीद में हैं कि अभी दुनिया देखनी है। यह पानी के बुलबुले की तरह जिंदगी है। हम सब जिस दुनिया में जी रहे हैं, सब में वो दुनिया स्वप्न रूप है। आप विचार करें। आपने बहुत शरीर धारण किये। यह रैन बसेरा ही तो हुआ न।

एक समय अखनूर में सफाई अभियान चलाया। सरकंडों को आग लगानी थी। मैंने एक जगह के लिए कहा कि वहाँ आग लगाओ और सभी वहाँ पर फेंको। वो जगह जगह आग लगा रहे थे। जब तक मैं खड़ा रहा, वो वहीं पर फेंकते रहे, पर जैसे ही मैं गया, उन्होंने दूसरे ढेर पर आग लगा दी। मैंने ऐसा इसलिए कहा था कि अन्य पेड़ों को नुकसान न पहुँचे और नीचे जीव जंतु भी हो सकते हैं, उन्हें भी नुकसान न पहुँचे। मैं फिर वहाँ आया तो दूसरी जगह आग लगी थी। लपटें निकल रही थीं। इतने में चिड़ी-चिड़ा वहाँ आए और उस तरफ देख रहे थे। संभवत: उनके बच्चे वहाँ थे। वो वहाँ नीचे नहीं जा पा रहे थे। मैंने पूछा कि आग किसने लगाई तो कोई नहीं बोला।

देखा न, वो अपने बच्चों से कितना प्रेम कर रहे थे। आप मत सोचना कि आप ही अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। यह आत्मा जिस भी शरीर में जाती है, उसे ही नित्य मानती है, उस देही से ही प्रेम करती है

और वहाँ भी अपने सगे संबंधियों से प्रेम करती है। जहरीले जीवों को देखो। वो धरती पर पेट के बल रेंगते हैं। हम सोचते हैं कि ये तंग हैं। आप उन्हें मारने जाओ तो वो बचते हैं। आप अपना दृष्टिकोण ऊँचा रखो न। सही में आत्मतत्व बाकायदा नजर आयेगा। यह 84 का सफर आप क्यों भूल रहे हैं? आखिर इंसान क्यों भूलता है? इसका व्यक्तित्व इस तरह बनाया है माया ने।

छोटा-सा जीवन है। फिर ऊपर से इंसान अपने ऊपर कई बोझे लादे हुए है। इंसान तानाशाह भी है। आप अपने अन्दर झांकें कि कहीं आप भी तानाशाह तो नहीं। कभी धन के कारण से, कभी रुतबे के कारण से, कभी ज्ञान के कारण से दबाता है। मैं सफर में भी देखता हूँ कि जो हट्टा कट्टा है, वो दुबले को बड़ी तड़ी दिखाता है। कभी गरीब को पैसे का रोब दिखाते हैं। कभी हम अपने ज्ञान से किसी को दबाते हैं। यह सब हिंसा है। इसका मतलब है कि ऐसे लोग आत्मा को किसी भी तरह से समझ नहीं रहे हैं। ऐसा नहीं करना है। जब इंसान साज़िश करके किसी को छोटा करने की कोशिश करता है तो यह अपराध है। इतना घृणित काम आत्मा कर रही है। पहले कोई कुछ कहता था तो मैं सच मान लेता था। मेरी धारणा थी कि गुरु से शिष्य झूठ नहीं बोलेगा। मैं नाराज हो जाता था। अभी मैं ऐसा नहीं करता हूँ। जब भी इंसान ऐसी सोच रखता है तो आत्मा से दूर रहता है। मेरी बात पर चिंतन करना। आप किसी से कैसा व्यवहार चाहते हैं? आप चाहते हैं कि आपको कोई मारे नहीं। तो फिर आप भी किसी को नहीं मारना। आप चाहते हैं कि कोई आपको गाली न दे। फिर आप भी किसी को गाली मत देना। आप चाहते हैं कि कोई आपसे बदतमीजी से बात नहीं करे। फिर आप भी किसी से बदतमीजी से बात नहीं करना। आप यह सोचना कि दुनिया से एक दिन जाना है। साहिब का शब्द है-

जगत चबेना काल का, कुछ मुट्ठी कुछ गोद।।

आप किसी को भी किसी भी तरह से दुख मत दो। हमारी रैली निकलती है तो मैं हिदायत देता हूँ कि कोई भी दादागिरी नहीं दिखायेगा। एक बार एक लड़का डंडा लेकर गाड़ियों को रोक रहा था। मैंने कहा कि यह तुम्हारी सिरदर्दी है कि रैली निकाल रहे हो। यह उसकी सिरदर्दी नहीं है। उसने अपने काम से जाना है। तुम उसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करो।

हमें सबसे पहले शिष्ट होना होगा। हमें ध्यान रखना होगा कि कहीं हम अपने व्यवहार से किसी को दुख तो नहीं दे रहे हैं। हम सब मिथ्यावादी हैं। हम सब बदतमीज हैं। हम भेड़ चाल से जीते हैं। हम सब बहुत गंदे लोग हैं। हमारा जीने का तरीका बहुत गंदा है।

मेरा एक नामी कनाडा, अमेरिका आदि में भी आता जाता है। मैंने उससे पूछा कि वहाँ कैसा है? वो बोला कि वहाँ सभी मुस्तैद हैं। अगर कुत्ते को घुमाने ले जाते हैं तो साथ में प्लास्टिक के थैले भी ले जाते हैं। अगर कुत्ता पेशाब करने लगे तो उसमें करवाते हैं। सड़क पर गंदगी नहीं होने देते हैं।

अब दूसरी ओर अपने को देख लो। स्टेशनों पर भी गंदगी फेंक देते हैं। कहीं केले के छिलके फेंक देते हैं। यात्री आता है, पाँव भी कभी पड़ जाता है। कई बार इस कारण से एक्सीडेंट भी हो जाता है। हम गंदे हुए कि नहीं। हमारे यहाँ बहुत जल्दी दूसरे का दिल दुखाते हैं। हम सबकी जीवन शैली बहुत ख़राब है। हम सब मिथ्यावादी हैं।

एक आदमी कनाडा से नाम लेने आया। उसने पहले भी कई गुरुओं से दीक्षा ली थी। उसे हमारी बात अच्छी लगी तो नाम लेने आया। बाद में नाम लिये बिना ही जाने लगा तो डी.सी. साहब ने पूछा कि क्या बात है? क्या हमारे गुरुजी अच्छे नहीं लगे। वो बोला कि आपके गुरु जी तो बहुत अच्छे हैं और उनकी बातें भी बहुत अच्छी हैं, पर आपके लोग अच्छे नहीं लगे। इनको खाने की तमीज नहीं है, उठने बैठने की तमीज नहीं है। हमें तो इन्हीं के साथ उठना बैठना है न।

कोई भी घर कब अच्छा है? जब सभी लोगों का आचरण अच्छा है, जब सभी का खानपान अच्छा है, सबकी बातचीत अच्छी है। मैं

सामाजिकता भी सिखा रहा हूँ।

तो हम वाहियात लोग हैं, हम बदतमीज लोग हैं, हम लालची लोग हैं। हम संतुष्ट नहीं हैं। जीवन बसर का साधन भी है तो भी दूसरों को तंग कर रहे हैं। सुधार करना होगा।

पहले अच्छे इंसान बनो। हम गैरजिम्मेदार लोग हैं। वो बोला कि आप सड़क पर थूक नहीं फेंक सकते हैं, सिगरेट नहीं फेंक सकते हैं। वहाँ अनुशासित चलाते हैं।

हमेशा सावधान रहें। किसी से भी बदतमीजी से बात न करें। यह कर्त्तव्य बनता है। हम अभद्र हैं, हम अशिष्ट हैं, हम लोग ढीठ हैं।

एक नील गाय ली। मैंने उसे खाना दिया, दूध पिलाया। मैं जहाँ जहाँ जा रहा था, वो भी पीछे पीछे आ रही थी। वो समझ गयी कि यह आदमी मेरा ख्याल रख रहा है। एक पशु भी समझता है। हम क्यों नहीं समझ रहे। हमारा कुछ भी ठीक नहीं है। जो भी एकाग्र है, वो भूल नहीं करेगा। मुझे अपने जीवन का लेखा जोखा मालूम है। मैंने किसी को भी अपनी तरफ से तंग नहीं किया। आप जैसे हैं, वैसे रहें। जहाँ भूल हो, वहीं स्वीकार कर लो। जहाँ चालाकी हो, वहीं मंजूर करनी है। एक महात्मा ने बड़ा प्यारा शब्द कहा। कहा कि केवल अत्याचार का प्रतिकार करना बहादुरी नहीं है। अगर दूसरे पर जुल्म हो रहा हो, उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाना भी कायरता है।

अगर किसी को तगड़ा आदमी मार रहा है। आप देख रहे हो तो आप भी अपराधी हो। तुम उससे पूछो कि ऐसा क्यों कर रहे हो? जब सब सजग हो जायेंगे तो अपराध नहीं हो पायेगा।

फिर वो बोला कि वहाँ हरेक आदमी अपनी जिंदगी की रिसर्च करता है। हम गैरजिम्मेदार हैं। मन की शुद्धि क्या है? पहली बात तो यह है कि यह किसी तरह से शुद्ध नहीं होने वाला।

मन ही आहे काल कराला। जीव नचाये करे बेहाला।।

मन के स्थूल और सूक्ष्म दो रूप हैं। स्थूल में इंद्रियाँ ही मन है। खाने की अच्छी चीज देखी तो जीभ लार टपका देती है। शरीर की

संरचना ही ऐसी है। फिर अन्दर में काम, क्रोध आदि के रूप में सूक्ष्म रूप में बैठा है। मन की शुद्धि क्या है? मन की शुद्धि कैसे करें? सूत्र क्या है? मन की शुद्धि है, जब भी यह कोई नकारात्मक चीज कर रहा हो, न करने दो। मन की शुद्धि है—नियंत्रण। काफी अच्छे लोग भी हैं, वो भूलें कर लेते हैं। पर वो किसी हद तक नियंत्रण कर रहे हैं। पर मन शुद्ध हो ही नहीं सकता है।

सो मन साबुन से कोयला धोयेंगे तो साफ नहीं हो सकता है। पर कोई कहे कि साफ किया तो मान लूँगा। लेकिन यदि कहे कि मन शुद्ध किया तो नहीं मानूँगा।

कम-से-कम मूल रूप से तो अपने को ठीक करना होगा कि गाली न बकें, गंदी हरकतें न करें। यह तो मूल सफाई है, जो होनी चाहिए। आप देख रहे हैं कि दुनिया में अच्छे लोग भी हैं।

आप अपने घर में झाड़ू लगाते हैं। टायलेट साफ करते हैं। रोज साफ करते हैं। पर फिर भी महीने में एक बार नाली भी साफ करते हैं। वो अलग से करते हैं, क्योंकि वो एक खास सफाई है। इसी तरह हम एक आम सफाई अंत:करण की कर रहे हैं। पर हृदय के विकारों की गंदगी को साफ नहीं कर रहे हैं। हमें उसपर अपना ध्यान देना होगा। हमें देखना होगा। हम कम से कम हृदय की मौलिक सफाई करें। हम मन, वचन, कर्म से किसी को दुख न दें। यह हुई मानवता कि आचरण शुद्ध हो, बातचीत शुद्ध हो।

पर आध्यात्मिकता यह है कि हृदय के अन्दर के सूक्ष्म विकारों को भी नियंत्रण करें।

हम सबकी जीवन शैली पाश्विक है, मानवीय नहीं है। हमें सबसे पहले शिष्टता सीखनी होगी। हम पड़ौसी के घर के सामने गंदगी न फेंके, टी.बी. जोर से न लगाएँ आदि बातों का ध्यान रखना होगा। कभी आश्रम में भी जोर से डेक लगाते हैं। सुबह सुबह उठकर लगा देते हैं। मैं कहता हूँ कि इतनी जोर से क्यों लगाया है। कोई आपके साहिब के भजन नहीं सुनना चाहता है, तुम क्यों जबरन सुना रहे हो। आप चाहे

अनचाहे किसी को परेशान मत करो। मैंने हिदायत दी है कि सुबह जब सूर्य की किरणें आ जाएँ तब 15 मिनट के लिए, केवल 15 मिनट तक भजन लगाओ और वो भी ज्यादा ऊँची आवाज़ में नहीं।

आप किसी भी तरह से किसी को दुख न दें। यह हुई मानवता। रूहानियत क्या है?

एकै साधे सब सधे, सब साधे एक जाय।।

हमें बाहर और भीतर दोनों में सफाई करनी होगी। अन्दर से शुद्धि है, पर बाहर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं तो कैसा है। वो भी ठीक नहीं है। अगर अन्दर से बगुले हो और बाहर सुंदर दिख रहे हो तो कैसा है। दोनों ही स्थितियाँ ठीक नहीं हैं।

आप मन, वचन, कर्म से किसी को दुख न दो। दया से बड़ी उपासना नहीं है। हम किसी को भी मारने की कोशिश करते हैं तो वो बचने की कोशिश करता है। मैं साँप को भी नहीं मार रहा हूँ। मैं मच्छर को भी नहीं मारता हूँ। हमें बड़े तरीके से धरती पर जीना है। साहिब ने कहा–

वैष्णव धर्म जैनी दया मुसलमान इकतार।
जब ये तीनों भये, तब पाये मेरो दीदार।।

दया जैनियों की तरह हो, धर्म वैष्णव की तरह हो कि किसी को नहीं मारना है, मुसलमान की तरह एक परमात्मा की भक्ति हो। जब तीनों चीजें होंगी तब मेरे दर्शन पायेगा।

हमारे पंथ में ये तीनों हैं। वास्तव में हम शुद्ध वैष्णव हैं। हम किसी का जूठा नहीं खा रहे हैं। इतना कोई गुरु जी नहीं बता रहा है। मैं आपको नेक इंसान बनाकर शुद्ध अध्यात्म की तरफ ले चल रहा हूँ।



यह चरित्र एको नहीं जाना

कबीर का गाया गायेगा, तीन लोक में मार खायेगा।
कबीर का गाया बूझेगा, तो अन्तरगत को सूझेगा।।

हम देखते हैं कि आखिर साहिब ने दुनिया को क्या चीज दी? क्या है साहिब की विचारधारा। सबसे पहली बात है कि साहिब ने सगुण-निर्गुण की सीमा को बोला। ऐसा नहीं है कि साहिब खंडनवादी थे। वो यथार्थवादी थे। लोगों ने अपने हितों की पूर्ति के लिए साहिब की गलत तस्वीर पेश की है। इसकी वजह थी कि साहिब ने कुरीतियों पर प्रहार किया। वो झिझके नहीं, डरे नहीं। उन्होंने कुरीतियों पर बड़ा साफ और पैना बोला। काफी पैना बोला। कुछ ने साहिब की तस्वीर गलत रखकर लोगों को गुमराह किया कि शादीशुदा था, कमाल उनका बेटा था, कमाली बेटी थी, लोई नामक स्त्री थी। सच इससे दूर है। साहिब वाणी में कह रहे हैं-

संतो अविगत से चला आया, कोई भेद मर्म न पाया।
न हम रहले गर्भवास में, बालक होई दिखलाया।
काशी तट सरोवर ऊपर, तहाँ जुलाहा पाया।
न हमरे मात पिता हैं, न घर गिरही दासी।
काशी में हम प्रगट भये, जग में हो गयी हाँसी।
आने तकिया अंग हमारी, अजर अमर पुर डेरा।
हुकुम हैसियत से चले आये, काटन यम का फेरा।।

साहिब ने अपने शब्दों में गवाही दी। और इसे जाते समय

प्रत्यक्षीभूत किया। जब मागसुदी एकादशके दिन जाना था तो लोगों को सूचना दी कि मगहर में शरीर छोड़ूँगा। उन्होंने लाखों लोगों के सामने शरीर छोड़ा। उनका पार्थिव शरीर न मिला। इतिहास उठाकर देखें तो एक ही वृत्तांत मिलता है। फूल पर आए और फूल ही छोड़ गये।

हम देखते हैं कि साहिब का स्वरूप सामाजिक और भक्तिक्षेत्र में क्या है?

यह कबीर भव भटका खाय। वो कबीर भव पार लगाय।।

यह कैसी बात है? सबसे पहली बात हम देखते हैं कि साहिब ने समाज को कैसी भक्ति बोली? साहिब ने सगुण निर्गुण से ऊपर की भक्ति कही। क्या चार मुक्तियों का खंडन किया? क्या 3 लोकों का खंडन किया? क्या गुरुत्व का, नाम सुमिरन का खंडन किया? ऐसा नहीं था। कतई ऐसा न था। साहिब ने सबकी सीमाएँ बोलीं। 4 मुक्तियों के लिए कहा कि निरंजन के अधीन हैं। इनमें फिर पुनर्जन्म होता है।

ये 4 मुक्तियाँ भी कैदखाना है। आप देखते हैं कि शेर को पिंजड़े में कैद करते हैं। पिंजड़े में रहने वाला शेर काफी परेशान है। आप किसी आदमी को कमरे में कैद करते कितनी भी सुविधाएँ दो, वो परेशान रहेगा। किसी भी जानवर को पिंजड़े में बंद करना दोष है। यह उसकी स्वतंत्रता का हनन है। इसी तरह यह संसार एक पिंजड़े की तरह है, जिसमें सभी कैद हैं।

फिर छोटे-छोटे अरण्य हैं, जंगल हैं। कुछ 1020 कि. मी. के दायरे वाले भी हैं। उनमें भी जानवर रहते हैं। वो भी कैद में हैं। उनमें यह अन्तर है कि वो 10-15 कि. मी. तक स्वतंत्र है। उसमें आगे जाने की बंदिश है। उसमें जानवर रह रहे हैं। हम उन्हें आजाद नहीं कह सकते हैं। फिर विशाल जंगल है। जैसे राष्ट्रीय अरण्य। बांदा में है। वो विशाल जंगल है। 300-400 कि. मी. के दायरे में है। और वो भी आगे दीवार से बंद किया है। जानवर सोचता है कि स्वतंत्र हूँ। लेकिन वो भी एक

दायरे में है। उसे आजाद नहीं कह सकते हैं। इस तरह 4 मुक्तियों के लिए कहा कि आजादी नहीं है। जो राष्ट्रीय अरण्य हैं, वो बड़े विशाल हैं, लेकिन उनमें रहने वाले भी बंधन में हैं। वो भी एक परिधि में हैं। वो उससे बाहर नहीं जा सकते हैं। वो भी कैद ही हैं। इसी तरह 4 मुक्तियों को प्राप्त करने वाले भी निरंजन की कैद में ही रहते हैं।

साहिब परा विज्ञानी थे। आज भी नाना मत-मतान्तर, नाना धर्म उनकी वाणी लेकर चल रहे हैं। धर्म शास्त्रों में साफ साफ संकेत दिया कि जो धोखा करने वालों, छल करने वालों के लिए नरक का रास्ता है। चारों मुक्तियों की प्राप्ति के सूत्र दिये हैं। सामीप्य, सालोक्य, सारोप्य, सायुज्य आदि लोकों में भी आदमी स्वतंत्र कैसा ? वहाँ आत्मज्ञान ही नहीं है।

मृदुग्ल ऋषि ने जब देवदूतों से स्वर्ग का हाल पूछा तो उन्होंने बताया कि बड़े-बड़े पेड़ लगे हैं। स्वतंत्रता है कि किसी भी पेड़ का फल तोड़कर खा सकते हैं। इसका सीधा मतलब है कि वहाँ भी शरीर में हैं। आत्मरूप नहीं है।

वा घर की सुध कोई न बतावे, जहँवा से हंसा आया है।।

ये आज भी रहस्य हैं। साहिब ने इन रहस्यों को खोला। साहिब ने सभी शरीरों का ज्ञान दिया। उनका उल्लेख बड़ी बारीकी से दिया। जो ब्रह्मादि लोकों में भी रह रहे हैं, सबकी प्राप्ति का सूत्र दिया। साहिब ने कहा कि इन लोकों की प्राप्ति के बाद भी सुरक्षित नहीं है। क्योंकि दुबारा जन्म लेना पड़ेगा। नाना मत-मतान्तरों की तरफ देखें तो चार मुक्तियों का उल्लेख मिल रहा है। सच में वो निराला लोक है।

वेद कितेब पार नहीं पावत, कहन सुनन से न्यारा है।
अवधू बेगम देश हमारा है।।

वेद कितेब भी इंगित नहीं कर रहे हैं। वो नहीं बोल रहे हैं।

यक रूप सभी हैं खुदवन्त न बंदा।
उस मंजिले नज़दीक नहीं काल का फंदा।

जिस लोक का हमेशा परम हंस सिधारे।
चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे।।

इन शब्दों से पुष्टि हो रही है कि साहिब ने एक अनूठे देश की बात कही। पूरे 21 ब्रह्माण्ड की बात की।

तीन लोक की कहा बखानी।।
वो तो कही ही कही।
आगे अचिंत लोक है भाई।

उसमें ऐसे कई ब्रह्माण्ड आ जाते हैं। ये रहस्य दिखे। आखिर फिर विरोध क्यों हुआ? लोगों की थोथी मान्यताओं को झटका लगा। मनुष्य बुद्धिमान भी है। यह मस्तिष्क स्वार्थ से भरा है। जब थोथी मान्यताओं पर साहिब ने प्रहार किया तो पूरा महकमा इकट्ठा हो गया कि यह तो पढ़ा लिखा नहीं है और साहिब की छवि को बिगाड़ने की कोशिश की। राजनीति में देखें कि चुनाव के समय एक नेता दूसरे पर लांक्षण करता है। इसी तरह साहिब पर कई लांक्षण लगाए गये ताकि लोग वहाँ न पहुँचें। इतना ही नहीं, कोई झाँककर भी न देखे। वास्तव में साहिब ने बड़ी लाजवाब बातें बोलीं। तीन लोक की सामग्री से ऊपर की बात की तो लोगों को समझ न आई। तो लोगों ने उन्हें उलटवासियाँ कह दिया। साहिब ने तो सीधा सीधा बोला। उलटा बोला ही नहीं।

पहले कोपरनिकस ने बोला था कि धरती घूम रही है। उसे फाँसी पर चढ़ा दिया गया। तो यह नयी चीज नहीं है। जब साहिब ने अनोखी बातें कही तो लोगों में खलबली मची।

सार शब्द पाय बिना, कागा हंस न होई।।

बड़े करारे प्रहार किये।

कंकर पत्थर जोड़कर, मस्जिद लेई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, बहिरा हुआ खुदाय।।

साहिब ने जनसाधारण की भाषा में पी.एच.डी. की बात

बोली तो विरोधी तबका हिल गया। उनका पूरे देश में बर्चस्व था। उन्होंने साहिब की छवि को बिगाड़ा। आज उनपर पी.एच.डी. की जा रही है। तो कुछ महात्म था न।

पर लोगों ने सोचा कि संत कबीर सूत कातकर जीविका चलाता था, अनपढ़ था, गृहस्थी था। लेकिन उन्होंने शादी नहीं की थी। साहित्यकारों ने भी भ्रमित किया। इसी तरह मीडिया भी भ्रमित करती है, क्योंकि वो किसी न किसी दल से जुड़े हैं। सुप्रीम कोर्ट ने हिदायत दी है कि वो अपना काम ठीक से करें, ईमानदारी से करें।

तो साहिब ने परे की बात की। वैज्ञानिकों ने कहा कि इस ब्रह्माण्ड में ऐसे कई सूर्य हैं, कई चाँद हैं। हरेक ग्रह का अपना चाँद है। ये रहस्य बाद में मिले। इसी तरह साहिब ने भक्ति क्षेत्र का अजीब रहस्य बोला।

अवधू बेगम देश हमारा है।
वेद कितेब पार नहीं पावत, कहन सुनन से न्यारा है।

तो कह रहे हैं कि तीन लोक से परे महाशून्य में अचिंत, सोहं, अंकुर आदि सात लोक और हैं। उन्होंने इन विशाल विशाल लोकों का उल्लेख दिया। पर वहाँ तक भी प्रलय है।

सहज अंश तक जेतिक भाखा। सो रचना परले कर राखा।।

वेदों में 14 लोक की बात का उल्लेख है। साहिब ने 21 ब्रह्माण्ड की बात कही। ऊपर सद्गुरु का धाम है।

अक्षय पुरुष तहाँ आप विराजे।
नहीं तहाँ कछु मोह अरु माया।
नहीं तहाँ परले की छाया।।

वहाँ अक्षय लोक है। वहाँ प्रलयनहीं है।

तहाँ न तीन गुणन को भेवा।
ब्रह्मा विष्णु महेश न तहँवा।

हम सबकी मान्यता यहीं तक रही है। वहाँ ये सब नहीं हैं।

नहीं तहाँ ज्योति निरंजन राया।
अक्षर अचिंत तहाँ न जाया।।

प्रचलित मान्यताएँ यहीं तक सीमित हैं। जो इनका प्रचार करने वाले थे, उन्हें ठेस लगी। हालांकि उन्होंने विचार भी किया कि वो ठीक कह रहे होंगे। साहित्यकारों ने भी अँधेरे में रखा। रावण को जलाते हैं तो उसकी कोई खूबी को नहीं कहते हैं। जबकि रावण के लिए कहते हैं कि वो उत्तम कुल में जन्मा, वेदों का ज्ञाता और शिवजी का परम भक्त था। मैं रावण के गुणों का बखान नहीं कर रहा हूँ। पर मैं यह बताना चाहता हूँ कि हमारे मस्तिष्क का दायरा कैसा है।

तो साहिब को उलटवासियाँ कहा, क्योंकि पढ़े नहीं थे। मगर उन्होंने उलटा कुछ नहीं कहा। उन्होंने तो सीधा सीधा कहा। आज बतौर सलेबस में समझाया जाता है कि जुलाहा था। कमाल उनका बेटा था। यह नक्शा बचपन में ही समझाया जा रहा है तो लोग सोचते हैं कि क्या बात सुननी उनकी, वो तो जुलाहा था, अनपढ़ था।

कबीर का घर दूर है, जैसे लंबी खजूर।

...तो आगे कह रहे हैं—

तहाँ न जीव न तत्व की छाया।
नहीं तहाँ दस इंद्री निर्माया।।
काम क्रोध मद लोभ न तहँवा।

वो आत्मा है। मृत्यु का भय सबको है। शिवजी ने जब भस्मासुर को बरदान दे दिया कि जिसके सिर पर हाथ रखेगा, वो भस्म हो जायेगा तो वो पार्वती जी को पाने के लिए उन्हीं के पीछे लग पड़ा था। तब शिवजी भागकर विष्णु जी के पास पहुँचे थे। यानी किसी स्थिति में भस्म हुआ जा सकता है। काल किसी को नहीं छोड़ता है। पर साहिब कह रहे हैं

काल कराल निकट न आवे।।

उसे अमर कहा। यह अनूठी बात कही, जो पहले अटपटी लगी। कोपरनिकस ने पहले कहा कि धरती घूम रही है तो मौत की सजा दी। पलटू साहिब भी कह रहे हैं-

कोटि परले हो गयी, हम नहीं मरनेहारा।।

क्या अहंकार की बात कही। नहीं। बिलकुल ठीक कहा।

नहीं तहाँ दिवस रैन की छाहीं।

यह सब तो सूर्य के कारण से हो रहे हैं। यानी संसार वाला कुछ भी नहीं है। यह संसार पाँच तत्व की रचना है। वहाँ पाँचों तत्व नहीं हैं। इसलिए इस संसार वाला वहाँ कुछ भी नहीं है।

पवन न पानी पुरुष न नारी। हद अनहद तहाँ नाहिं विचारी।।

धुनें भी नहीं हैं।

शब्द कहौं तो शब्दै नाहीं। शब्द हुआ माया के माहीं।।

शब्द भी नहीं है। शब्द माया में होता है।

बंकनाल के अंदर एक सिस्टम है कि जब जाग जाती है तो इतनी धुनें सुनाई देती हैं कि कहना ही क्या। दुनिया में ऐसा संगीत कोई बजा ही नहीं सकता है। 70 वाद्य यंत्र हैं, जो वर्तमान में इस्तेमाल किये जाते हैं। 70 के 70 की झंकारें बंकनाल में हैं। पर वो इतनी मधुरम हैं कि साधक उसमें खो जाता है। इतनी मधुर बाँसुरी कोई नहीं बजा सकता है, जितनी कि अंदर में बज रही है। इतना अच्छा सितार कोई नहीं बजा सकता है, जितना अंदर में बज रहा है।

अधिकतर लोगों को शिक्षा का अहंकार आ जाता है तो अनपढ़ लोगों से बदतमीजी से बात करने लगते हैं। पढ़ाई का अहंकार अच्छी बात नहीं है। जैसे पढ़े को अहंकार आ जाता है, ऐसे ही योगियों को अहंकार आ जाता है। लेकिन महापुरुष अपने अन्दर अहंकार पनपने नहीं देता है। कभी आप किसी का अपमान कर देते हैं। यह हिंसा है। कभी

धनवान गरीबों से अच्छी बात नहीं करते हैं। मेरे विचार से यह बहुत बड़ी हिंसा है। कभी सुंदर लोग कुरूप लोगों से बदतमीजी से बात करते हैं। यह बहुत बड़ी हिंसा है। अहंकार किसी भी चीज का अच्छा नहीं है। योग वाला भी इज्जत चाहने लगता है। इसी पर तो साहिब ने प्रहार किया।

मोटी माया सब तजै, झीनी तजी न जाय।
पीर पैगंबर औलिया, झीनी सबको खाय।।

माता, पिता, स्त्री, पुत्र, कुटुंब, परिवार, धन आदि मोटी माया को त्यागना कोई मुश्किल काम नहीं है। पर अहंकार रूपी सूक्ष्म माया का त्यागना बड़ा ही कठिन काम है। यह नहीं छूटती। बड़े बड़े पीर, पैगंबर, औलिया आदि सब इसकी चपेट में आ जाते हैं। यह सबको अपने जाल में फँसा लेती है।

सबै मान दे आप अमानी।।

सबको मान दे, पर स्वयं मान न चाहे।

...तो जिस बंकनाल में योगी धुनें सुनता है, वो सुषुम्ना नाड़ी का मध्य कहलाता है।

हमेशा मनुष्य दुनिया में आनन्द चाहता है। हरेक आनन्द की तलाश में है। हरेक जीव आनन्द की खोज में है। संसार में कौन सा आनन्द मिल रहा है? दुनिया में जितने भी आनन्द मिल रहे हैं, वो सब इंद्रियों से संबंधित हैं। पर ये आनन्द हमारी आत्मा तक नहीं पहुँच पाते हैं। कुछ जीभ का आनन्द चाहते हैं। 6 प्रकार के स्वादों को हमारी जिभ्या इंद्री लेती है। कोशिकाओं में सिस्टम है। कुछ खट्टा नहीं खाना चाहते हैं, कुछ को मीठा अच्छा नहीं लगता है। यह जीभ का डिपार्टमेंट बहुत बड़ा है। इसमें खुद आनन्द नहीं है। इसे भोग्य पदार्थ की जरूरत है। इसी तरह आँखें मनोरम दृश्य देखकर आनन्द को प्राप्त करती हैं। दरअसल आत्मा आनन्द की दुनिया में रहने वाली है। आत्मा को ये आनन्द संतुष्ट नहीं कर सकते हैं। इसलिए वो लगातार आनन्द की तलाश में है, कभी

भी संतुष्ट नहीं होती है। कितना भी आनन्द मिल जाए, संतुष्टि नहीं होती है, क्योंकि जिस आनन्द की दुनिया में वो रहने वाली है, वो आनन्द इस संसार की किसी चीज़ में नहीं है।

कस्तूरी के मृग की तरह यह आत्मा भी बाहरी जगत में आनन्द की गलत तलाश कर रही है। सारा जीवन ऐसे में बेकार चला जाता है।

...तो योगी धुनें सुनता है। जिस भी धुन में ध्यान गया, वो वहीं पहुँच जाता है। कभी घंटे की धुन में खो जाता है तो जहाँ से धुन आती है, वो वहीं पहुँच जाता है। फिर उसका उस लोक से कनेक्शन बन जाता है। धुन, शब्द पर सवार होकर वो लोक लोकान्तर की यात्रा कर लेता है। जैसे मोबाइल एक्सचेंज़ से संबंधित है, ऐसे ही वो उस लोक से संबंधित हो जाता है। उसे अनुभव मिलते जाते हैं। धीरे धीरे उसे संसार के आनन्द फीके लगने लगते हैं। उसकी उनमें रुचि बढ़ जाती है। फिर ऐसी स्थिति आ जाती है।

खावता पीवता सोवता जागता, कहैं कबीर सो रहे माहिं।।

चलते फिरते फिर वो उसी में रहता है।

कुछ यहाँ जाकर रुक जाते हैं। वो इन्हीं धुनों को सच्चा नाम बोल रहे हैं। वो इन्हीं को परमात्मा बोल रहे हैं। इनमें आनन्द जरूर है, पर ये धुनें सच्चा नाम नहीं हैं।

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।
सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय।।

साहिब कह रहे हैं कि ये अनहद धुनें समाप्त हो जाती हैं। वो निःशब्द शब्द है।

जहाँ धुनें हैं, वहाँ माया है। यहाँ से भी गाड़ी पार नहीं होने वाली है।

...तो फिर कह रहे हैं कि रंग भी नहीं हैं। रंग तत्वों के कारण से हैं। पीला रंग पृथ्वी से है, सफेद रंग जल से है, नीला रंग वायु से है,

लाल रंग अग्नि से है और काला रंग आकाश से है। पर काला रंग नहीं माना गया, इसलिए रंग चार ही माने गये। बाकी तो इनकों मिलाकर बने। इसलिए साहिब बड़ी वैज्ञानिक बात कह रहे हैं। वहाँ तत्व ही नहीं हैं, फिर रंग कैसे हो सकते हैं।

बड़े बड़े साहित्यकार हैं। डॉ० हौसला प्रसाद जी कबीर जी पर पी.एच.डी. किये हैं। उन्होंने नाम लिया तो कहा कि साहिब की जिन वाणियों की बात आप कर रहे हैं, वो नहीं मिलती हैं। मैंने कहा कि पाखंडियों ने भ्रमित करने के लिए और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए केवल उनकी उन्हीं वाणियों को लिया है, जिनसे उनका स्वार्थ सिद्ध हो सके। एक भिखारी भी अपने हित के लिए उनकी वाणी का सहारा लेता हुआ कहता है।

दान दिये धन न घटे, कह गये दास कबीर।।

पर वो यह नहीं कहेगा।

माँगन मरन समान है, मत माँगो कोई भीख।।

यह कहने से उसके स्वार्थ की पूर्ति नहीं हो पायेगी। इसी तरह से सगुण वालों ने साहिब को सगुण उपासक बना दिया और निर्गुण वालों ने निर्गुण उपासक बताकर भ्रमित किया। वास्तव में वो दोनों से परे थे। दादू दयाल इस पर बड़ा सुंदर कह रहे हैं-

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय।।

अब निर्गुण वाला कह रहा है-

रस गगन गुफा में अजर झरै, बिन बाजा झंकार उठै।।

वो कह रहा है कि साहिब यहीं तक थे। अपने अपने दायरे के अनुसार सबने साहिब की वाणी के अंश लिये। पूरी वाणी कोई नहीं लिया।

कबीर का गाया गायेगा, तो तीन लोक में मार खायेगा।।
कबीर का गाया बूझेगा, तो अन्तरगत को सूझेगा।।

इस तरह अलग अलग तरीकों से साहिब की वाणी का इस्तेमाल किया गया। आदमी भ्रमित हो गया। लेकिन साहिब ने रहस्य दिये हैं।

पिंड ब्रह्माण्ड को तहाँ न लेखा। लोकालोक तहाँ न देखा।।

वो पिण्ड और ब्रह्माण्ड से परे है।

अण्ड पिण्ड से पार वो देश हमारा है।।

पंच मुद्राओं वालों ने भी उनकी वाणी को शामिल किया। साहिब तो साफ कह रहे हैं—

अगुण कहौं तो झूठ है, सगुण कहा न जाय।
अगुण सगुण के बीच में, कबीरा रहा लुभाय।।

दही को मथते हैं तो मक्खन निकलता है। फिर उसे आँच देने पर घी निकलता है। शरीर में पवन है। पहले उसे इसमें से बाहर निकाला जाता है। फिर स्वांसा से सुरति को निकालते हैं। राजा जनक उनमुनि मुद्रा से ध्यान करते थे। इसमें ध्यान का काफी अंश एकाग्र हो जाता है। वो शरीर से निकलने की कला जानते थे, पर वो मन से निकलना नहीं जानते थे। बाद में अष्टावक्र की शरणागत होना पड़ा था। इसके ऊपर खेचरी मुद्रा आती है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश यह साधना करते हैं। इसमें बहुत एकाग्र होना पड़ता है। इसलिए शिवजी 4-4 युग के लिए समाधि लगाते हैं। जैसे दूध का दही जमाया, फिर दही से मक्खन निकाला और छाछ अलग कर दी। फिर मक्खन से घी निकालते हैं। खेचरी मुद्रा द्वारा साधक स्वांसा से अलग हो जाता है।

पवन को पलटकर, शून्य में घर किया।।

मन पवन कैसे पलटी? सब वायुएँ इकट्ठा की।

इड़ा के घर पिंगला जाई, सुखमन नीर रहे ठहराई।
ओहं सोहं तत्व विचारा, बंकनाल में किया सम्हारा।।

इड़ा को पिंगला के घर ले गये। यह सब एकाग्रता से हुआ। सुरति के दंड से, घेर मन पवन को।

फेर उलटा चले, धर औ अधर विच ध्यान लावै।
कहैं कबीर सो संत निर्भय हुआ, जन्म औ मरन का भ्रम भानै।।

पवन को एकाग्रता के डंडे से घेरा। फेर कर उलटा कर दिया। जमीन और आसमान के बीच ध्यान किया। अब स्वांस को एकाग्रता से पलटा। जो स्वांसा नाभि में आ रही थी, वो ऊपर की ओर चलने लगी, अष्टम चक्र में चलने लगी। धीरे-धीरे सुरति सुषुम्ना में समाने लग जाती है। ऐसी अवस्था में मनुष्य डर जाता है। मन डराता है कि अब तो मर गये, कहीं गलत दिशा में तो नहीं जा रहे। यहाँ पर एकाग्रता भंग करना चाहता है। यदि एकाग्रता भंग हुई तो फिर स्वांसा नीचे आ जाती है और सारा खेल ख़त्म हो जाता है। मन ध्यान को रोकता है, 10वें द्वार की ओर नहीं जाने देता है।

सुषुम्न मध्ये बसे निरंजन, मूँधा दसवां द्वारा।
उसके ऊपर मकर तार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा।।

10वें द्वार के ऊपर मकर तार है। मन इसमें एकाग्र होने नहीं देता है। मन शरीर बनाकर रखने का प्रयास करता है। मन की, माया की चालाकी है कि आत्मा अपने को न जान पाए।

चढ़ो सम्हार सम्हारा।।

मीराबाई कह रही है-

तहाँ सिलहली गैल, चढ़ूँ तो गिर गिर पड़ूँ।।
उठूँ सुरति सम्हार, चरण आगे धरूँ।।

तब आपको जिस चीज़ से डर लगता है, मन उसी से डरायेगा। यदि ऊँचाई से डर लगता है तो उसी से धमकायेगा। चुपके से अनुभव करायेगा। अचानक किसी बात को याद करके आप दुखी हो जायेंगे और ध्यान भंग हो जायेगा। फिर आप कहेंगे कि कुछ नहीं मिला, कुछ नहीं है अन्दर में। नहीं, हताश नहीं होना है। मन हताश ही करना चाहता है। वो चाहता है कि आप कोशिश भी नहीं करें। यदि आप एकाग्र रहे तो हाथ भी नहीं हिल पायेंगे, टाँगें भी नहीं। मन डरायेगा कि अब तो टाँगें कटवानी पड़ जायेंगी। कहीं गलत दिशा में, कहीं अँधकार में जा रहे हैं। क्योंकि सुषुम्ना में अँधकार भी है। इतना मन भ्रमित करने की कोशिश

करता है। यदि आप एकाग्र रहे तो कुछ देर में लगेगा कि अब सिर्फ ध्यान रह गया हूँ। अगर बंकनाल में ध्यान लगा तो अनुभूति नहीं हो सकती है। अगोचरी में भी यह अनुभूति नहीं हो सकती है। शरीर से सवा हाथ ऊपर ध्यान इसलिए कहा कि आपको लगे कि शरीर नहीं हूँ। मन आपको आभास दिलाता है कि शरीर हो। वो इसके बाहर आपको नहीं निकलने देना चाहता है। बहुत बड़ा रहस्य है।

जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गयी।
यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनई।।

तो अब एकाग्र होते होते स्वांसा सिमटकर एक बिंदू रह जाती है। वो जीरो हो गया।

खसखस के दाने के अन्दर, शहर खुदा का बसता है।
कस्त करे ऐनों के तिल, में, वहीं से उसका रस्ता है।।

वो जीरो पलट जाती है तो अन्दर की दुनिया में चला जाता है। स्थूल वाली चेतना खत्म हो जाती है। अब एक अन्य देही मिल जाती है। महाप्रज्ञा अवस्था की प्राप्ति हो जाती है। नींद में पहुँचे तो उसी समय एक शरीर मिल जाता है। ऐसे ही जीरो पलट जाने से एक अनूठी अवस्था में पहुँच जाते हैं, जिसमें एक निराला शरीर मिल जाता है। तब चेतना बढ़ जाती है, आनन्द बढ़ जाता है, लगता है कि बहुत बड़ी शक्तियाँ आ गयी हैं। करोड़ों सूर्यों को लजा देने वाला प्रकाश भी दिख जाता है। साधक को लगता है कि परम तत्व को पा गया हूँ। इसी पर साहिब कह रहे हैं

कोई कोई पहुँचा ब्रह्म लोक में, धर माया ले आई।।

साधक फिर अपनी शक्तियों का इजहार करके दुनिया में वाहवाही लूटने लगता है। वो मन की परिधि से बाहर नहीं निकल पाता, 11वें द्वार का भेद नहीं जान पाता।

परम पुरुष दर अधर तार है, अधर तार के आगे।
उसके आगे कौन बखाने, सभी शब्द में पागे।।

उसके आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जाननहारा।
कहैं कबीर जानेगा वो ही, जापर कृपा सतगुरु की होई।।

इस तरह साहिब ने बड़े रहस्य दिये।

आदि पुरुष को तहाँ न थाना। यह चरित एको नहीं जाना।।

इस रहस्य को बहुत कम लोग जानते हैं।



श्रद्धा सुमन

1. तुम भी जल हो, मैं भी जल हूँ,
तुम सागर हो मैं एक बूँद।
जाने मिलेगी कब सागर में,
बिछड़ी हुई सागर की बूँद।।

2. उम्मीदों की हमारी हद खत्म जहाँ हो,
तेरी रहमतों की शुरूआत वहाँ हो।
ज़र्‌रा आफताब हो तेरी इक नज़र वे,
रहमत तेरी लफ्ज़ों में कैसे बयाँ हो।।

3. तेरी रहमतों का सतगुरु,
कभी पार नहीं पाया।
जब भी हमने हाथ फैलाया,
झोली में है हर सुख पाया।।

4. प्रेम पियारा पाइहैं, परमात्म का पार।
अहंकारी कर जतन मुए, पाए न दीदार।।

काया की गत काहू न हेरी

साहिब ने एक शब्द में सहज भाव से कहा–

अवधु अँध धुँध अँधियारा, कोई जानेगा जाननहारा।।
या घट भीतर सूरज चंदा, या ही में नौ लख तारा।।
इस घट भीतर हीरे मोती, इसी में परखनहारा।।
इस घट भीतर ब्रह्मा विष्णु, शिव सनकादि अपारा।।
या घट भीतर कामधेनु है, कल्पवृक्ष एक न्यारा।।
या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के, भरे अटल भण्डारा।।

इसमें अद्‌भुत रहस्य भरे पड़े हैं। शक्तियाँ भी हैं, सिद्धियाँ भी हैं, अखंड भण्डार भरे पड़े हैं। आजतक वैज्ञानिक भी मानव संरचना के विषय में पूरी जानकारी नहीं ले पाए हैं। वो नहीं समझ पाए हैं कि किस सिद्धांत से शरीर चल रहा है, इसमें कैसी ताकतें भरी पड़ी हैं। साहिब वाणी में कह रहे हैं–

सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल।।

वो कह रहे हैं–

यह काया है समरथ केरी। काया की गति काहू न हेरी।।
शिव गोरख सो पच पच हारे। इस काया का भेद न पाए।।

बिलकुल पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि अद्‌भुत रहस्य भरे पड़े हैं। पर सावधान, शरीर में विरोधी ताकतें भी मौजूद हैं। इसलिए कह रहे हैं–

विष अमृत रहत इक संगा। मलयागिरि में रहत भुजंगा।।

विष और अमृत इस शरीर में एक साथ रहते हैं। मनुष्य आत्मतत्व की प्राप्ति करना चाहता है, पर इस गुत्थी को सुलझा नहीं सका कि आत्मतत्व शरीर में कैसे रह रहा है? परमात्म शक्तियाँ कैसे काम कर रही हैं? विरोधी शक्यिाँ कैसे काम कर रही हैं? मानव के पास जो संसाधन हैं, वो इस रहस्य को जानने में सक्षम नहीं हैं। यह तत्वज्ञान मनुष्य की क्षमता से दूर हैं। दूर तो है, पर इसे पाने का हकदार भी यही है। गोस्वामी जी कह रहे हैं-

सुर दुर्लभ मानव तन पाया। श्रुति पुराण सद्ग्रंथन गाया।।

धार्मिक ग्रंथ भी इस मानव तन को देवताओं के लिए भी दुर्लभ बता रहे हैं। क्योंकि-

साधन धाम मोक्ष का द्वारा। जेहि न पाय परलोक सँवारा।।

हम केवल इसी तन को पाकर मुक्ति की प्राप्ति कर सकते हैं। इसलिए देवता भी इस तन की आकांक्षा रखते हैं कि मिले। अगर इस शरीर को दुर्लभ कहा तो रहस्य है। पहले इसकी क्षमताओं को देखते हैं। हम सबको पास क्षमताएँ कितनी है? कहाँ तक उनकी अनुभूतियाँ कर सकते हैं? ज्ञान के स्रोत कहाँ कहाँ पर हैं? किन साधनों से विकास कर सकते हैं? बँधन कौन से हैं? ये सवाल बड़े गहन हैं। सबसे पहली बात यह कि देखते हैं कि शरीर की क्षमताएँ क्या हैं? फिर आध्यात्मिक शक्तियाँ देखते हैं कि कैसे प्राप्त होंगी।

नींद में सोए आदमी के पास ताकत होती है, पर वो उस ताकत का इस्तेमाल नहीं कर पाता है। हमारा जितना काम हो रहा है, शरीर काम कर रहा है। कर्मज्ञान इंद्रियाँ काम कर रही हैं। पर निद्रा में चले जाने पर वो ताकतें होने पर भी लुप्त रहती हैं। इस तरह आत्मा के पास ताकत है, पर मन-माया के बीच होने से उसकी ताकतें लुप्त हैं।

नींद में कान खुले हैं, पर सुनाई नहीं दे पाता है। नाक से खुशबू-बदबू का पता नहीं चल पाता है। इनकी शक्ति होती है, पर उनका प्रयोग

नहीं हो पाता है। इस तरह आत्मा की शक्तियों का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। हम शारीरिक शक्तियों का ही प्रयोग कर रहे हैं। आध्यात्मिक शक्तियों का प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

इंसान के पास भौतिक ताकत भी कम नहीं है। मानव के पास भौतिक ताकत काफी है। भौतिक ताकत कैसी है? क्या कर सकते हैं? क्या उपलब्धियाँ कर सकते हैं?

हम सबके पास भौतिक शरीर है। पहला तो शरीर में है-इंद्रियाँ। पाँच कर्म इंद्रियाँ हैं, पाँच ज्ञान इंद्रियाँ हैं। एक बात है कि माता के रज और पिता के वीर्य से शरीर का निर्माण हुआ, इसलिए नाशवान् भी कहते हैं, क्षणभंगुर भी कहते हैं। इसकी 25 प्रकृतियाँ हैं। हर तत्व की 5 प्रकृतियाँ दिख रही हैं।

पहला पृथ्वी तत्व दिख रहा है। हाड़, माँस, त्वचा, रोम और नाखून सबमें है। दूसरा जल तत्व भी थूक, रक्त, मूत्र, वीर्य, पसीना आदि रूपों में दिख रहा है। तीसरा अग्नि तत्व भी भूख, प्यास, आलस्य, निद्रा, जम्भाई आदि रूपों में दिख रहा है। चौथा वायु तत्व सुकड़ना, पसरना, बोलना, चलना, बल लगाना आदि रूपों में दिख रहा है। पाँचवाँ तत्व आकाश रस, रूप, गंध, शब्द, स्पर्श आदि रूपों में अनुभव हो रहा है।

ये चीजें सबमें हैं। हम सब देख रहे हैं कि पंच भौतिक तत्व और 25 प्रकृतियाँ हम सबमें मौजूद हैं। वो यथावत् कर्म कर रही हैं।

हमारे यहाँ भौतिक शक्ति के स्रोत ये हैं। पाँच कर्म इंद्रियों को देखते हैं। पैरों से चलने का काम कर रहे हैं, हाथों से क्रियाएँ कर रहे हैं, शिश्न इंद्री से मूत्र विसर्जन कर रहे हैं, मल इंद्री से मल विसर्जन कर रहे हैं, मुख से खाने का काम कर रहे हैं।

पाँच ज्ञान इंद्रियाँ हैं-**आँख, नाक, कान, मुख, त्वचा।** मुख कर्म इंद्री और ज्ञान इंद्री दोनों है। खाने का काम भी कर रहे हैं और बोल भी रहे हैं। छः प्रकार के रसों का ज्ञान हमें मुख इंद्री से ही मिलता है। ये

हमारे जीवन निर्वाह के साधन हैं। नाक गँध का ज्ञान दे रही है, कान शब्द का ज्ञान दे रहे हैं, त्वचा शीतोष्ण का ज्ञान दे रही है, आँखें दृश्य का ज्ञान दे रही हैं।

गाड़ी के पहिये भी हैं और पुर्जे भी। सभी के सहयोग से गाड़ी चल रही है। इसी तरह शरीर रूपी गाड़ी इन सबके सहयोग से चल रही है। कहीं पैर गलत दिशा में जा रहे होते हैं, ठोकर लगने वाली होती है तो आँखें ही बचाती हैं। वो ज्ञान दे देती हैं कि आगे पत्थर है। कानों से सब सुन रहे हैं। कितने महत्वपूर्ण अंग हैं ये। हम इनके माध्यम से बहुत चीजें कर रहे हैं।

सोचें कि नाक नहीं होता तो कितनी मुश्किल होती। नासिका से स्वांसा लेने का काम कर रहे हैं। कोई खाने वाली खराब चीज हो तो आँख नहीं बता पाती है, नाक के पास ले जाते हैं तो वो बता देती है। नासिका मुख के पास इसलिए है कि कोई भी पदार्थ खाने से पहले सूँघें और फिर मुँह में डालें। पूरा ढाँचा बड़े दिमाग से बनाया गया है। बड़ी बुद्धिमानी से बनाया गया है। यह चोला नारायणी चोला ऐसे ही नहीं कहला रहा है। इसमें क्षमता है। हमारा मुँह बोलने का काम कर रहा है। वाणी नहीं होती तो हम अपने विचार कैसे रखते, कैसे समझा पाते, कितना मुश्किल होता।

पाँचवीं ज्ञान इंद्री है—त्वचा। छिलका फल को सुरक्षित रखता है। त्वचा कठोर और मुलायम का ज्ञान भी देती है। रक्षा करती है यह। इनका कोई संचालन तो कर रहा है, क्योंकि खुद तो ये जड़ हैं। स्पीकर से आवाज आ रही है, पर आवाज बोलने वाले की है। स्पीकर केवल माध्यम है। इसी तरह कर्म ज्ञान इंद्रियाँ माध्यम हैं। इनका संचालन कोई कर रहा है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रेन ही पूरे शरीर का संचालन कर रहा है। पर वो भी कोशिकाओं का समूह है। ये खुद काम नहीं कर रही हैं। इनके पीछे ताकत काम कर रही है। देखें कि और क्या है हमारे

पास संसाधन। आँखें देख रही हैं, **हाथ-पाँव** काम कर रहे हैं। कौन संचालन कर रहा है? हाथों में किसी की अनुभूति की ताकत नहीं है। उँगली पर चोट लगी, आप कहने लगे कि दर्द हो रहा है। उँगली में सिस्टम नहीं है दर्द को अनुभव करने का। दरअसल हमारे मस्तिष्क ने यह बात फील की। उसने यह बात जानी। हमारा दिमाग पूरे शरीर का अच्छा संचालनकर्त्ता है। शरीर के अंगों को सुरक्षित करता है। किसी अंग पर हमला होता है तो **हाथों** को हुकुम देता है कि बचाओ। हाथों में तो विचार करने की ताकत नहीं है। पैर गलत दिशा में चले जाएँ तो आप फौरन बच जाते हैं। **पैरों** में तो देखने की ताकत नहीं थी। आँखों ने देखा। पर यह काम अन्दर से किसी ताकत ने किया। उसने संदेश दिया, उसने हुकुम दिया। कोई संचालन कर रहा है। वो है मन। मन के चार रूप हैं- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। ये चार सूक्ष्म इंद्रियाँ हैं। ये अन्तःकरण की चार सूक्ष्म इंद्रियाँ हैं। मन संकल्प कर रहा है, बुद्धि निश्चय कर रही है। लोग पूरा जीवन गुजार लेते हैं, पर शरीर का रहस्य नहीं जान पाते हैं।

आदमी भौतिक शक्तियों को भी ठीक से नहीं समझ पा रहा है। आध्यात्मिक शक्तियाँ तो बहुत आगे हैं।

...तो जब यह मन संकल्प करता है तो इसे मन कहते हैं। जो भी इच्छाएँ हैं, मन की हैं, आत्मा की नहीं हैं। जो भावना है, सभी स्थूल रूप से शरीर से ताल्लुक रखने वाली भावनाएँ हैं। मनोवैज्ञानिक नहीं समझ पा रहे हैं कि भावनाएँ क्यों उठ रही हैं।

अचानक इच्छा उठती है कि आम खाना है। आपके अन्दर आम खाने की इच्छा क्यों हुई? कभी इच्छा उठी कि आज फलानी मिठाई खायेंगे। आखिर वो भावना क्यों पनपी? हम सब जानते हैं कि इच्छा उठी। पर क्यों उठी? यह नहीं जान पाते हैं। हम सब संकल्प करते हैं। सवाल उठा कि क्यों हो रहे हैं? कभी लोग घूमना चाहते हैं। इच्छा होती है। आखिर यह इच्छा क्यों आई? कभी लोग फिल्म देखते हैं। प्रश्न उठा

कि उनके अन्दर यह भावना आई कैसे? पूरी जिंदगी अनचाही इच्छाओं का पालन करते बीत जाती है।

मूल रूप से सभी इच्छाओं का संबंध शरीर से है।

पहली बात है कि आम खाने की इच्छा क्यों हुई? ब्रेन के कहा कि आम में जो तत्व हैं, वो शरीर के लिए जरूरी हैं, इसलिए दिल में यह भावना उठी।

षट् रस हैं। मीठा रस खाने की जरूरत पड़ी तो ब्रेन ने प्लान किया कहाँ मिलेगा। ब्रेन ने सोचा कि आम का मौसम है। तब उठी इच्छा। अगर आम का मौसम नहीं है तो नहीं उठ रही है इच्छा।

इन भावनाओं को कोई नहीं समझ पा रहा है।

षट्रस हैं-खट्टा, मीठा, तीखा, कड़वा, नमकीन और फीका। ये कहाँ से उत्पन्न हुए? इनके लिए इच्छाएँ क्यों उठीं? हमारे शरीर में पाँच तत्व हैं-जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश। इनको संतुलित रखना पड़ता है। ये आटोमेटिक संतुलित हो रहे हैं। इन्हीं तत्वों से 6 रस उत्पन्न होते हैं। जल तत्व का स्वाद खारा है। जल खारा है। वैज्ञानिक गलत बोल रहे हैं कि रंगहीन है, स्वादहीन है। हाँ, गंधहीन है, पर स्वाद है, रंग भी है। वो स्वादहीन नहीं है। जल का स्वाद है। कैसे रंगहीन है? आपके सामने मिट्टी का तेल रखें तो आप पहचान लेते हैं कि मिट्टी का तेल है। पानी रखें तो कहते हैं कि पानी है। कैसे पानी है? यानी उसकी पहचान है और पहचान रंग से हुई। पानी का रंग सफेद है।

श्वेत रंग है नीर को, खारो इसको स्वाद।।

तो इस तरह अग्नि का रंग लाल है और स्वाद तीखा तथा चरपरा है। वायु का रंग नीला है और स्वाद है खट्टा। दूर जो नीला आकाश दिख रहा है, वो वायु का रंग है। उलटी आती है तो खट्टी डकारें आती हैं। कैसे आईं। आपने खट्टाई नहीं खाई तो भी आई। क्योंकि वायु तत्व का स्वाद खट्टा है।

तो मिट्‌टी का स्वाद मीठा है। कभी बच्चे मिट्‌टी खाते हैं। मत खाने दो। मिट्‌टी में जहर भी है। हम धतूरा भी तो इस्तेमाल कर रहे हैं। सब इसी के गर्भ से निकला। जहर कोई आसमान से तो टपका नहीं। वसंधरा की क्या ताकत है। खट्‌टाई निकालना चाहो तो नीबू बो दो, मिठास निकालना चाहो तो गन्ना बो दो। सभी मौजूद है इसमें। यही धर्म हमारे शरीर का है।

इसी तरह आकाश का स्वाद फीका है और रंग काला है। तो 6 रस शरीर में हैं। जो भी रस कम होता है तो उसे पूरा करने की ड्यूटी ब्रेन की है। आपका मन कहेगा कि नमकीन खा लें, पर आपको पता नहीं चलेगा कि क्यों कहा मन ने? आप दौड़ पड़े खाने को।

यानी कोई चीज बड़ी बारीकी से शरीर को चला रही है। इतनी बारीकी से चला रही है कि आदमी जान नहीं पा रहा है। बहुत बारीक सिस्टम है। इसलिए हमारी जीभ ये वो वो चीजें खाने को कहा। जीभ की क्या ताकत थी। कभी कुछ कहते हैं कि मजा आ गया। जीभ में ताकत नहीं है मजा लेने की। यह ब्रेन ने प्रेरित किया। इसलिए-

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी।।

अब ये चार अंत:करण की इंद्रियाँ हुईं। इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई। यह पूरा सिस्टम कैसे संचालित हो रहा है। कोई नहीं जान पा रहा है।

जहँ जाना तहँ निकट है, रहा सकल भरपूर।
बाड़ी गर्व गुमान ते, ताते पड़ गयो धूर।।

इसी मन के चार रूप हैं। जब संकल्प करता है तो मन कहते हैं। जब निश्चय करता है तो बुद्धि कहते हैं। जब याद करता है तो चित्त कहते हैं। जब क्रिया करता है तो अहंकार कहते हैं।

आप शरीर का पूरा सिस्टम अगर समझ जाएँ तो कहना ही क्या। जैसे आत्मा इस शरीर का आधार है, इस तरह अज्ञान इस विश्व की

आत्मा है। जैसे आत्मा न होने से शरीर संचालित नहीं हो सकता है, इसी तरह अज्ञान नहीं होने से विश्व होगा ही नहीं। कैसे? इस विश्व की आत्मा ही अज्ञान है। पूरा विश्व अज्ञानमय है। सोचें कि आत्मा को ज्ञान हो जाए कि आत्मा हूँ तो कुछ खायेगी नहीं, विकारों की तरफ दौड़ेगी नहीं, शरीर का बोझ उठायेगी नहीं। बिलकुल नहीं करेगी कोई काम। इसलिए अज्ञान विश्व का आधार है।

अज्ञान कहाँ से आया? अज्ञान का आधार क्या है? अज्ञान क्या है? अज्ञान है–नहीं जानना। जानना क्या है? ज्ञान क्या है? प्रत्यक्ष अनुभूति। मैंने फलाने को देखा, यह जानना ही ज्ञान है। इसका आधार है–प्रकाश। इसलिए प्रकाश ज्ञानमय है और अज्ञान अँधकारमय है। अगर अँधकार हो जाए तो जानना, पहचानना मुश्किल हो जाएगा। अज्ञान की उत्पत्ति अँधकार से होती है। अँधकार कहाँ से आया?

संसार को अज्ञानमय कहा, अँधकारमय कहा।

तमसो मा: ज्योर्तिगम्या:।।

हे प्रभु, हमें अँधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

पाँचवाँ तत्व ही अँधकार है। इसलिए पूरा ब्रह्माण्ड अँधकारमय है।

वैज्ञानिकों ने कहा कि डार्क मैटर ही विश्व का आधार है। 90 प्रतिशत डार्क मैटर है और 10 प्रतिशत प्रकाश है।

देखते हैं कि शरीर में पाँचों तत्व का केंद्र कहाँ पर है। बल्ब जल रहा है तो कहीं से पॉवर आ रही है न। पाँचों तत्व का केंद्र है। हिंदोस्तान की हुकुमत चल रही है तो राजधानी है न। शरीर में पृथ्वी तत्व मूलधार चक्र पर है, जल तत्व शिश्न पर है, वायु तत्व नाभिदल कमल में है। रावण ही नहीं, किसी की भी नाभि फटेगी, वो मरेगा। अग्नि तत्व का केंद्र मुख में है, आकाश तत्व का केंद्र सुषुम्ना के अन्दर है। इसलिए मन वहाँ है ताकि दिखे न।

शून्य महल में घोर अँधेरा, करो नाम उजियारा।।

आदमी की पकड़ से बाहर है मन।

सुषुम्न मध्ये बसे निरंजन, मूँधा दसवाँ द्वारा।
उसके ऊपर मकरतार है, चढ़ो सम्हार सम्हारा।।

यह सुषुम्ना के अन्दर में रहता है। इसलिए आदमी समझ नहीं पाता है मन को।

मन चीह्ने को बिरला भेदी।

साहिब कह रहे हैं–

मन ही निरंज सबै नचाए।।

इसलिए सुषुम्ना के अन्दर आकाश तत्व है। वहीं बैठा है। वहीं से ब्रेन को आदेश देता है। हमारा दिमाग स्वयंभू नहीं है। वो मंत्री है निरंजन का।

आवाज स्पीकर की नहीं है। वो एक माध्यम है। आवाज आदमी की है। इसी तरह हमारा ब्रेन है। यह पूरा अनुकरण करता है। आपके जिस्म की हरेक इंद्री मन का अनुकरण कर रही है। बुद्धि ने कहा कि गुप्ता जी को नमस्कार करो। हाथ जुड़ गये। उसे पता नहीं है। कहीं गुस्सा आया तो ब्रेन ने कहा कि मारो तमाचा। तो तमाचा मार दिया। ये अनुयायी हैं। वही हाथ नमस्कार कर रहे थे और उन्हीं ने तमाचा मार दिया। उनको कुछ पता नहीं था। यह काम ब्रेन का था। हमारा ब्रेन मन का अनुकरण करने वाला है, आत्मा का अनुकरण करने वाला नहीं है। आदमी अपने को ब्रेन मानकर जी रहा है, अपने को शरीर मानकर जी रहा है। इसके आगे कोई सोच ही नहीं रहा है।

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा।
इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पेट के धंधा।।

यहाँ मजबूर होकर बोल रहे हैं साहिब।

एक न भूला दो न भूले, जो है सनातन सोई भूला।।

यहाँ एक दो नहीं भूले हुए हैं। यहाँ सब भूले हैं।

संतो यह जग बौराया।।

....तो यह मन सुषुम्ना में क्या करता है? वो तरंगे देता है। ब्रेन भी नहीं समझ पाता है। अगर समझ पाता तो दुनिया चल ही नहीं सकती थी। यह रहस्य है।

मोबाइल में तरंगें आ रही हैं। कहाँ से आ रही हैं? टॉवर से आ रही हैं। लेकिन आते हुए दिखाई नहीं दीं। मोबाइल एक आधार था। शरीर को निरंजन ने अपने कार्यों को पूरा करने के लिए बनाया है।

देव निरंजन सकल शरीरा। तामें भ्रम भ्रम रहत कबीरा।।

कबीर आत्मा को कहते हैं। वो भ्रमित है इस शरीर में। जानने की कोई कोशिश नहीं कर रहा है।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खानि।
शीश दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जानि।।

हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, उसमें मन का बर्चस्व है। पूरा पूरा जो मन चाहता है, करवाता है। वो गुस्सा करवाता है तो आप तोड़-फोड़ करते हैं। किसी ने अन्दर से प्रेरित किया।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे।
दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए।।
एक दिल लाखों तमन्ना, उसपे भी ज्यादा हवस।
फिर ठिकाना है कहाँ, उसको बिठाने के लिए।।

मन की हर फीलिंग का आपको अनुकरण करना पड़ता है। हमारा दिमाग बाध्य है। जैसे हाथ बाध्य है। हमारी आत्मा भी मन का अनुकरण कर रही है। अगर दिमाग ने हुकुम दिया कि श्रीनगर जाना है तो आपको जाना पड़ता है। आँखें भी तैयार हो जाती हैं, याददाश्त भी तैयार हो जाती है। हम बोरी-बिस्तर बाँधकर चल पड़ते हैं। जैसे बाजीगर बंदर से मनचाहा काम करवा लेता है, इसी तरह मन आत्मा को भ्रमित

करके नाना कर्म करवा रहा है।

आख़िर यह मन आत्मा को अज्ञान में क्यों रख रहा है? मन को क्या जरूरत पड़ गयी? क्यों परेशान कर रहा है? मन का एक स्वार्थ है। मन का एक मतलब है? मन कौन है? मन क्या है? मन की उत्पत्ति कहाँ से हुई? इतनी खतरनाक चीज का सृजन कहाँ से हो रहा है? क्यों हमें इतने उलझाव में रखा हुआ है? इसकी शक्ति का स्रोत क्या है? इसका प्रभाव तो सबपर है। सबको इसने उलझाया हुआ है। यह परम पुरुष का पाँचवा पुत्र है। साहिब ने उल्लेख किया।

धर्मदास जी ने अमर-लोक तथा सृष्टि-उत्पत्ति के विषय में जानने की इच्छा से कबीर साहिब से प्रार्थना करते हुए पूछा -

अब साहिब मोहि देउ बताई। अमर-लोक सो कहां रहाई॥
कौन द्वीप हंस को वासा। कौन द्वीप पुरुष रह वासा॥
तीन लोक उत्पत्ति भाखो। वर्णहुसकल गोय जनि राखो॥
काल-निरंजन किस विधि भयऊ। कैसे षोडश सुत निर्मयऊ॥
कैसे चार खानि बिस्तारी। कैसे जीव कालवश डारी॥
त्रय देवा कौन विधि भयऊ। कैसे महि आकाश निर्मयऊ॥
चन्द्र सूर्य कहु कैसे भयऊ। कैसे तारागण सब ठयऊ॥
किस विधि भई शरीर की रचना। भाषो साहिब उत्पत्ति बचना॥

हे सहिब ! कृपा करके अब मुझे बताओ कि वह अमर-लोक कहाँ है? उस अमर-लोक में जीव किस स्थान पर रहते हैं? तीन-लोक की उत्पत्ति कैसे हुई? काल-पुरूष कैसे हुआ? सोलह पुत्र कैसे बने? यह निर्मल आत्मा चार खानियों में कैसे गयी? आत्माएँ काल-पुरुष के चंगुल में कैसे फँस गयीं? त्रिदेव कैसे बने? पृथ्वी और आकाश कैसे बने? शरीर की रचना कैसे हुई? हे साहिब! कृपा करके मुझे सृष्टि की उत्पति का सारा भेद समझाकर कहिए। तब धर्मदास को अधिकारी जानकर कबीर साहिब ने फरमाया-

तब की बात सुनहु धर्मदासा। जब नहिं महि पाताल अकाशा॥

जब नहिं कूर्म बराह और शेषा। जब नहिं शारद गोरि गणेश।
जब नहिं हते निरंजन राया। जिन जीवन कह बांधि झुलाया॥
तैतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊं काहीं॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ने तहिया। शास्त्र वेद पुराण न कहिया॥
तब सब रहे पुरूष के माहीं। ज्यों बट वृक्ष मध्य रह छाहीं॥

हे धर्मदास! मैं तब की बात कह रहा हूँ, जब धरती और आकाश नहीं थे; जब कूर्म, शेष, बाराह, शरद, गोरी, गणेश आदि कोई भी न था; जब जीवों को कष्ट देने वाला निरंजन भी न था; जब तैतीस करोड़ देवता भी न थे... और अधिक क्या बताऊँ ? ब्रह्मा, विष्णु और महेश न थे। वेद, शास्त्र, पुराण आदि भी न थे। लेकिन वह एक था। वो अकेला था।

कबीर साहिब कहते हैं कि प्रारम्भ में सत्य-पुरुष गुप्त थे। उनका कोई साथी-संगी नहीं था। वे कभी बने नहीं हैं और न ही मिटेंगे।

जिस किसी वस्तु का सृजन होता है, वह अन्तः नष्ट भी अवश्य हो जाती है। लेकिन जो परम-पुरुष कभी बना ही नहीं, वह मिट कैसे सकता है! साहिब धर्मदास से कहते हैं कि साकार, निराकार, लोक-लोकान्तर आदि सब बाद में बने; अतः गवाही किसकी दूँ! चारों वेद भी सत्य पुरुष की कहानियाँ नहीं जानते और निराकार अर्थात काल-पुरूष तक की बात ही कहते हैं।

धरती, आकाश, ब्रह्माण्ड, निरंजन, त्रिदेव आदि की उत्पति के विषय में बताते हुए साहिब फरमाते हैं कि सर्वप्रथम परम-पुरुष ने इच्छा करके एक शब्द पुकारा, जिससे एक अद्‌भुत श्वेत रंग का प्रकाश हुआ और वह अद्‌भुत प्रकाश अनन्त में फैल गया। वह प्रकाश सांसारिक प्रकाश की भांति न था, वह इतना अद्‌भुत था की जिसका एक-2 कण करोड़ों सूर्यों को भी लज्जा दे।

जब वह प्रकाश अनन्त में फैल गया तो फिर वे सत्य-पुरुष स्वयं उस प्रकाश में समा गये। अब वह प्रकाश चेतन हो गया, जीवित हो गया।

जिस प्रकार आत्मा के शरीर में आने से शरीर चेतन हो जाता है। उसी तरह वह प्रकाश भी जीवित हो उठा।

प्रकाश में आने से पहले वे सत्य–पुरूष अगम थे, गुप्त थे जबकि प्रकाश में आकर ही वे सत्य–पुरुष कहलाए और वह अद्‌भुत प्रकाश, जो स्वयं सत्य–पुरूष ही थे, अमर–लोक कहलाया।

अभी भी सत्य–पुरूष अकेले ही थे। फिर उनकी मौज हुई और उन्होंने उस प्रकाश को अर्थात अपने ही स्वरूप को अपने में से छिटका दिया। अनन्त बिन्दुएँ हुईं, जो वापिस उस अद्‌भुत अनन्त प्रकाश में आयी। जिस प्रकार समुद्र में से पानी को मुट्ठी में या हाथों में भरकर उछालने से कई कण बिखर जाते हैं, उसी तरह उस प्रकाश में से भी अनेक कण बिखर गये। लेकिन जिस प्रकार समुद्र की बूँदें पुनः समुद्र में गिर, समुद्र का ही रूप हो जाती हैं, उसी तरह वे अनन्त कण भी वापिस उस अद्‌भुत प्रकाश में आए; लेकिन अचरज यह था कि वे बिन्दुएँ जब वापिस प्रकाश में आयीं तो वे प्रकाशमय नहीं हुईं, क्योंकि सत्य–पुरूष ने इच्छा की कि इनका अपना अलग अस्तित्व भी रह जाए। वे ही जीव (आत्माएं) कहलाये। वे सब जीव उसी अद्‌भुत प्रकाश में विचरण करने लगे।

आत्माओं का उस प्रकाश में अलग अस्तित्व के साथ विचरण करना बड़े अचरज की बात थी क्योंकि समुद्र की बूँदों का समुद्र में अपना अलग अस्तित्व नहीं होता। जिस तरह पानी में मछली घूमती रहती है, उसी तरह सब जीव उस प्रकाश में घूमने लगे। ये देख परम–पुरूष बड़े खुश हुए और उन आत्माओं से बहुत प्यार करने लगे। बहुत समय ऐसे व्यतीत हो गया और सभी जीव उस अद्‌भुत प्रकाश में विचरण करते हुए परम–आनन्द लूट रहे थे। 'सदा आनन्द होत है वा घर, कबहु न होत उदासा।'

वहाँ उस अमर–लोक में आत्मा का प्रकाश 16 सूर्य का है और परम–पुरूष के मात्र एक रोम का प्रकाश ही करोड़ों सूर्य तथा चन्द्रमा को लज्जा देने वाला है। अतः जब परम–पुरूष के एक रोम की ऐसी महिमा

है तो फिर वह परम-पुरूष स्वयं कैसा होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

फिर परम-पुरूष ने शब्दों से पुत्र उत्पन्न किये अर्थात जो बोलते जा रहे थे, वह पुत्र बन रहा था। जैसे ही परम-पुरूष ने इच्छा करके दूसरा शब्द पुकारा तो 'कूर्म' उत्पन्न हुआ। इसी तरह तीसरे शब्द से 'ज्ञान' और चौथे शब्द से 'विवेक' उत्पन्न हुआ।

परम-पुरूष ने सोचा कि मैं जो बोल रहा हूँ, वह सब पैदा हो रहा है, तो क्यों न एक अपने जैसा भी बना दूँ! अतः इस बार परम-पुरूष ने एक और परम-पुरूष बनाने की इच्छा से तीव्र आवाज़ में शब्द पुकारा। यह शब्द परम-पुरूष ने थोड़ी संशय में पुकारा। परम पुरुष यह देखने के लिए कि उनके द्वारा उत्पन्न पाँचवां शब्द पुत्र उनके जैसा ही है या नहीं, उस समय परम-पुरूष उस में समाए। परम-पुरूष को एक क्षण के लिए शंका आई कि यह तो मेरा शरीर नहीं है और अपने को वहाँ से खींचकर अपने शरीर में लाए। संशय से शब्द पुकारा तो निरंजन हुआ था। यह मन संशय से उत्पन्न हुआ।

निमक एक को संशय आई।।

यह एक निमक के लिए संशय आई।

फिर परम-पुरूष ने छठा शब्द पुकारा तो उससे 'सहज' की उत्पति हुई। सातवें शब्द से 'संतोष', आठवें से 'चेतना', नौवें से 'आनन्द', दसवें से 'क्षमा', ग्यारहवें से 'निष्काम', बारहवें से 'जलरंगी', तेहरवें से 'अचिन्त' चौदहवें से 'प्रेम', पन्द्रहवें से 'दीन-दयाल', तथा सोलहवें शब्द से 'धैर्य', उत्पन्न हुआ। उस अमर-लोक की शोभा को बढ़ाने के लिए ही परम-पुरुष ने इन शब्द पुत्रों को उत्पन्न किया। ये सभी उसी अमर-लोक में विचरण करने लगे।

ये सब परम-पुरूष के शब्द पुत्र थे, जिन्हें परम-पुरूष ने इच्छा से पैदा किया, लेकिन आत्मा इच्छा से नहीं बनी। आत्मा तो परम-पुरुष

का ही अंश है। इस तथ्य को कबीर साहिब ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है—

जीवरा अंश पुरूष का आही।
आदि अन्त कोउ जानत नाहीं॥

आत्मा परम पुरुष की शब्द पुत्र नहीं है। जैसे एक असली पुत्र है और एक अडाप्ट करते हैं। 16 पुत्र ऐसे हैं, पर आत्मा उसकी अंश है। अंश में अंशी के गुण होंगे। जब बच्चे में माता पिता के गुण आ रहे हैं तो आत्मा में भी आयेंगे। आप कोई मामूली नहीं हैं। आप बहुत बड़े शहनशाह के बच्चे हैं। एक आत्मा का नूर 16 सूर्य का है। आग जलाते हैं तो चिंगारी उठती है। अब चिंगारी और आग में थोड़ा अन्तर है। समुद्र और बूँद में थोड़ा अन्तर है। समुद्र में डूब जाते हैं, बूँद में नहीं। इस तरह एक आत्मा का प्रकाश 16 सूर्यों का है। साहिब ऐसे ही नहीं कह रहे-

सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल।।

...जो आपमें ज्ञान आता है, वो भी तरंगें आती हैं। वो सूक्ष्म रूप में आती हैं।

जीवों को उस अमर-लोक में विचरण करते हुए बहुत समय बीत गया। उसके पश्चात् पाँचवां पुत्र 'निरंजन' ध्यान करने लगा। उसने 70 युग तक एकाग्रचित होकर परम-पुरूष का ध्यान किया। परम-पुरुष सेवा से प्रसन्न हुए और पूछा कि इतना घोर तप क्यों कर रहे हो? निरंजन ने कहा कि मुझे भी कहीं थोड़ा सा स्थान दे दो। परम-पुरुष ने तब निरंजन को मानसरोवर स्थान दिया (मानसरोवर अमर-लोक का ही एक द्वीप है)। मानसरोवर पहुँच कर निरंजन बड़ा खुश हुआ और आन्नद से वहाँ रहने लगा। लेकिन कुछ ही समय बाद पुनः परम-पुरूष का ध्यान करने लगा। निरंजन ने पुनः 70 युग तक परम-पुरुष का ध्यान किया। परम-पुरूष ने सेवा से प्रसन्न होकर पूछा कि अब क्या चाहते हो?

निरंजन—

इतना ठांव न मोहि सुहाई।
अब मोहि बकसि देहहु ठकुराई॥
कै मोहि देहु लोक अधिकारा।
कै मोहि देहु देश इक न्यारा॥

निरंजन ने कहा — "मैं इतने से खुश नहीं हूँ। अब कृपा करके या तो इस अमर-लोक का राज्य ही मुझे दे दो या फिर एक अलग से न्यारा देश दो, जिस पर मेरा पूरा अधिकार हो, जहां मैं स्वतन्त्र रूप से बिना किसी रोक-टोक के अपना कार्य कर सकूँ।"

परम-पुरूष ने तब निरंजन से कहा कि तुम्हारे बड़े भाई कूर्म के पास पाँच तत्त्व का बीज (जो सूक्ष्म रूप में था) है। तुम उसके पास जाकर प्रार्थना करना और पाँच तत्त्व का बीज ले लेना। उससे तुम शून्य में तीन-लोक बनाना। जाओ! तुम्हें 17 चौकड़ी असंख्य युग का राज्य देता हूँ।

निरंजन कूर्म जी के पास पहुँचा, लेकिन कूर्म जी से प्रार्थना नहीं की, और बल से पाँच तत्त्व का बीज उसी प्रकार उनसे छीन लिया, जैसे किसी के शरीर से खून खींचकर निकालते हैं। कूर्म जी शांत थे, उन्होंने सोचा कि यह कौन शैतान यहाँ आ गया है! कूर्म जी ने तब परम-पुरूष से पुकार की, कहा—यह किस शैतान को यहाँ भेज दिया है! इसने तो मेरे साथ बल का प्रयोग करके पाँच तत्त्व का बीज छीना है। परम-पुरूष ने कूर्म जी से कहा कि तुम शांत रहो, यह तुम्हारा छोटा भाई है, इसे माफ कर दो। लेकिन परम-पुरूष ने सोचा कि यह कैसा निरंजन उत्पन्न हुआ है!

पाँच तत्त्व का बीज लेकर निरंजन ने उससे पाँच तत्त्व (जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश) बनाए। जिस तरह कुम्हार मिट्टी से तरह-2 की वस्तुएँ बनाता है, उसी तरह निरंजन ने भी इन पाँच तत्त्वों से 49 करोड़ योजन पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, तारे, सप्त-पाताल, सप्त-लोक, सब बना दिया। करोड़ों साल तक ऐसे रहा। यह कोई ऐसे ही नहीं है। नेचुरल नहीं है। तो वो ऐसे शून्य में कई दिन रहा, लेकिन जीव नहीं थे, इसलिए

यह निर्जीव सृष्टि थी। निरंजन ने सोचा कि यदि जीव ही नहीं है तो फिर सृष्टि का क्या लाभ! अतः उसने पुनः 64 युग तक परम-पुरुष का ध्यान किया। परम-पुरूष ने पूछा कि अब क्या चाहिए ?

निरंजन—

दीजै खेत बीज निज सारा।।

निरंजन ने कहा — ''मैंने तीन-लोक की रचना तो की है, लेकिन जीव ही नहीं हैं तो राज्य किस पर करूँ! इसलिए कृपा करके थोड़े से जीव मुझे भी दे दें, ताकि मैं उन पर राज्य कर सकूँ।''

परम-पुरुष ने तब इच्छा करके ऐसी कन्या (आद्य-शक्ति) की उत्पत्ति की, जिसकी आठ भुजाएँ थीं। आद्य-शक्ति ने परम-पुरुष को प्रणाम करते हुए पुछा कि उसे क्यों बनाया गया है? परम-पुरुष ने अनन्त आत्माएं देते हुए कहा कि हे पुत्री! मानसरोवर में निरंजन है, जिसने शून्य में तीन-लोक की रचना की है। तुम ये आत्माएं लेकर उसके पास जाओ और दोनों मिलकर शून्य में सत्य-सृष्टि करो (आत्माओं को योनियों में न लाकर अर्थात शरीरों में न डालकर सत्य-सृष्टि करने की आज्ञा दी, जैसी कि अमर-लोक की सृष्टि थी)।

परम पुरुष की आज्ञा से जब आद्या शक्ति मानसरोवर में निरंजन के पास आई तो निरंजन उसके सौंदर्य को देखकर मोहित हुआ।

आवत कामिनि देख्यो जबही। धर्मराय मन हरष्यो तबही।।
कला अनन्त अंत कछु नाहीं। काल मगन ह्वै निरखत ताही।।
निरखत धरम सु भयो अधीरा। अंग अंग सब निरख शरीरा।।
धर्मराय कन्या कह ग्रासा। काल स्वभाव सुनो धर्मदासा।।

जब निरंजन ने आद्य शक्ति को आते देखा तो बहुत खुश हुआ। आद्य-शक्ति अनन्त कला और सौंदर्य से परिपूर्ण थी, सो काल पुरुष उसे देख मग्न हो गया, कामुक हो गया। उसने शक्ति को एक हाथ से पाँव और एक हाथ से शीश की तरफ से पकड़ा और निगल गया। तब से

उसका नाम काल पुरुष अथवा काल निरंजन हुआ।

कीनो ग्रास काल अन्याई। तब कन्या चित विस्मय लाई।।
ततछन कन्या कीन्ह पुकारा। काल निरंजन कीन्ह अहारा।।

जैसे ही निरंजन ने उसे निगला, उसने परम पुरुष को पुकार की, कहा कि काल निरंजन ने मुझे खा लिया है।

तबही धर्म सहज लग आई। सहज शून्य तब लीन्ह छुड़ाई।।

फिर निरंजन सहज के पास गया और उसे भी वहाँ से भगा दिया, क्योंकि तप के कारण उसमें ताकत आ गयी थी।

पुरुष ध्यान कूर्म अनुसारा। मोसन काल कीन्ह अधिकारा।।
तीन शीश मम भच्छन कीन्हो। हो सत्यपुरुष दया भल चीन्हो।।
यही चरित्र पुरुष भल जानी। दीन्हो शाप सो कहों बखानी।।
लच्छ जीव नित ग्रासन करहू। सवा लच्छ नित प्रति बिस्तरहू।।

परम पुरुष को ध्यान आया कि इसने पहले भी कूर्म का पेट फाड़कर पाँच तत्व का बीज निकाला था और अब इसने आद्य-शक्ति को निगल लिया है। परम पुरुष को बुरा लगा, उन्होंने निरंजन को शाप दे दिया, कहा कि एक लाख जीवों को तू रोज़ निगलेगा तो भी तेरा पेट नहीं भरेगा और सवा लाख को उत्पन्न करेगा।

पुनि कीन्ह पुरुष तिवान, तिहि छन मेटि डारो काल हो।
कठिन काल कराल जीवन, बहुत करइ बिहाल हो।
यहि मेटत सबै मिटिहैं, बचन डोल अडोलसां।।

परम पुरुष ने विचार किया कि मैं काल पुरुष को मिटा देता हूँ, क्योंकि यह तो जीवों को बड़ा कष्ट देगा, पर फिर ध्यान आया कि मैंने तो इसे 17 असंख्य चौकड़ी युग का राज्य दिया है, यदि मिटा दिया तो एक तो मेरा शब्द कट जायेगा और फिर सभी 16 पुत्रों को एक नाल में पिरोया है, यदि एक को भी मिटाया तो सभी मिट जायेंगे।

डोलै वचन हमार, जो अब मेटा धरम को।
वचन करो प्रतिपाल, देश मोर अब ना लहैं ।।

उसे मिटाने से शब्द कट जाता था, इसलिए शाप दिया कि अब मेरे देश में नहीं आ सकेगा, मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा।

जोगजीत कहँ तबहि बुलावा। धर्म चरित सब कहि समुझाया।।
जोगजीत तुम बेगि सिधारो। धर्मराय को मारि निकारो।।
मानसरोवर रहन न पावै। अब यह देस काल नहिं आवै।।
धर्म के उदर माहिं है नारी। तासो कहो निज शब्द सम्हारी।।
उदर फारि के बाहर आवे। कूर्म उदर विदार फल पावै।।
धर्मराय सों कहो विलोई। वहै नारि अब तुम्हरी होई।।
जाकर रहो धर्म वहि देशा। स्वर्ग मृत्यु पाताल नरेशा।।

परम पुरुष ने योगजीत (कबीर साहिब) को बुलाया। वास्तव में परम पुरुष स्वयं ही योगजीत हुए। उन्होंने स्वयं को मथ ज्ञानी पुरुष कबीर साहिब को निकाला और कहा कि निरंजन को मानसरोवर से निकाल दो, अब वो मेरे देश में नहीं आयेगा। उसके पेट में आद्य-शक्ति है, उससे कहना कि मेरा ध्यान करके उसके पेट को फाड़ बाहर आ जाए ताकि निरंजन ने जो कूर्म का पेट फाड़ा था, उसे उसका फल मिल जाए और निरंजन से कहना कि वो स्त्री अब तुम्हारी हो गयी, तुमने जहाँ स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक और पाताल लोक की रचना की है, वहीं जाकर रहो, वहाँ के तुम राजा हो।

जोगजीत चल भे सिर नाई। मानसरोवर पहुँचे जाई।।
जोगजीत को देखा जबहीं। अति भो काल भयंकर तबहीं।।
पूछा काल कौन तुम आहू। कौन काज तुम यहाँ सिधाहू।।

परम पुरुष को प्रणाम कर योगजीत मानसरोवर में आए। जब निरंजन ने योगजीत को देखा तो बड़ा क्रोध किया, भयंकर हो गया,

पूछा—कौन हो और यहाँ क्यों आए हो?

जोगजीत अस कहे पुकारी। अहो धर्म तुम ग्रासेहु नारी।।
आज्ञा पुरुष दीन्ह यह मोही। इहिते बेगि निकारो तोही।।
जोगजीत कन्या को कहिया। नारि काहे उदर महँ रहिया।।
उदर फारि अब आवहु बाहर। पुरुष तेज सुमिरो तोहि ठाहर।।

योगजीत ने कहा कि तुमने आद्य-शक्ति को निगल लिया है, परम पुरुष की आज्ञा से मैं यहाँ आया हूँ, तुम्हें यहाँ से निकालना है। तब योगजीत ने कन्या से कहा कि इसके पेट में क्यों बैठी हो, परम पुरुष की सुरति करके इसका पेट फाड़कर बाहर आ जाओ।

सुनिके धर्म क्रोध उर जरेऊ। जोगजीत सो सन्मुख भिरेऊ।।
जोगजीत तब कीन्हे ध्याना। पुरुष प्रताप तेज उर आना।।
पुरुष आज्ञा भई तेहि काला। मारहु सुरति लिलार कराला।।
जोगजीत पुनि तैसो कीन्हा। जस आज्ञा पुरुष तेहि दीन्हा।।

यह सुन निरंजन क्रोधित होकर लड़ने के लिए योगजीत के सम्मुख आया। योगजीत ने तब परम-पुरुष का ध्यान करके उनके तेज को लिया और निरंजन पर सुरति फेंकी, जिससे वो बेहोश होकर गिर पड़ा।

गहि भुजा फटकार दीन्हों, परेउ लोक से न्यार हो।।

तब योगजीत ने उसकी भुजा पकड़कर उसे अमर लोक से नीचे शून्य में फेंक दिया।

तब उसके अन्दर से आद्या शक्ति भी बाहर आई। वो डरने लगी। पर निरंजन ने उसे अपने साथ मिला लिया और कहा कि आत्मा को यहीं पर रखना है, इसलिए इन्हें भ्रमित करना है।

मन अस्थिर है। इसका आनन्द शरीर का मज़ा है। यह शरीर है। इसलिए तंग कर रहा है। यह वजह है।

वो गुप्त भये पुनि संग सबके, मन निरंजन जानिये।।

उसने शून्य में वास किया हुआ है। शून्य में अँधकार है। चोर अँधकार से प्रेम करता है ताकि पहचाना न जा सके, कोई पकड़ न सके। प्रकाश में भागेगा तो पहचाना भी जायेगा और पकड़ा भी जा सकता है।

इसलिए मन की राजधानी सुषुम्ना के अन्दर है। यहीं बैठा काम कर रहा है। इसलिए अज्ञान ही संसार की आत्मा है।

मन ही स्वरूपी देव निरंजन, तोहि रहा भरमाई।
हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई।।

यदि अज्ञान न होता तो आत्मा गंदे शरीर को धारण नहीं करती। आत्मा तो निर्लेप है। जानने पर भी सभी गंदा जीवन जी रहे हैं। अब आत्मा कहाँ है? क्या कर रही है? आत्मा एक शुद्ध चेतना है, सुरति है। पर यह शरीर में उलझ गयी।

गिलास खाली है, पर उसमें शून्य है। घड़े में शून्य है कि नहीं। या खाली है। शून्य तो है न। लेकिन घड़ा तोड़ देते हैं तो शून्य कहाँ गयी? थी ही शून्य। घड़े के अन्दर अनुभव हो रही थी। जहाँ थी, वहीं थी। अन्दर भी थी, बाहर भी। इसी तरह आत्मा शरीर में है भी, नहीं भी है। वो हमेशा अपने बिंदू पर है। शरीर के कारण से अनुभव हो रही है कि शरीर के अन्दर है। पर वास्तव में शरीर के अन्दर भी नहीं है, बाहर भी नहीं है। सुरति के रूप में है। इसी सुरति को मन ने उलझाया हुआ है। इसे फ्री नहीं छोड़ता है। जैसे ही यह एकाग्र होगी तो अपने रूप के नज़दीक आ जायेगी, पर मन इसे शरीर में और शरीर के लिए हितकारी कार्यों में उलझाए हुए है। जैसे छोटा बच्चा तंग करता है तो माँ उसे कोई खिलौना देकर अपना काम करने लग जाती है। इसी तरह आत्मा को उलझा दिया गया है। यह शरीर में उलझ गया।

जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गयी। युद्धिपि मिथ्या छूटत कठिनई।।

मिथ्या है गाँठ, पर छूट नहीं रही है। क्योंकि आत्मा ने खुद यह

गठान बना ली है। आत्मा को कोई नहीं पकड़ सकता है। आत्मा ने ही अपने को बाँध रखा है। आत्मा की उर्जा से ही शरीर चल रहा है। यह शरीर को उर्जा दे रही है। हमारे शरीर की उर्जा स्वांसा है और स्वांस आत्मदेव ले रहा है। आप यही काम कर रहे हैं। यदि कुछ समय यह काम छोड़ दें तो मामला खत्म है।

आत्मा ने शरीर को अपना माना है। सुख दुख को अपना माना है। आत्मा ने ये अपनी चीजें मान लीं। आज्ञाचक्र के पीछे बैठकर यह स्वांसा ले रहा है। मन माया के कारण यह एक गहन निद्रा में है। इसे अपना होश नहीं है। गुरु आपको होश में ला देता है। यह काम केवल सद्‌गुरु कर सकता है। सद्‌गुरु एक चक्षु देता है, जो दुनिया में नहीं है। नाम दान देने के साथ आपको होश में कर देता है। यह होश क्या है?

आप जग गये। होश कैसा? होश लाजबाव। आप होश में हैं। चाहे नींद में हैं, तब भी होश में हैं। गुरु ने एक आँख दी। इस आँख के बिना कोई भी मन को नहीं देख सकता है। दुनिया में पढ़े लिखों का कुछ भी तो कंट्रोल में नहीं है। पर आपको सही गलत की समझ है। आप समझ रहे हैं। आपकी बुद्धि भी तीक्ष्ण हो गयी है। मूल रूप से ध्यान जग गया।



अकह नाम कैसे कै जानी।
लिखि नहिं जाय पढ़ो नाहिं वानी॥
कलियुग साधु कहै हम जाना।
झूठ शब्द मुख करहि बखाना॥

जीव के पक्के तत्व और कच्चे तत्व

**उतपति प्रलय की कथा अनन्ता। बहु विधि सत्य कबीर भनन्ता।।
उतपति प्रलय कोटिन बारा। स्वसमवेद निर्णय निरधारा।।
प्रथमै आदि में ऐसो कहेऊ। स्वतह स्वछंद जीव यक रहेऊ।।
रह स्वतंत्र आनन्द अकेला। नहिं तब गुरु नहीं तब चेला।।
पक्की तत्व को ताकी अंगा। अंग पिंड दोनों यक ढंगा।।
माया पुरुष सो जीव उपाना। सत्यस्वरूपी ताको बाना।।
अपनो रूप अनूप निहारी। अहमित भयौ जीव तिहि बारी।।
मोहित भा लखि रूप निकाई। ताहि मोह में गा गफिलाई।।
आपा भूलि रहा नहिं चेता। महागमन मन भो ता हेता।।
परमानन्द में गयो भुलाई। निजस्वरूप की सुधि बिसराई।।
तत्व प्रकृति पलटि गइ तबहीं। पक्की से कच्ची भई जबहीं।।
क्रम ही क्रम भै छीन शरीरा। धरि धरि देह पाव बहु पीरा।।
जब कच्चा भा पक्का सांचा। अंड पिंड दोनों भा कांचा।।
निज स्वरूप को ज्ञान न राखा। भई योनि चौरासी लाखा।।**

कह रहे हैं कि पहले जीव स्वछंद था, आनन्द में था। उसकी देही पक्के तत्व की थी। फिर माया और पुरुष (निरंजन) ने मिलकर कच्ची देही का निर्माण किया। उसे देख जीव मग्न हो गया और अपनी सुध भूल गया। तब पक्के तत्व की देही से कच्ची देही में आ गया और उस देही में बार बार आकर बहुत कष्ट भोगने लगा। अपने स्वरूप का ज्ञान भूल गया और चौरासी में घूमने लगा।

पक्के तत्व के नाम इस प्रकार हैं—

1. सत्य 2. विचार 3. शील 4. दया 5. धीरज

फिर इनसे तीन पक्के गुण हुए।

1. सत्य और विचार का गुण—विवेक
2. शील और दया का गुण—साधु भाव
3. धीरज का गुण—वैराग्य

इन पाँच पक्के तत्वों की 25 प्रकृतियाँ इस प्रकार से हैं—

1. सत्य की प्रकृति—निर्णय, निर्बेध, प्रकार, थीर, क्षमा
2. विचार की प्रकृति—अस्ति, नास्ति, यथार्थ, शुद्धभाव, सत्यता
3. शील की प्रकृति—क्षुधा निवारन, प्रिय वचन, शांति बुद्धि, प्रत्यक्ष पारख, सर्व सुख प्रकट
4. दया की प्रकृति—अद्रोह, मित्रजीव, सम, अभय, समदृष्टि
5. धीरज की प्रकृति—मिथ्या त्याग, सत्यग्रहण, निस्संदेह, हंतानासने, अचल

जब जीव पक्के तत्व की देही से कच्चे तत्व की देही में गया तो इन्हीं पाँच पक्के तत्वों से पाँच कच्चे तत्व बने।

1. धीरज से आकाश तत्व बना
2. दया से वायु तत्व बना
3. शील से तेज तत्व बना
4. विचार से जल तत्व बना
5. सत् तत्व से धरती बनी

फिर इन पाँच कच्चे तत्वों से तीन कच्चे गुण हुए।

1. धरती और जल से सतोगुण हुआ
2. अग्नि और वायु से रजोगुण हुआ
3. आकाश से तमोगुण हुआ

इस तरह ये देही विषय विकारों से युक्त हुई। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि हुए।



यह विधि सबै अलौकिक करनी

सात सुरति का सकल पसारा। सुरति से कुछ नाहिं न्यारा।।

सुरति आत्मा है। साहिब ने सुरति के अंग पर बहुत कुछ कहा। कभी-कभी साधक लोग ध्यान में बैठते हैं। वो यह सोचते है कि अभी कुछ रोशनी दिखेगी, अभी हम थोड़ा उड़ेंगे। ध्यान में बैठकर विचार करते हैं कि अभी हम थोड़ी अनुभूतियाँ करेंगे। मैं कहना चाहता हूँ कि जब भी ध्यान में बैठें, इसकी तरफ ध्यान न दें। ध्यान में बैठे समय आप क्या देखें? आप क्या करें? जब भी आप ध्यान में बैठते हैं, उस समय एक चीज देखना है कि सुरति के अन्दर बड़े रहस्य हैं। जैसे पंच भौतिक शरीर है। इस शरीर में हमारी कर्मेंद्रियाँ हैं, ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, हाड़, त्वचा, रोम आदि पच्चीस प्रकृतियाँ हैं, ऐसे ही हमारी सुरति में एक संसार है। साहिब ने इस सुरति के संसार पर बातचीत की है।

सुरति का खेल सारा है।।

हमारी सुरति के अन्दर आँखें भी हैं, हमारी सुरति के अन्दर पैर भी हैं, हमारी सुरति के हाथ भी हैं। जैसे शरीर में कर्मज्ञानेन्द्रियाँ हैं। यह शरीर पाँच कच्चे तत्वों से बना है—जल अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश। इसी तरह हमारा वो शरीर पंच पक्के तत्वों से बना है—ज्ञान, वैराग्य, धीरज, संतोष आदि। हमारी सुरति के अन्दर बड़ी चीजें हैं। इसमें हाथ, पाँव आदि सब हैं। पर हमारी सुरति के अन्दर जो हाथ हैं, वो ऐसे भौतिक

हाथ नहीं हैं। वो अनूठे हैं। हमारी सुरति के अन्दर जो आँखें हैं, वो ऐसी आँखें नहीं हैं। वो निराली हैं। हमारी सुरति के अन्दर जो पैर हैं, वो ऐसे पैर नहीं हैं। हमारी सुरति के भीतर ऐसा मुख भी नहीं है, जिसमें कि 32 दांत हैं, जो कभी भी गिर जाएँ। वो पक्के तत्व का है। इसका एक प्रमाण मिलता है।

शिवली को क्रूर शासक मौत की सजा दे रहे थे। राजा ने कहा कि काट दो इसकी टाँगें। शिवली ने कहा कि काट दो इन्हें। मेरे पास वो टाँगें हैं, जो परमात्मा तक पहुँच सकती हैं। फिर बादशाह ने कहा कि निकालो इसकी आँखें भी। शिवली ने कहा कि निकाल लो। मेरे पास वो आँखें हैं, जो आन्तरिक जगत और परमात्मा को देख सकती हैं। इन आँखों में तो यह क्षमता ही नहीं है। फिर राजा ने कहा कि काट दो इसके हाथ भी। शिवली ने कहा कि काट दो। मेरे पास वो हाथ हैं, जो परमात्मा के दरबार में पहुँच सकते हैं। फिर कहा कि निकालो इसकी जुबान। शिवली ने कहा कि थोड़ा रुको। उसने कहा कि हे प्रभु, मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि इस कठिन परीक्षा में पास हो पाऊँगा।

इससे सिद्ध हो रहा है कि इसके अन्दर कुछ दिव्य हाथ हैं, कुछ दिव्य आँखें हैं, कुछ दिव्य टाँगें हैं। गोस्वामी जी भी इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

पग बिनु चले सुने बिन काना, कर बिनु कर्म करे विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिन वाणी वक्ता बड़ योगी।
तन बिनु परस नैन बिनु दरसे, गहे ज्ञान सब शेख विशेखे।
यह विधि सबै अलौकिक करनी, महिमा जाय कवन विधि बरनी।।

वो देही आँखों के बिना देखती है, ऐसी भौतिक आँखें नहीं हैं। पग बिन चलना। पैरों के बिना चलना जानता है वो शरीर। नासिका के बिना सूँघ लेता है। सब कुछ अलौकिक है उसमें। इसकी पुष्टि वाणियों में आ रही है। गुरु नानक देव जी भी कह रहे हैं–

अक्खें बाजो पेखना, बिन कन्ने सुनना।
हत्थें बाजो करना, बिन पैरे चलना।
नानक हुकुम पछान के, यूँ जीवत मरना।।

भाई, आँखों के बिना देखना होता है, पैरों के बिना चलना होता है, हाथों के बिना क्रियाएँ करनी होती हैं। इस तरह सब अलौकिक करनी है। साहिब भी कह रहे हैं–

पैर बिन चल गया, शहर बेगमपुरा।।

बेगमपुरा यानी जहाँ कोई दुख नहीं।

तहाँ बैन बिन बोलना, नैन बिन बूझना।
आप का खेल कहो कौन जाने।।

वहाँ वाणी नहीं है, फिर भी बोलना होता है। आँखें नहीं हैं, फिर भी देखना होता है।

इससे प्रमाणित हो रहा है कि इसके अन्दर ऐसी ताकत है, एक ऐसा शरीर है, जो बड़ा अनूठा है, बड़ा लाजवाब है।



दशम द्वार से जीव जब जाई। स्वर्ग लोक में वासा पाई।।
11वें द्वार से जीव जब जाता। परम पुरुष के लोक समाता।।

दसवें द्वार से न्यारा द्वारा। ताका भेद कहूँ मैं सारा।।

नौ द्वारे संसार सब, दसवें योगी साध।
एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुजान।।

...... आठ अटाकी अटारी मज़ारा, देखा पुरुष न्यारा।
निराकार आकार न ज्योति, नहिं वहाँ वेद विचारा।

उसको काल क्या करे

जिस शातिर ताक़त ने जकड़ा है, वो ताक़त इसकी क्षमताएँ अनुभव नहीं होने दे रही है। वो ताकत क्या चाह रही है? उस शातिर ताकत की इच्छा है कि आत्मा कभी भी अपने को नहीं समझ सके। किसी भी तरह आत्मा अपने को समझ गयी तो उस शातिर ताकत का पॉवर नहीं चलेगा। वो एक ही बात चाहती है कि आत्मा शरीर बनकर घूमे, जीव बनकर रहे। आत्मा अपने को हाड़, माँस का पुतला ही समझती रहे। वो यही समझती रहे कि मैं अन्तःकरण हूँ, मैं व्यक्ति हूँ, मैं व्यक्तित्व हूँ। वो शक्ति हमेशा मुस्तैद है। वो हमेशा सतर्क है। वो ताकत हमेशा सावधान है। कभी भी किसी भी तरीके से आत्मा अपने निज रूप को नहीं जान सके, यही वो चाहती है।

एक महात्मा थे। वो दार्शनिक थे। अच्छे महात्मा थे। उन्होंने एक बार घोषणा की, कहा कि जो भी तलवार चलाना सीखना चाहता है, वो आ जाए, हम सिखा देंगे। कई पहुँचे। महात्मा ने इंट्रव्यूह लिया। 2-3 आदमियों को चुना। फिर 4-5 दिन बाद एक को रखा, कहा कि तुम्हें सिखाऊँगा। उसे कहा कि थोड़े दिन रुको, बाद में ट्रेनिंग शुरू करेंगे। लड़के ने कहा कि ठीक है। एक दिन वो सेवा कर रहा था। अचानक महात्मा ने किसी चीज से वार किया। वो चौक गया। जब पलटा तो देखा कि महात्मा थे। महात्मा ने लकड़ी की तलवार से उसपर वार किया था। महात्मा ने कहा कि आज से तुम्हारी ट्रेनिंग शुरू है। तुम सावधान रहना। किसी भी समय तुम पर तलवार से वार हो सकता है। लड़का सतर्क रहने लगा। वो बड़ा सावधान रहने लगा। एक-दो बार महात्मा ने तलवार से वार किया, पर वो बचा लिया। कुछ दिन बाद महात्मा ने लड़के से कहा

कि देखो, अभी तक तो मैं अचानक लकड़ी की तलवार से वार कर रहा था, पर अब सही की तलवार से वार करूँगा। लड़का और चेतन हो गया। वो महात्मा वार भी बड़े ज़ोर से करता था। एक-दो बार महात्मा ने असली तलवार से वार किया, पर लड़का वो भी बचा गया। महात्मा ने कुछ दिन बाद कहा कि अभी तो मैं तुमपर जागते हुए वार कर रहा था, पर अब सोते हुए भी वार कर सकता हूँ। तुम सावधान रहना। लड़के ने सोचा कि जागने की बात तो अलग थी, पर सोते हुए भी वार करेंगे। लड़का बहुत सतर्क हुआ। अचानक एक दिन महात्मा ने सोते हुए उसपर वार किया, पर लड़का उछलकर अपने को बचा लिया।

अब सवाल उठा कि कैसे? आप देखते हैं कि ड्राइवर लोग गाड़ी चलाते हैं। वो गाड़ी चलाते हुए सोते हैं। गाड़ी चलाना सावधानी का काम है। ड्राइवर दूर तक देखता है कि रास्ता साफ है तो झपकी ले लेता है, पर कभी यह झपकी लंबी हो जाती है। यानी यह सोना जानबूझकर होता है।

एक समय मेरे पास कोई ड्राइवर नहीं था। 6 महीने मैंने खुद गाड़ी चलाई। एक दिन मैं बाड़ी ब्राह्मणा से राया मोड़ तक सोते हुए आया। राया मोड़ पहुँचा तो इशारा हुआ कि यहाँ मुड़ना है। अन्दर पहुँचा तो इशारा हुआ कि गाड़ी चलाते हुए सोना नहीं है।

मैं अपने इस शरीर से बेहद काम लेता हूँ। इसकी क्षमता से कहीं बहुत अधिक काम ले लेता हूँ। कभी मेरी कमर कहती है कि थोड़ा आराम करना है। मैं कहता हूँ कि नहीं, सीधा रह। कभी आँखें कहती हैं कि आराम करना है। मैं यह मानता हूँ कि मेरा मन मेरा सबसे बड़ा सेवक है। इसे मैं जहाँ चाहे नचाता हूँ। जो कहता हूँ, वही करता है।

...तो मन हमेशा चाहता है कि आत्मा किसी भी तरह से अपनी अनुभूति न कर पाए। कहीं से भी अपने जलवे को न समझ सके। वो आत्मा को वजूद समझने नहीं देना चाहता है। क्यों? क्योंकि अगर समझ जायेगी तो मन का पूरा खेल खत्म हो जायेगा।

वशिष्ठ मुनि ने राम जी से कहा कि आत्मा को जानने के बाद जीव संसार सागर से पार हो जाता है। राम जी ने प्रश्न किया, कहा कि

आखिर आत्मा का ऐसा क्या स्वरूप है कि उसे जानने के बाद संसार सागर से पार हो जाता है। वशिष्ठ जी ने कहा कि आत्मा को जानने के बाद संसार की हकीकत समझ में आ जाती है। तब समझ आ जाता है कि कोई भी वस्तु मुझ तक नहीं पहुँच सकती है। तब पता चल जाता है कि कोई भी वस्तु मेरे किसी काम की नहीं है। जैसे अज्ञानवश रस्सी को साँप समझने का भ्रम पता चल जाने पर समाप्त हो जाता है। तब चाहकर भी उस रस्सी से डर नहीं लगता। इसी तरह आत्मा को जानने के बाद संसार का भ्रम समाप्त हो जाता है। तब चाहकर भी यह संसार सच नहीं लगता है।

इस तरह मन को खतरा है कि अगर जान गयी तो उसका जोर नहीं चलेगा। मन सावधान है।

एक जर्मन का आदमी है। वो 36 साल नहीं सोया। उसके 16 बच्चे हैं। जब उससे पूछा गया तो उसने बताया कि वो फौज में है। एक बार उन्होंने कुछ उग्रवादियों को पकड़ा। जंगल से उन्हें पकड़कर लाया जा रहा था। रास्ते में ही उन्हें दूसरी जगह कूच करने का हुकुम आ गया। ऐसे में उसे उन उग्रवादियों की निगरानी रखने के लिए छोड़ दिया गया और बाकी सभी चले गये। अब वो उग्रवादी ख़तरनाक थे। उसने सोचा कि यदि सो गया तो ये मुझे भी मार डालेंगे। वो चेतन हो गया। बाकी सैनिक 3 दिन तक नहीं लौटे। ऐसे में वो 3 दिन और 3 रात सो नहीं सका। उसने कहा कि इस घटना से उसकी नींद की कोशिकाएँ ख़राब हो गयीं और फिर कभी उसके बाद उसे नींद नहीं आई।

इस तरह हमेशा चेतन रहोगे तो मन कुछ नहीं कर पायेगा। क्योंकि मन की एक रीति है कि कुछ-न-कुछ करता ही रहेगा, कहीं-न-कहीं लगेगा ही। 24 घंटे वो आपको भ्रमित करने के नये-नये उपाय खोजता फिरेगा। इसलिए आपको भी 24 घंटे सावधान रहना होगा, तभी आप मन की चालों से बच पायेंगे।

उसको काल क्या करे, जो आठ पहर हुशियार।।



70 प्रलय मारग माहीं

अध्यात्म यात्रा एक अहम मुद्‌दा है। यह बड़ा आवश्यक भी है, क्योंकि आज दुनिया में नाना मत-मतान्तर प्रचलित हैं। अध्यात्म विषय पर चर्चाएँ-परिचर्चाएँ बड़ी जमकर हो रही हैं। रूहानियत पर बात चल रही है। पर शुद्ध अध्यात्म क्या है, इसपर कम बाचचीत होती है। मुझे अफसोस है कि भक्ति क्षेत्र गलत दिशा की तरफ चल रहा है। कहीं योग के शिविर लगते हैं तो लोगों से पैसे लिए जाते हैं। महापुरुषों में तो परमार्थ की भावना होती है कि लोगों का कल्याण करें। भक्ति क्षेत्र दूषित हो रहा है। शुद्ध अध्यात्म क्या है। भौतिकता से हटकर जो विषय है, वो है। आत्मा का स्वरूप कैसा है; मन, बुद्धि आदि कैसे क्रियान्वित हो रहे हैं, कौन ताकत शरीर को संचालित कर रही है। यह अध्यात्म है। कोई किस्से, कहानियाँ अध्यात्म नहीं है। आज तो यह कथा-कहानियों तक ही सीमित रह गया है। हम अध्यात्म जगत में कैसे जा सकते हैं? आखिर कोई शुभ कर्म कर रहा है तो स्वर्ग में कैसे जायेगा, कौन ले जायेगा? मैं कइयों से पूछता हूँ, पर इन सवालों का कोई माकूल जवाब नहीं मिल पाता है। आइये देखते हैं कि आखिर हम अध्यात्म यात्रा कैसे करते हैं। आत्मा क्या है? शरीर कैसे संचालित हो रहा है। यह साधारण नहीं है। हमारी आत्मा कैसे विभिन्न लोकों की यात्रा करती है? क्या इसके प्रमाण दिये जा सकते हैं? हाँ। गाड़ियों में गेयर हैं। पहले स्टार्ट करने पर पहला गेयर लगाते हैं, फिर चढ़ाई चढ़नी है तो दूसरा गेयर लगाते हैं। स्पीड तेज करनी है तो चौथे गेयर में पहुँच जाते हैं। हमारे शरीर में भी बड़े साधन हैं। ऐसे ही सुर दुर्लभ नहीं कह दिया।

सुर दुर्लभ मानव तन पाया। श्रुति पुराण सद्ग्रंथन गाया।।

मुसलमानों के धर्म ग्रंथ भी कहते हैं कि खुदा ने इंसान को अपनी शक्ल का बनाया। यानी कुछ सिस्टम है इसमें। देखते हैं कि कितने शरीर हैं, कितनी अवस्थाएँ हैं।

जिस शरीर में बैठे हैं, इसका काम जाग्रत में है। स्वप्न में यह शरीर क्रियान्वित नहीं होता। सोया आदमी मृतक के समान होता है। उस अवस्था में हम खाब देखते हैं। सोया आदमी आँखों से देख नहीं पाता है। वो कानों से सुन भी नहीं पाता है, नासिका से सूँघ भी नहीं पाता है। चेतन अवस्था में आ जाते हैं तो इस स्थूल शरीर से काम करते हैं। तब 14 इंद्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं। इनका संचालन जाग्रत अवस्था करती है। इसमें ध्यान का मुख्य केंद्र आँखों में होता है। उसमें स्थूल जगत को देख सकते हैं। हम इस अवस्था में भौतिक जगत को देखते हैं। पर नीदं में आँखें कुछ भी देखने में सक्षम नहीं होती हैं। सोए हुए आदमी की आँख पर एक पर्दा पड़ जाता है। हरेक इन अवस्थाओं में घूम रहा है। इनसे हम दिव्य अनुभूतियाँ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इनसे हम भौतिक चीजों को देख सकते हैं। स्वप्न में हमें एक शरीर और मिल जाता है, जिससे हम बहुत काम करते हैं। वो हमीं होते हैं। नींद में सूक्ष्म शरीर मिलता है। आदमी एक तिहाई हिस्सा सोकर गँवाता है। तब ये इंद्रियाँ काम नहीं करती हैं। स्वप्न में उड़ता भी है, कई जगहों पर पहुँच जाता है। एक लिंग शरीर, जो अँगूठे जितना होता है, उससे होता है। इंसान इससे वाकिफ नहीं है। जैसे कोई नशे में पहुँच जाता है, तो भी काम करता है, पर उतना नहीं कर पाता है, जितना कि नशा उतरने पर कर सकता है। तब चल भी ठीक से नहीं पाता है। इस तरह स्वप्न वाले शरीर में क्षमता कम है। 16 गुणा कम चेतना हो जाती है। काम तो करता है, पर उतना नहीं कर पाता है। कभी आप देखते हैं कि आप भागना चाहते हैं, पर ठीक से भाग नहीं पाते हैं।

जब आप सोते हैं तो कुछ प्लान करते हैं। रात्रि में स्वप्न अवस्था

में चले जाते हैं। सुबह उठकर वहीं से सिलसिला शुरू करते हैं, जहाँ से पहले दिन छोड़ा था। वो सिलसिला शुरू हो जाता है। रात्रि में जाग्रत से बाहर निकले। सुबह उठे तो वापिस जाग्रत में आए और फिर स्थूल इंद्रियों के माध्यम से वही कड़ी जोड़कर जीवन शुरू कर दिया। यह सूक्ष्म सिलसिला है, पर आप व्यापक रूप से नहीं जान पा रहे हैं कि अंगुष्ठ शरीर में प्रविष्ट हुए तो कैसे हुए। कैसे बाहर आए। कैसे यह चक्र चला। कुछ ने साधना की और निद्रा को जीत लिया। कुछ दीर्घ जाग्रत में पहुँच जाते हैं। वो इन्हें समझते हैं। वो देखते हैं कि किस तरह से अन्यंत सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और कैसे वापिस आते हैं। कैसे चक्र घूमता है और हम इसमें से निकल जाते हैं। दूसरे सिस्टम में प्रवेश कर लेते हैं। वहाँ भी दौड़ रहे हैं, काम भी कर रहे हैं, लेकिन उसकी क्षमताएँ अलग हैं। उस समय स्थूल शरीर निष्क्रिय होता है। कभी कोई डरावनी चीजें आती हैं, हम भय खा जाते हैं। कभी तर्क-वितर्क भी हो जाता है। बाकी सभी जीवन की प्रक्रियाएँ होती हैं, पर कम हो जाती हैं। कभी किसी समस्या का हल ढूँढ़ते हैं, कभी प्यास भी लगती है। यानी जाग्रत अवस्था से कुछ मिलती जुलती चीजें होती हैं। फिर जाग जाते हैं। क्यों जाग जाते हैं। जब रात को स्वप्न दिखाने वाली कोशिकाएँ थककर सो जाती हैं तो हम जाग जाते हैं। दिन में काम करने के बाद रात्रि आते-आते स्थूल वाली कोशिकाएँ थक जाती हैं तो वो सक्रिय हो जाती हैं और हम निद्रा में पहुँच जाते हैं। यानी एक समय पर हम दो अवस्थाओं में नहीं रह सकते हैं। एक समय में एक ही अवस्था को अनुभव कर सकते हैं। इन दोनों का समावेशन नहीं कर सकते हैं। इन दोनों का समावेशन करना ही निद्रा को जीतना है।

निःसंदेह हम स्वप्न देखते हैं। कभी अनूठे स्थानों में पहुँच जाते हैं कि जिनकी कल्पना भी नहीं की होती है। कभी उड़ने लग जाते हैं। कभी लगता है कि यही सच्ची अवस्था है। काफी एकाग्र भी हो जाती है।

तब लगता है कि हम यथार्थ अवस्था में जी रहे हैं। वो कोशिकाएँ जताती हैं कि यही सही अवस्था है। केवल मनुष्य ही इन सबमें जा सकता है।

फिर तीसरी आ जाती है—सुषुप्ति। यह घोर अज्ञान की अवस्था है। इसमें ध्यान का वास नाभि में हो जाता है, चेतना कुंद हो जाती है। हम स्वप्न और जाग्रत दोनों से बाहर निकल जाते हैं। कोई खाब नहीं आता है। रात कैसे गुजर गयी, पता भी नहीं चलता है। उठकर हम हैरान होते हैं कि कहाँ पर हैं। फिर धीरे धीरे पहचानने लग जाते हैं कि फलानी जगह पर हूँ। कुछ मेरुदण्ड के माध्यम से सुषुप्ति अवस्था में पहुँच जाते हैं। इसमें स्थूल इंद्रियों से बहुत दूर निकल जाते हैं। जीवन में कई बार हमारे साथ ऐसा होता है। आप सुमिरन करने का प्रयास करते हैं कि कहाँ पर हूँ। ये अवस्थाएँ मायाबी हैं। ये तीनों भ्रमांक अवस्थाएँ कहलाती हैं। हम इन्हीं में घूमते रहते हैं।

योंं सपना पेखना, जग रचना तिम जान।
इसमें कछु साँचो नहीं, नानक साँची मान।।

इनमें हम स्वाभाविक आते-जाते रहते हैं। इनमें भी मन सक्रिय होता है, याददाश्त सक्रिय होती है। भाई मिल जाए तो कहते भी हैं कि भाई मिला था स्वप्न में। यानी याददाश्त काम कर रही थी। सुषुप्ति में अनूठी स्थिति में पहुँच जाता है। यह मृत्यु और मूर्छा के तुल्य हो जाता है। हम कहते भी हैं कि घोड़े बेचकर सो रहा है। इन तीनों में स्थूल अंग थोड़े-2, कुछ-न-कुछ काम करते हैं। चौथी अवस्था है—तुरीया। यह कैसी है ? इसमें आदमी का ध्यान सुषुम्ना में पहुँच जाता है। इसमें खुद-ब-खुद नहीं पहुँचेगा। इसमें पूरे शरीर की चेतना को समेटना होता है। योगी यही करते हैं। वो षट्चक्र का बेधन करते हैं। शरीर में स्थित वायुओं को एक दूसरे में लय करते जाते हैं और आज्ञाचक्र में पहुँच जाते हैं। यहाँ पर स्थूल शरीर भी काम नहीं करता है। उसमें एक हजार गुणा ताकत आ जाती है। त्रिकाल की जानकारी भी आ जाती है। यहाँ योगी

को जो शरीर प्राप्त होता है, उसे कहते हैं—महाकारण शरीर।

कारण शरीर तो एकाग्रता का है। यह अत्यंत सूक्ष्म अवस्था है। तभी आप कहीं खो जाते हैं तो कोई कहता है कि कहाँ पर हो। आप जहाँ का ध्यान कर रहे होते हैं, वहीं पहुँचे होते हैं। आप चौक जाते हैं। यह कारण शरीर है। कभी किसी का ध्यान आता है, आप कहते हैं कि फलाने का ध्यान आ रहा है। कुछ देर में वो आपके पास आ पहुँचता है। आप कहते हैं कि अभी तो इसका ध्यान आ रहा था। वास्तव में वो कारण शरीर से आपके पास चक्कर लगाकर गया था, तभी आपको लगा था कि उसका ध्यान आ रहा है।

तुरीया में महाकारण शरीर की प्राप्ति होती है। वो निराला शरीर होता है। इसे दिव्य दृष्टि का खुलना भी कहते हैं। इसमें साधक बहुत दूर तक देख लेता है। भूत, भविष्य की जानकारी भी प्राप्त कर लेता है। यह काम योग से होता है। वो बड़ी अजीब अवस्था को प्राप्त होता है। जैसे अँधकार वाले कमरे में रह रहे हैं और फिर 1000 वॉट का बल्व लग जाता है। जल भी तो दो गैसों का ही मिश्रण है। वैज्ञानिक दो गैसों के मिश्रण से अग्नि का सृजन भी कर देते हैं। ऐसे ही होता है। योगी षट्चक्र का भेदन कर सुषुम्ना में आ जाता है। उसमें इतना ज्ञान आ जाता है कि बाकी को मूर्ख ही समझता है। इस तरह योगी चेतन वाले शरीर से कहीं ऊपर उठ जाता है। उसमें एक हजार गुणा अधिक चेतना आ जाती है। वो अवस्था इंद्रियातीत होती है। उसमें इनका अधिक रोल नहीं होता है। इसका सूत्र है कि वायुओं का निग्रह करके एक दूसरे में लय कर लेते हैं, भस्म कर देते हैं। फिर सिद्धियाँ भी आ जाती हैं। कभी आप कहते भी हैं कि हमारा फलाना काम कर दो। इसी कारण से योगियों में अहंकार भी आ जाता है।

फिर तुरीयातीत अवस्था है। इसमें ज्ञान देही की प्राप्ति हो जाती है। मन, बुद्धि आदि का निग्रह हो जाता है। साधक चिंताओं से मुक्त हो

जाता है। यदि कोई हादसा हुआ है तो नींद में भी याद रहता है। वहाँ भी आप परेशान होते हैं। पर इस अवस्था में आप चिंतामुक्त हो जाते हैं। वो आन्तरिक जगत को देखने में सक्षम हो जाता है।

तुरीयातीत ताहिं के पारा। विनती करै तहँ दास तुम्हारा।।

उसे विज्ञान देही कहते हैं। इसमें मन अत्यंत सूक्ष्म होता है। लेकिन होता है। महायोगेश्वर लोग इसमें पहुँचते हैं। यह ऐसा होता है कि यहाँ देखा, वहीं पहुँच जाते हैं। आप मन, बुद्धि से बाहर निकल जाते हैं। मुहम्मद साहब ने 7 आकाशों का सफर किया था। पानी का लोटा ठोकर लगने से हिला। इतनी देर में वो सफर करके आए और उस लोटे को गिरने से रोक लिया। यह शरीर आँखों के बिना देखता है, कानों के बिना सुनता है, नासिका के बिना सूँघता है, बिना हाथों के कार्य करता है। इसमें ऑटोमेटिक एक निराला शरीर मिल जाता है।

पक्षी पिंजड़े में था। उसमें उड़ने की क्षमता थी, पर पिंजड़े के आयतन के अनुसार ही उड़ान भर सकता था। आत्मा मन के अन्दर समायी है तो क्षमता सीमित हो जाती है।

शेर 27 फीट छलाँग लगा सकता है, लेकिन पिंजड़े में बंद है तो जितना आयतन है उतनी ही छलाँग लगा सकता है जितना उसका आयतन है। ऐसे ही आत्मा शरीर रूपी पिंजड़े में बंद है। इसलिए इसकी क्षमता कम हो गयी है।

...तो इस साधना से वो दीर्घायु हो जाते हैं। पवनों का पूरी तरह से नियंत्रण हो जाता है। एक होल्ड अवस्था हो जाती है। जितना चाहें, जी सकते हैं। इच्छा मृत्यु हो जाती है। शिवजी महाराज चार युग की समाधि लगा लेते हैं, होल्ड में कर लेते हैं। आप सुनते हैं कि फलाना महात्मा इतना समय जिया। कैसे? आप बैटरी चला रहे हैं। यदि जरूरत के अनुसार चला रहे हैं, कम चला रहे हैं तो देर तक सेल चल जायेंगे। यदि ज्यादा चला रहे हैं तो जल्दी खत्म हो जायेंगे। इस तरह वो अधिक

समय उस अवस्था में गुजारते हैं और दीर्घायु हो जाते हैं।

हम किसी बात को कैसे समझ रहे हैं? समय का दुनिया में पैमाना है। किसी ने कुछ बात कही तो हम कैसे समझते हैं। हमारे कान उन शब्दों को लेते हैं और याद की कोशिकाएँ कहती हैं कि यह शब्द कहा। हम समझ रहे हैं तो इसके पीछे भी आत्मतत्व था। आँखों से देख रहे हैं, उसमें भी आत्मा थी। मखौटा डालते हैं तो पीछे कोई और होता है। पर यहाँ आत्मा पूरी क्षमता से काम नहीं कर पा रही है। केवल शरीर के माध्यम से काम कर रही है।

हमारे अन्दर सेहत है। बुखार आ गया तो शरीर का ताप बढ़ जाता है, स्वाद भी खराब हो गया। सेहत नहीं दिख रही है अब। अब बुखार ही दिख रहा है। पेट का सिस्टम भी प्रभावित हुआ, भूख भी नहीं लग रही है। सेहत तो ताप के बाद भी छिपी है, पर बुखार सवार हुआ। अब आत्मा पर मन सवार है। अब मन ही दिख रहा है। 4-6 दिन बुखार हुआ तो सेहत को तरसता है। वो सेहत की तलाश करता है। पर सेहत ठीक नहीं है तो मजा पता नहीं चल रहा है। इस तरह मन रूपी बुखार चढ़ा है आत्मा पर, वहाँ उतर जाता है।

हमारी आत्मा पैरों के बिना चलने में सक्षम है। यहाँ शरीर के माध्यम से चल रही है। इसलिए क्षमता कम है। उसमें यूँ होता है कि विदेह हो जाता है। वहाँ दिखने लगता है कि यह रहस्य है। अब वहाँ जाएँ कैसे? आगे कह रहे हैं—

अक्खें बाजों पेखना, बिन कन्ने सुनना।
हत्थे बाजों करना, बिन पैरें चलना।
नानक हुकुम पछान के, यूँ जीवत मरना।।

इसी को गीता में कहा—हे अर्जुन, इस आत्मा की आँखें नहीं हैं, पर फिर भी सभी दिशाओं से देखने में सक्षम है।

कमरे में रोशनी है तो बाहर सुराख से आती है। खिड़की खुली

है तो वहाँ से आ जाती है। जितना क्षेत्रफल है, उतनी ही आती है। इस पिंजड़े में आत्मा बंद है। इसलिए इसकी क्षमताएँ माकूल नज़र नहीं आ रही हैं। भौतिक शरीर के दायरे में बंद होकर खुली उड़ान नहीं भर सकते हैं। इन टाँगों को वो ही चला रही है। पर माध्यम ये ही हैं अभी।

तो हे अर्जुन, इस आत्मा के पैर नहीं हैं, तब भी सभी दिशाओं से चल सकती है। हे अर्जुन, इसका मुँह नहीं है, तो भी सभी दिशाओं से बोल सकती है। पर वो वाणी अजीब होती है।

एक हंस के मन जो आई। दूसर हंस समझ पुनि जाई।।

हम यहाँ पर भी यह काम कर रहे हैं। पहले भाव बनता है, फिर स्थूल इंद्रियों के माध्यम से बाहर रखते हैं। सीधी सी बात यह थी कि माया ने ऐसे सिस्टम में उलझाया कि हमारी क्षमता कम हो गयी। हम इसी माध्यम को अपना स्वरूप मान बैठे।

आपने हाथ उठाया तो ऐसा नहीं उठा। जरूर अन्दर कोई हाथ था, जो उठा। जब शिवली को बादशाह ने सजा दी तो कहा कि इसकी आँखें निकाल लो। शिवली ने कहा कि निकाल लो, मुझे इनकी जरूरत नहीं है। मेरे पास वो आँखें हैं, जो खुदा को देख सकती हैं। फिर बादशाह ने हुकुम दिया कि काटो इसके हाथ। शिवली ने कहा कि काट दो, मुझे इन हाथों की भी जरूरत नहीं है। मेरे पास वो हाथ हैं, जो खुदा की बंदगी कर सकते हैं। फिर हुकुम दिया कि काटो इसकी जुबान। शिवली ने कहा कि रुको। उसने खुदा को शुक्रिया किया कि उसने उसे इस परीक्षा में विचलित नहीं होने दिया। फिर कहा कि काटो इस जुबान को भी। मेरे पास वो जुबान है, जो खुदा से बात कर सकती है।

तो ये सब है। हमने अपनी पूरी ताकत स्थूल में लगाई है। साहिब कह रहे हैं कि इस ताक़त को समेट लो यानी पूरी ताकत को निकालकर एकाग्र कर। जब निकालकर एकाग्र कर लेंगे तो पता चल जायेगा कि असली ताकत क्या है। मखौटा उतार दो तो पता चल जायेगा कि क्या है।

...तो इन छः शरीरों के बाद साहिब कह रहे हैं—

इसके आगे भेद हमारा, जानेगा कोई जाननहारा।
कहैं कबीर जानेगा वोही, जापर कृपा सतगुरु की होई।।

आख़िर हम इनकी अनुभूति कैसे करें? अब तमाम मत-मतान्तर हैं। कुछ अमर लोक की बात भी बोल रहे हैं। पर हम इन शरीरों के माध्यम से अमर लोक नहीं जा सकेंगे। ये सब देहियाँ भी विनाश के अन्दर ही आती हैं। कालांतर में सब यहीं तक पहुँचे। अध्यात्म सफर तीन तरह से होता है—मीन, पपील और विहंगम। मीन मछली को कहते हैं। पपील चींटी को कहते हैं और विहंग पक्षी को कहते हैं। चींटी अत्यंत धीरे-धीरे चलती है। मीन भी चलती है। जो मीन मार्ग वाले हैं, वो अधिकतर बंकनाल में समाविष्ट होते हैं। पपीप वाले आज्ञाचक्र में एकाग्र होते हैं। विहंगम में दो चीजें होती हैं। एक ताकत खुद ही शरीर से उठाकर चलती है। साहिब कह रहे हैं—

70 प्रलय मारग माहीं, कैसे जीव लहे दीदारा।।

इसलिए-

बिन सतगुरु पावे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय।।

इन छः शरीरों तक आदमी की अपनी पहुँच है। महाकारण तो योगी लोग प्राप्त कर लेते हैं और नाना लोक-लोकान्तरों को देख लेते हैं। वो देख भर लेते हैं। लेकिन अन्तवाहक से, मीन माध्यम से अन्दर जगत में जाते हैं। यह ठीक वैसे ही होता है जैसे छोटे बच्चे माचिस की डिब्बी को धागे से बाँधते थे और दूर खड़े होकर हेलो कहते थे। वो धागे पर आवाज चलती हुई दूसरी और पहुँचती थी। मीन वाले धुनों में ध्यान एकाग्र करते हैं। 70 किस्म की धुनें हो रही हैं। सितार, हारमोनियम, बाँसुरी आदि बज रहे हैं। कभी कोई म्यूज़िक बजता है तो बाँसुरी को सुनने का शौक रखने वाला उसी में एकाग्र होता है। हारमोनियम में रुचि रखने वाला उसी तरफ एकाग्र होता है। बीच में वाणी भी बज रही है।

उसे बाकी संगीत भी सुनाई दे रहे हैं, पर वो उसी एक में एकाग्र होता है। कई आदमी बोल रहे हैं, पर किसी एक पर एकाग्र हो जायेंगे तो उसी की बात आपको समझ आयेगी। इस तरह जिस भी धुन पर एकाग्र हो जायेंगे वही सुनाई देगी।

पहले झिलमिल झिलमिल बाजे, पाछे न्यारी न्यारी रे।।

जिस भी धुन पर एकाग्रता जम गयी, उसी तरफ चलेंगे। रेलगाड़ी की आवाज पर चलेंगे तो स्वर्ग लोक में चले जायेंगे। संख की आवाज पर ब्रह्मादि लोकों में पहुँच जायेंगे। बाँसुरी की तान पर एकाग्र होने पर सोहंग आदि देशों में पहुँचेंगे। आप देखें कि मछली पानी की धारा में ऊपर की ओर भी चली जाती है। ऊपर से पानी गिर रहा हो तो वो उस धारा पर ऊपर चढ़ जायेगी। इस तरह से होता है।

पर संतों ने अलग चीज बोली। इन धुनों से भी ब्रह्माण्ड के बाहर नहीं निकल सकोगे। कहीं प्रकाश दिखा, वहाँ भी माया है। निरंजन में खुद 4 करोड़ सूर्य का प्रकाश है।

मैंने बहुतों से पूछा कि विहंगम क्या होता है। किसी को पता नहीं होता है। साधक को खुद सद्गुरु अमर लोक की तरफ लेकर चलता है। सवाल उठा कि गुरु यह काम कैसे करता है।

सुरति कमल सद्गुरु को वासा।।

योगी छठे चक्र तक जाते हैं और योगेश्वर सप्तम चक्र तकक। संतों ने आठवें चक्र की बात की है। भाई, आप मद्रास जा रहे हैं यहाँ से। जिस ट्रेन में बैठे हैं, वो वहाँ से संबंधित है। उसी से मद्रास पहुँच जायेंगे। इस तरह अष्टम चक्र में सद्गुरु रहता है। गुरु नानक देव जी भी कह रहे हैं—

आठ अट्टाकी अटारी मजारा, देखा पुरुष न्यारा।।

मद्रास की ट्रेन दिल्ली से संबंधित मिलती है तो लुधियाना से नहीं मिलने वाली है। ब्रेक यात्रा कर रहे हैं तो टी.टी. से लिखवाना होगा।

मैं ये रहस्य जल्दी नहीं बोलना चाहता हूँ, क्योंकि मेरी वाणी की नकल बड़ी जल्दी हो जाती है। अब समस्या यह आ रही है कि वो भौतिकवाद को भी लेकर चल रहे हैं। पीवर चीज नहीं मिल रही है। बाद में मैं ही नकली लगने लगूँगा। उनके लोग उन्हें बोल रहे हैं कि साहिब बंदगी वाले बड़ी ऊँची बातें बोल रहे हैं। तो वो एकाग्रता से सुनकर बोल रहे हैं। शाहरूखखान अमिताभ की एक्टिंग देख रहा है। हरेक चाह रहा है कि आदमी बड़ी तादाद में उसके पास पहुँचें। वो मेरे से पहले टी.वी. पर हैं। उन्हें भय है कि हमारी पब्लिक न भाग जाए। वो कह रहे हैं कि हम भी ये बातें जानते हैं। फिर तू कहाँ भागकर जायेगा। मैं बेबाक बोलता था। अभी थोड़ा रुककर बोल रहा हूँ।

एक पहलवान ने चेले को दाँव सिखाए। चेले ने बाद में उसी को चैलेंज कर दिया। वो आया और एक मिनट में ही उसे पटकी दे मारी। चेले ने कहा कि आपने यह दाँव नहीं बताया था। गुरु ने कहा कि यह इसी दिन के लिए रखा था।

तो मैं पूछता हूँ कि तुम वहाँ गये तो यह वाला गुरु था क्या। कहते हैं कि हाँ। मैं जान जाता हूँ कि गप्प मार रहा है। कभी आपकी माता कमरे से आवाज लगाती है तो आप जान जाते हैं कि माता है। गुरु वहाँ पहले ही बैठा है। वो पूरे अंतिम मुकाम तक सहयोगी है। माता-पिता परमार्थ में सहयोगी नहीं है। गुरुजन माता पिता का रोल भी करते हैं और परमार्थ में भी सहयोगी हैं। तो वहाँ गुरु बैठा है। वहाँ पहुँचना है। वैष्णो देवी के दर्शन के लिए जाता है तो पहले टोकन मिलता है। इस तरह पहले वहाँ पहुँचो। सद्गुरु एक थीम देता है, फिर हकदार बनते हैं। गुरु में अन्तर नहीं है। इस स्थूल में भी वहीं गुरु बनकर समझा रहा है। वहाँ भी वो ही है। वो ताकत लेकर चलती है। जब मुसलमानों से पूछो तो कहते हैं कि फरिश्ते मुहम्मद साहब की रूह को लेकर गये ते। वो फरिश्ता अष्टम चक्र में बैठा हुआ है। उसका हाथ आपकी तरफ बढ़ा हुआ है, तुम

बढ़ाओ। वो ले लेगा।

सकल पसारा मेटि कर, गुरु में देय समाय।
कहैं कबीर धर्मदास से, तो अगम पंथ लखाय।।

अगर कहें कि कमाई करके पहुँचेगा तो सीधी सी बात है कि कुछ पता नहीं है। कुछ सीधा कह रहे हैं कि गुरु कुछ नहीं कर सकता है, आपको खुद अपनी मंजिल तय करनी होगी। पर साहिब तो यहाँ कह रहे हैं—

कोटि जन्म का पंथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय।।

यह रहस्य है।

न कोई कहा न पहले जाना।।

सद्‌गुरु वहाँ पर टिकट दे देता है। यहाँ पर भेद रख रहा हूँ।

भेदी भेद खुलन न पाए। जमीं आसमान एक हो जाए।।

जब सद्‌गुरु आतमा को ले चलते हैं, क्या करते हैं? वो कॉशियस को पूरा उठाते हैं और ले चलते हैं। दूर तक चलते हैं। लगता है कि मैं फलाना हूँ। ब्रह्मलोक तक जाने के बाद संशय लगता है, पर होश में होते हैं, लगता है कि कई चीजें छूटती जा रही हैं। लगता है कि काफी अलग से होते जा रहे हैं। आगे चलते चलते महाशून्य से परे जाते हैं। गुरु साथ में होता है। अन्य कोई भी गुरु शिष्य को पार करने का ठेका नहीं ले रहा है। क्योंकि वो पार करने में सक्षम नहीं है। वो खुद वहाँ पहुँचा ही नहीं है। वहाँ पहुँचकर ही गुरु में शिष्य को पार कर पाने की ताकत आती है। उनके पास वो ताकत नहीं है। इसलिए वो कह रहे हैं कि अपना ठिकाना खुद ढूँढ़ लेना। यदि यह सोच बैठे हो कि गुरु पार उतारेगा तो गलतफहमी में हो। पर हम यह दावे के साथ कह रहे हैं कि गुरु पार कर देगा।

कोटि जन्म का पथ था, गुरु पल में दिया पहुँचाय।।

मैंने आपके व्यक्तित्व को परम जाग्रत कर दिया। कितना भी जड़ आदमी है, नाम के बाद परम चेतन है। आपको बताना नहीं है कि क्या

करना है और क्या नहीं करना है। वो सूक्ष्म ताकत आपको अन्दर से बताती चल रही है।

पानी हू से पातला, वायु से अति झीन।
पुहुप वास से सूक्ष्म, दोस्त कबीरा कीन।।

आपके पास वो ताकत खड़ी कर दी है।

...तो आगे चलते हैं तो संसार को भूलता चलता है। पर वहाँ भी मन है। गुरु सान्निध्य में ले जा रहा है। पूरे ब्रह्माण्ड को पार करने के बाद महाशून्य आती है। ऐसे गुरु शिष्य साथ में जा रहे होते हैं, पर वहाँ गुरु शिष्य को अपने में समा लेता है। फिर सात आकाशों को पार करने के बाद निकालता है। आत्मा पूछती है कि मुझे अपने में क्यों समाया था? गुरु कहता है कि आदि शक्ति और निरंजन की इतनी शक्तियाँ हैं कि मेरे साथ होने पर भी छीन लेती हैं।

उसके ऊपर एक बिंदू आता है। वहाँ फिर अपने में समा लेता है। भालू लोग उत्तरी ध्रुव में अपने बच्चों को पीठ पर रखकर हजारों मील तैरते हैं।

सहज जनि जानों साईं की प्रीत।।

साहिब कह रहे हैं–

70 प्रलय मारग माहिं, तब जीव लहे दीदारा है।।

कह रहे हैं–

तू सूरत नैन निहार, यह अंड के पारा है।
तू हिरदे सोच बिचार, यह देस हमारा है॥
पहिले ध्यान गुरु का धारो, सुरत निरत मन पवन चितारो।
सहेलना धुन में नाम उचारो, तब सतगुरु लहो दीदारा है॥

गुरु का ध्यान करो, जिससे सुरति निरति एक होकर अष्टम चक्र की ओर चलें। फिर सद्‌गुरु का दीदार हो जायेगा।

सतगुरु दरस होइ जब भाई, वे दें तुम को नाम चिताई।

सुरत शब्द दोऊ भेद बताई, तब देखे अंड के पारा है॥

जब सद्‌गुरु के दर्शन हो जायेंगे तो वो तुम्हें नाम का रहस्य दे देंगे। तभी इस ब्रह्माण्ड से परे पहुँचा जा सकेगा।

सतगुरु कृपा दृष्टि पहिचाना, अंड सिखर बेहद मैदाना।
सहज दास तहँ रोपा थाना, जो अग्रदीप सरदारा है॥
सात सुन्न बेहद के माहीं, सात संख तिन की ऊँचाई।
तीनि सुन्न लौं काल कहाई, आगे सत्त पसारा है॥
प्रथम अभय सुन्न है भाई, कन्या निकल यहँ बाहर आई।
जोग संतायन पूछो वाही, ममदारा वह भरतारा है॥
दूजे सकल सुन्न करि गाई, माया सहित निरंजन राई।
अमर कोट कै नकल बनाई, जिन अँड मधि रच्यो पसारा है॥
तीजे है सहसुन्न सुखाली, महाकाल यहँ कन्या ग्रासी।
जोग संतायन आये अबिनासी, जिन गल नख छेद निकारा है॥
चौथे सुन्न अजोख कहाई, सुद्ध ब्रह्म पुर्ष ध्यान समाई।
आद्या यहँ बीजा ले आई, देखो सृष्टि पसारा है॥
पंचम सुन्न अलोल कहाई, तहँ अदली बंदीवान रहाई।
जिनका सतगुरु न्याव चुकाई, जहँ गादी अदली सारा है॥
षष्ठे सार सुन्न कहलाई, सार भँडार याही के माहीं।
नीजे रचना ताहि रचाई, जो सबहिन तें न्यारा है॥
सत सुन्न ऊपर सत की नगरी, बाट बिहंगम बाँकी डगरी।
सो पहुँचे चाले बिन पग री, ऐसा खेल अपारा है॥
पहिली चकरी समाध कहाई, जिन हंसन सतगुरु मति पाई।
बेद भर्म सब दियो उड़ाई, तिरगुन तजि भये न्यारा है॥
दूजी चकरी अगाध कहाई, जिन सतगुरु संग द्रोह कराई।
पीछे आनि गहे सरनाई, जो यहँ आन पधारा है॥

तीजी चकरी मुनिकर नामा, जिन मुनियन सतगुरु मति जाना।
सो मुनियन यहँ आइ रहाना, करम भरम तजि डारा है॥
चौथी चकरी धुनि है भाई, जिन हंसन धुनि ध्यान लगाई।
धुनि सँग पहुँचे हमरे पाहीं, यह धुनि सबद मँझारा है॥
पंचम चकरी रास जो भाखी, अलमीना है तहँ मधि झाँकी।
लीला कोट अनन्त वहाँ की, जहँ रास बिलास अपारा है॥
षष्टम चकरी बिलास कहाई, जिन सतगुरु सँग प्रीति निबाही।
छुटते देंह जगह जहँ पाई, फिर नहिं भव अवतारा है॥
सतवीं चकरी बिनोद कहानो, कोटिन बंस गुरन तहँ जानो।
कलि में बोध किया ज्यों मानो, अँधकार खोया उजियारा है॥
अठवीं चकरी अनुरोध बखाना, तहाँ जुलह दीताना है।
जा का नाम कबीर बखाना, सो सब संतन सिर धारा है॥
ऐसी ऐसी सहस करोड़ी, ऊपर तले रची ज्यों पौड़ी।
गादी अदली रही सिर मौरी, जहँ सतगुरु बन्दीछोरा है॥
अनुरोध के ऊपर भाई, पद निर्बान के नीचे ताही।
पाँच संख याही ऊँचाई, जहँ अद्भुत ठाठ पसारा है॥
सोहल सुत हित दीप रचाई, सब सतु रहैं तासु के माहीं।
गादी अदल कबीर जहाँ ही, जो सबहिन में सरदारा है॥
पद निरबान है अनन्द अपारा, नूतन सूरति लोक सुधारा।
सत्य पुरुष नूतन तन धारा, जो सतगुरु संतन सारा है॥
आगे सत्यलोक है भाई, संखन कोस तासु ऊँचाई।
हीरा पन्ना लाल जड़ाई, जहँ अद्‌भुत खेल अपारा है॥
ता मधि अधर सिंहासन गाजै, पुरुष सबद तहँ अधिक बिराजै।
कोटिन सूर रोम इक लाजै, ऐसा पुरुष दीदारा है॥
हंस हंसनी आरत उतारैं, खोड़स भानु सुर पुनि चारैं।
पद बीना सत सबद उचारैं, जो बेधत हिये मँझारा है॥

**ता पर अगम महल इक न्यारा, संखन कोटि तासु बिस्तारा।
बाग बावड़ी अमृत धारा, जहँ अधरी चलैं फुहारा है॥
मोती महल औ हीरन चौंरा, तेस बरन तहँ हंस चकोरा।
सहस सूर छबि हंसन जोरा, ऐसा रूप निहारा है॥
अधर सिंघासन जिंदा साईं, अर्बन सूर रोम सम नाहीं।
हंस हिरंबर चँवर ढुलाई, ऐसा अगम अपारा है॥
तहँ अधरी ऊपर अधर धराई, संखन संख तासु ऊँचाई।
झिल मिल हट सो लोक कहाई, जहँ झिलमिल झिलमिल सारा है॥
बाग बगीचे झिलमिल कारी, रतनन बड़े पात औ डारी।
मोती महल औ रतन अटारी, तहँ पुरुष बिदेह पधारा है॥
कोटिन भानु हंस को रूपा, सबद है वहाँ अजब अनूपा।
हंसा करत चँवर सिर भूपा, बिन कर चँवर ढुलारा है॥
हंसा केल सुनो मन लाई, एक हंस के जो चित आई।
दूजा हंस समझि पुनि जाई, बिन मुख बैन उचारा है॥
ता आगे निःलोक है भाई, पुरुष अनामी अकह कहाई।
जो पहुँचे जानेंगे वाही, कहन सुनन से न्यारा है॥
रूप सरूप वहाँ कछु नाहीं, ठौर ठाँव कछु दीसे नाहीं।
अरज तूल कछु दृष्टि न आई, कैसे कहूँ सुमारा है॥
जा पर किरपा करिहैं साईं, गगनी मारग पावै ताही।
सत्तर परलय मारग माहीं, जब पावै दीदारा है॥
कहैं कबीर मुख कहा न जाई, ना कागद पर अंक चढ़ाई।
मानो गूँगे सम गुड़ खाई, सैनन बैन उचारा है॥**

इस तरह सद्‌गुरु की कृपा से जीवात्मा को नाम की ताकत सात आकाशों को पार करते हुए वो ताकत अमर लोक में ले चलती है, जहाँ परम पुरुष निवास करता है, जिसके एक रोम के आगे अरबों सूर्यों का प्रकाश फीका पड़ जाता है।

वो ताकत पार करती हुई चलती है। यहाँ कोई कमाई से कह रहा है तो बात गले से नीचे नहीं उतर रही है।

जेहि खोजत ब्रह्मा थके, सुर नर मुनि अरु देव।
कहैं कबीर सुनो हो साधु, कर सतगुरु की सेव।।

सद्गुरु फिर अनन्त की तरफ ले चलता है।

जा ते उत्पत नानका, लीन ताहि में जान।।

तो आगे जाते हैं तो वहाँ अरबों सूर्यों का प्रकाश होता है। एक सैकेंड में अरबों कलाबाजी खिलाते हैं। वहाँ मन छूटता है। उसके बाद सुरति का सागर आता है। वहाँ गुरु कहता है कि अब कोई बात नहीं करनी है। यहाँ तक कैसे बात होती है? जो भाषा आप समझते हैं, उसी में बात होती है। आगे इसलिए नहीं कि मन, बुद्धि के पार है। वो अकह लोक है। वहाँ ऐसा है कि-

एक हंस के मन जो आई। दूसर हंस समझ पुनि जाई।।

अब सतलोक में प्रवेश लेता है। जैसे बहुत लाइट वाले कमरे में घुसते हैं तो उसका प्रभाव पड़ता है। इस तरह तब 16 सूर्यों का प्रकाश आत्मा में होता है। वहाँ न मन है, न बुद्धि है। कुछ भी नहीं है।

रचना बाहर वो अस्थाना।।

जैसे सूर्य अपने बिंदू पर है, पर उसकी किरणें धरती पर सब जगह फैलती हैं। इस तरह वो परम पुरुष एक बिंदू पर है। उसमें समाता है तो फिर वापिस नहीं आता है। पहले मंजिलें तय करके जाना है, जो साहिब की वाणी में आता है और जिसे कई लोग नकल करके बोलते हैं। पर दोबारा वैसे नहीं जाना होता है। फिर तो ऐसा हो जाता है कि यहाँ सुरति करते हैं और वहाँ समा जाते हैं। उसकी सुरति में इतना आकर्षण होता है। इसे विहंगम चाल भी कहते हैं।

कहैं कबीर विहंगम चाल हमारी।।

फिर वापिस आता है तो खुमारी उतरती नहीं है। फिर दुबारा चढ़ाई नहीं करनी है। यहाँ सुरति की और वहाँ पहुँच जाता है।

कभी किसी अध्यात्मवादी से पूछता हूँ कि सतलोक है क्या? वो

कहता है—है। मैं पूछता हूँ कि गये हो? वो साहिब की वाणी सुना देता है। मैं पूछता हूँ कि कितनी बार गये? वो कहता है कि कई बार। मैं पूछता हूँ कि कैसे जाते हो? वो बोलता है कि वैसे ही जाता हूँ। मैं जान जाता हूँ कि झूठा है। पर वो नकल करके बोल रहा था।

आज सभी महात्मा मेरी नकल करके बोल रहे हैं। उनकी पहले वाली वाणियाँ सुनो तो वो ऐसी बातें नहीं बोल रहे थे। उनके पास यह ज्ञान अचानक कहाँ से आ गया, यह उनके शिष्य नहीं समझ पा रहे हैं। क्योंकि अन्य पंथों के लोग हमारे पास आ रहे हैं। वो यह बताना चाहते हैं कि जो साहिब बंदगी वाले बोल रहे हैं, वो हमारे पास भी है, तू कहाँ जायेगा। वो मेरे प्रवचन एकाग्र होकर सुन रहे हैं। वो पूरी पूरी नकल करने लग गये हैं। यह बात मैंने बहुत पहले कह दी थी। यह तो होना ही था। निरंजन ने साहिब से यही तो कहा था कि मैं तुम्हारा नाम लेकर पंथ चलाऊँगा और जीवों को भ्रमित कर दूँगा। उन्हें पता ही नहीं चलेगा कि असली क्या है और नकली क्या है।

मुझे लगता है कि थोड़े दिन बाद मुझे प्रूफ करना पड़ेगा कि साहिब बंदगी वाली बात यह है। दुनिया मेरी नकल इतनी तगड़ी कर लेगी।

तो साहिब कह रहे हैं—

एक बार जो दर्शन पाते, देखि बहुरि बिलंब न लाते।।

विहंगम उसके लिए शुरू होगी। यह संतों के लिए है। साधक मीन, पपील में ही गोता खाता है।

अब जिसको पता नहीं है वो तो कमाई ही बोलेगा। कुछ तो कह रहे हैं कि हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि यह गुरु कैसे पार करेगा। सच कह रहे हैं वो। उन्हें वो फार्मूला पता नहीं है।

अब उस बिंदू तक, अष्टम चक्र तक पहुँचने की ताकत भी गुरु ही देता है। लोग कहते हैं कि बच्चा जन्म लेकर माँ का दूध पीने लगता है। माँ ने ही वो ताकत दी। माँ ने अपना पयोधर बालक के मुँह में दे

दिया। बाकी काम बच्चे का है। पर सच यह है कि वो ताकत भी माँ ने ही दी। माँ ने पेट के अन्दर से ही दूध पीने की ताकत देकर बाहर निकाला। इस तरह स्थूल जगत में भी गुरु की ताकत होगी और उधर भी। उधर पहुँचने की ताकत भी गुरु ही देता है। तब ही सुरति अष्टम कमल की तरफ बढ़ने लगती है।

पारस सुरति संत के पासा।।

वो सुपर पावर का पुंज है, जिसके माध्यम से पहुँचेगा। इसलिए यदि वो चीज नहीं है और गुरुआई कर रहा है तो शिष्य से बहुत बड़ा धोखा कर रहा है। नपुंसक शादी कर रहा है तो धोखा कर रहा है, क्योंकि शादी संतान उत्पत्ति के लिए है। इस तरह गुरु के पास परमात्मा तक ले जाने की ताकत नहीं है तो शिष्य से धोखा कर रहा है। जैसे सूर्य के उगने से कमल का फूल भी खिलने लगता है, क्योंकि वो उर्जा का स्रोत है। तो महान उर्जा गुरु के माध्यम से मिलजाती है। जैसे सूर्य ने कमल को खिलाया, इस तरह वो उर्जा गुरु शिष्य को देता है। वो पुंज होना चाहिए उर्जा का।

बहुत गुरु हैं अस जग माहीं, हरे द्रव्य दुख कोई नाहीं।।

इस संसार में बहुत से गुरु हैं, पर वो लोगों का पैसा ही हरते हैं, दुख हरण करने वाला कोई नहीं मिलता।

इसलिए हमें जन्म-मरण के दुख से मिटाने वाले सद्गुरु को पहचानना है। पूर्ण गुरु आपको बदल देगा। वो आपमें प्रवेश ले लेता है।

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।
बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह।।

इस तरह—

गुरु बिन भव निधि तरई न कोई।
हरि विरंच संकर सम होई।।



वो वास्तव में हमारे ही हैं

दुनिया अपनी-अपनी मौज में घूम रही है। दुनिया के पास समय नहीं है। बच्चा स्कूल जाना चाहता है क्या? कतई नहीं। माँ-बाप को चिंता है कि नहीं। उन्हीं को अधिक चिंता है। क्योंकि वो जानते हैं कि आगे जीवन दुष्क्रिय होगा। इस तरह महापुरुष जानता है कि दुनिया को फिक्र नहीं है मुक्ति की।

मैं शारीरिक रूप से सब जगह खुद पहुँच रहा हूँ। इससे क्या लाभ हुआ। जो राँजड़ी में नहीं आ पाता है, वो पहुँच जाता है। दूसरों का गुरु नहीं आता है। हमने आपको मौज दे दी। हम इस तरह से लोग निकाल रहे हैं। हम जानते हैं कि हरेक की खोपड़ी पर कोई-न-कोई मोहर लगी है। सभी व्यस्त हैं। हमें सीधा यह कहें कि जब शादी के लिए कोई क्वारी स्त्री नहीं मिले तो व्याही से ही शादी करनी है। हमारी यह मजबूरी है। कोई चारा है नहीं। अगर कोई मिलता है तो वो शराबी होता है। हम उन्हें भी कह रहे हैं कि आओ, तुम्हें भी ठीक कर देंगे। अब वो जान रहे हैं कि यह हमारे लोगों को खींच रहा है, इसलिए परेशान हैं। वो इसलिए गाली भी दे रहे हैं। मैं सह रहा हूँ। आप किसी का नुकसान करते हैं तो वो गाली बकता है। आप सह लेते हैं। वो नाराज तो होंगे ही। वो भी तो हमारे हैं। हमारा दृष्टिकोण उनके लिए व्यापक है। वो हमसे बदला चुका रहे हैं।

मेरे पास अन्य पंथ डेरा डालते हैं। वो बताना चाहते हैं कि उनका पंथ बड़ा है। कुछ बड़ा आश्रम बनाते हैं। अरे, हाथी बड़ा है। पर शेर की दहाड़ से जमीन पर लेटता है। ऊँट भी बड़ा है, पर शेर की दहाड़ से भी डरता है। शेर की क्या खूबी है। शेर बेहतरीन शिकारी है। शेर से बड़ा शिकारी नहीं है।

क्या कोई बिल्ली को हाथ से काबू कर सकता है? बिल्ली के वजूद से शेर कितना ताकतवर है। एक बिल्ली को हाथ से कोई काबू नहीं कर पायेगा। शेर की चमड़ी इतनी मोटी है। आप चाकू मारोगे तो निकालते ही जुड़ जायेगी। उसके पंजों में इतनी ताकत है कि एक बार में डेढ़-दो किलो माँस खींच लेगा। शेर एक चालाक शिकारी है। उसका मुँह बड़ा ताकतवर है। बड़े बड़े जीवों की गर्दन पर वार करके मार डालता है। क्या छलाँग है उसकी। क्या तेजी है। क्या लचक है। बेहद मजबूत शरीर है। उसकी चमड़ी उसे मजबूत बनाती है। थोड़ी खरोंच आए तो शेर का कुछ नहीं बिगड़ता है। बस, पूँछ और मुँह ही उसकी कमजोरी है। वो भागता भी नहीं है। उसे भागना नहीं आता है।

हम भागने वाले नहीं हैं। यदि बाहर जाऊँगा तो वो मजबूरी होगी कि बाहर के देशों में भी लोगों को चेतन करना है। भारत तक ही सीमित नहीं रहना है। वहाँ भी साहिब के कई अँकुरी जीव हैं, उन्हें भी पार करना है। खैर, वो इतना विरोध क्यों कर रहे हैं? अच्छा, कौवे और कोयल की दुश्मनी क्यों है? बाकी विरोध कर रहे हैं तो वजह है। हमें चुप रहना है, लड़ने नहीं जाना है। अब कोयल को अपने अंडे सेना नहीं आता है। लंबी पूँछ है। बजूद ही नहीं है। साँप को घर बनाना नहीं आता है। वो चूहों का हाइजेक करता है।

कोयल बहुत चालाकी करती है। हमारा दिमाग कोयल वाला है। कौवे दुश्मन हैं। वो बड़ी तेज चीज है। कोयल नर को कहते हैं और कोकिला नारी है। कोकिला को सेना नहीं आता है। वो दोनों कौवों के एरिए में जाते हैं। एरिया देखने जाते हैं कि कहाँ किसी कौवे ने 4-5 अंडे दिये हैं। कौवे उन्हें देखते हैं तो नाराज हो जाते हैं। उनके पीछे लगते हैं। हम जिस भी एरिए में जाते हैं, दूसरे पंथों के लोग नाराज हो जाते हैं।

कोयल बहुत तेज भागता है और कोकिला इतनी तेज नहीं भाग पाती है। कोयल को कौवे नहीं पकड़ पाते हैं। कोयल वहाँ जाती है, जहाँ किसी कौवे ने अण्डे दिये हैं। कौवे कोयल को देखकर पीछे लगते हैं। वो दूर तक भगाता है उन्हें। इतने में पीछे से कोकिला आती है और अपने

वाला एक अंडा वहाँ रख देती है और उसका अंडा उठाकर दूर फेंक देती है। ऐसा इसलिए करती है कि उसे पता न चले। अगर अंडे अधिक हो गये तो शक हो जायेगा। फिर वो कौवे की मादा सेती है अंडे। इसलिए कोयलें बहुत कम मिलती हैं। अब वो बीच बीच में मिलने जाती है। फिर कोयल जाती है। कौवे एक साथ उसके पीछे लगते हैं। इतने में कोकिला आती है और उसे आवाज सुनाती है।

निज कुल वचन सुनत सुत जागा।।

उसकी आवाज सुनकर बच्चा एकाग्र होता है। यह स्वाभाविक है। वो पास में बैठकर बताती है कि तू हमारा है, तू कौवा नहीं है। धीरे धीरे उसे पढ़ाती है। जब देखती है कि कौवा आया तो छिप जाती है। जैसे कोई किसी को गोद लेता है तो बाद में बड़ा होने पर बच्चे को पता चल जाता है कि मैं इनकी संतान नहीं हूँ। तो वो बच्चा भी समझने लगता है। वो धीरे धीरे पूरी कहानी बताती है। हमने भी आपको निरंजन की पूरी कहानी बताई। अब बच्चा थोड़ा बड़ा होता है तो कोयल जाकर फिर कौवों को छेड़ता है। वो पीछे लगते हैं। इतने में कोकिला जाती है और बच्चे को लेकर आ जाती है। वो वापिस आकर देखते हैं तो सोचते हैं कि हमारे बच्चे को ले गयी। वो सोचते हैं कि ये उसे ले जाकर कोयल बना रही है। उन्हें नहीं पता है कि ये पहले ही उनके हैं। सच यह था कि वो अपने ही बच्चे को ले गयी। हम अपने ही जीव ले रहे हैं।

काल का जीव माने नहीं, कोटिन कहूँ समुझाय।।
मैं खींचत हूँ सतलोक को, यह बाँधा यमपुर जाय।।

कोई कोकिला की बात नहीं मानता है तो कौवा ही रह जाता है। जो पूरे काले हैं, वो भी कोयल के बच्चे हैं। पर उन्हें अच्छी डाइट नहीं मिली होती है। हमारा काम मुश्किल है। हम कहीं भी जाते हैं, न तो हमें कोई सत्संग करने देना चाहता है और न आश्रम ही बनाने देना चाहता है। कहीं सत्संग कर देता हूँ तो उसी रात को विरोधियों की मीटिंग होने लग जाती है।

जगत भगत में बैर है, चारों युग परमान।।

जब आप हमसे जुड़ गये तो उन्हें नुकसान होता है। इसलिए वो विरोध जताते हैं तो हम सह लेते हैं, चुप रहते हैं। कहीं सत्संग होता था तो एक पंडिताइन अपने भजन शुरू कर देती थी, सत्संग में बाधा पहुँचाने की कोशिश करती थी। उसकी भी मजबूरी थी। क्योंकि पहले लोग उसे दान आदि देते थे, पर जो उसे देते थे, उनमें से कुछ जो मेरे पास आ गये तो उसे नुक़सान हुआ।

सयाने बहुत नाराज़ हैं। हम भी समझते हैं कि उन्हें थोड़ा नुक़सान हुआ है। उनका धंधा ही यही था। हमने अपने बंदों के मोहरे, संगलें सब उठाकर फेंक दिये। वो भी सोचने लगे कि यह हमारे मोहरे, संगलें कहाँ फेंककर आता है। हम इतनी मुश्किल से उन्हें भ्रमित किये थे। अब उन्हें और कोई काम आता नहीं है। वो यही काम सीखे हैं। उनका भी नुक़सान हुआ। हम समझते हैं, पर हमारी भी मजबूरी है कि हमने अपने बंदों को सही दिशा ही सिखानी है। भक्ति करनी है तो ठीक से ही करनी है। जो विरोधी पंथ हैं, वो भी इसलिए परेशान हैं कि हम उनके बंदों को ले रहे हैं। यह विरोधी हमारे समकक्षी हैं, जो थोड़ी-सी मिलती-जुलती बात कर रहे हैं। पर हम कोई डंडे, सोटे मारकर तो उनके बंदों को ला नहीं रहे हैं। हम तो कोयल वाला काम कर रहे हैं।

जो विरोधी हमारी निंदा कर रहे हैं तो इसके पीछे वजह है। उन्हें कहीं-न-कहीं से हमसे नुकसान हुआ है और भारी नुकसान हुआ है। वो अपना काम चला रहे हैं। पर हम उनके काम में बाधक हैं। उनकी परेशानी बड़ी है। तो कहीं मुसलमान कहते हैं, कहीं उग्रवादी कहते हैं, कहीं मजनू कहते हैं। माइयाँ आपस में झगड़ती हैं तो पीटती हैं कि तेरा फलाना मर जाए, तेरा खानदान खत्म हो जाए। हालांकि उनके कहने से होता नहीं है। इस तरह वो भी निंदा करने में लगे हुए हैं। वो आपको भ्रमित करना चाहते हैं, आपकी भक्ति को खराब करना चाहते हैं।

कहैं कबीर तू बसा भ्रम के देश

आप एक भ्रम के देश में जी रहे हैं। आप मेरे शब्दों को कितना समझ रहे हैं, मैं समझता हूँ। आप मेरे शब्दों को इतनी बारीकी से नहीं

ले रहे हैं। हालांकि आपकी चेतना में वो अंकित हो रहे हैं। वो आपके अंत:करण में पहुँचते हैं, पर मन की तरंगें चलती रहती हैं, इसलिए वो विस्मृति में चले जाते हैं। एक डी.सी. साहब पूछताछ के लिए अखनूर आए। उन्होंने एक बात बोली, कहा कि मैंने अपने जीवन में बड़े बड़े वक्ता देखे, सबकी बात दिमाग में उलझती है, अन्दर नहीं पहुँचती है। आप सीधा अन्दर में पहुँचा देते हैं।

वो साहित्यकार थे, मुसलिम थे। हम हर बात आपके दिल तक पहुँचा रहे हैं। क्योंकि हर बात दिल से बोल रहे हैं। कथनी करनी एक करके बोल रहे हैं।

कथनी के शूरा करनी के कूरा।।

बहुत लोग करनी के कूर होते हैं। कथनी करनी एक हो तो जिंदगी का मजा है।

मैं जानता हूँ कि मैं आपको बड़ा मजबूत कर रहा हूँ, पर फिर फिर आप भ्रमित हो रहे हैं, क्योंकि आपके गिर्द वहम है।

आप दुनिया के पीछे मत चलना। कोई कहे कि हत्या का नुक्स है तो मत मानना। जो ऐसी बातें बोल रहे हैं, मैं उनके लिए पूछता हूँ कि उनके पास मूल्यांकण की ताकत क्या है? सिर में दर्द है तो कह देते हैं कि हत्या का नुक्स है। तुमने किस यंत्र से मूल्यांकण किया कि हत्या है?

आप ऐसे वातावरण में जी रहे हैं, जहाँ चारों ओर वहम है। और पाखंडी तपके ने भ्रमित किया है। हमारे देश में तो सभी भूत मान रहे हैं। पूरे इंडिया का यही धंधा है। डोरे, संगल, मोहरे आदि पूरे इंडिया में है। यह अलग अलग नामों से पूरे देश में फैला है।

उनका काम क्या है, आदमी को भ्रमित करना। जो टीम आपका पीछा कर रही है, वो मजबूत टीम है। वो भ्रमित लोगों को ढूँढ़ते हैं। आपको भ्रमित करके ही उन्हें धन मिलता है। आप मजबूत रहना, सद्‌गुरु को पकड़े रहना। वास्तव में वो भी हमारे ही हैं। ऐसे लोगों को भी जब समझ आती है तो आते हैं। कई सयानों को मैंने नाम दिया है।

...तो हम कोकिला वाला काम कर रहे हैं। कभी कोकिला बच्चा

नहीं निकाल पाती है तो फिर वो बच्चा कौवा बन जाता है। वो वही गंदगी खाने लगता है। अगर कोकिला का बच्चा है तो पूरा काला होगा।

भाइयो, हम आपको समझाने आए हैं। आप हमारे हो, आप अमर लोक के हो, पर निरंजन के देश में रह रहे हो।

कौवे सब मिलकर कोयल के पीछे लगते हैं, पर उसका कुछ नहीं कर पाते हैं। इस तरह आप मजबूत रहना, कोई कुछ नहीं कर सकता है। बस, गुरु आज्ञा में रहना, गुरु की रजा में रहना। बस, यही सोचना–

मुझे है काम सतगुरु से, दुनिया रूठे तो रूठन दे।।

ऐसे शिष्य के लिए साहिब कह रहे हैं–

गुरु आज्ञा ले आवही, गुरु आज्ञा ले जाहिं।
कहैं कबीर ता दास को, तीन लोक डर नाहिं।।



अभूतपूर्व क्षण

गुरुदेव हमारे जीवन में,
एक क्षण था सुंदर ऐसा आया।
जब मुझ जैसे मूरख ने,
पूर्ण गुरु तुम जैसा पाया।
वह क्षण था संयोग एक ऐसा,
मन में था संशय जो जैसा।
मन से मेरे क्षण भर में,
साहिब ने सब भरम मिटाया।
भाग्य मेरा उस दिन से बदला,
जीवन का हर रस्ता बदला।

जिस शुभ क्षण मन मूरख ने,
गुरुदेव तुम्हारे जैसा पाया।
कोटि–कोटि है नमन हमारा,
कैसे करूँ वंदन मैं तुम्हारा।
हम जैसों को नाम दान कर,
जन्म हमारा सफल बनाया।
गुरुदेव हमारे जीवन में,
वह क्षण था अद्‌भुत ऐसा आया।
जब मुझ जैसे को साहिब ने,
कर्म काटकर था अपनाया।।

ध्यान और विश्वास

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।
कहैं कबीर सुमिरन किये, साईं माहिं समाय।।

साहिब ने वाणी में स्पष्ट कहा। आखिर सुमिरन से परमात्मा में समाने का क्या सूत्र है ? केवल हमीं यह बात बोल रहे हैं कि ध्यान आत्मा है। यह बात बाकी कोई नहीं बोल रहा है। अगर हम प्रेक्टिकल समझें तो बात समझ आती है। जितने भी काम कर रहे हैं, सभी तो ध्यान से कर रहे हैं। ध्यान एक मास्टर पॉवर है। मान लो, आप सत्संग में मुझे देख रहे हैं, सुन रहे हैं, समझ रहे हैं। यदि ध्यान हट गया तो कुछ नहीं कर पायेंगे। सुनना, समझना, देखना सब ध्यान के अन्तर्गत आता है। सुमिरन का मतलब है किसी भी चीज में ध्यान लगाना।

हम जिसका भी ध्यान करेंगे, उसी का रूप हो जायेंगे। जैसे चलने के लिए उपयुक्त साधन टाँगें हैं, किसी को भी अपने गंतव्य तक जाने के लिए ध्यान की जरूरत है। इसका मतलब है कि सबके पास अपने गंतव्य तक जाने की शक्ति है और वो शक्ति है—ध्यान। साहिब वाणी में बोल रहे हैं—

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।।

हम प्रेक्टिकल देखते हैं। क्या हमारे सूत्र को बाकी धर्मशास्त्र मान्यता दे रहे हैं। बाकी भी दे रहे हैं। गीता में भी मान्यता दी है। वासुदेव ने कहा—हे अर्जुन, 'अंतमतः सागतः'। यानी अन्त में जहाँ ध्यान होगा, वही गति प्राप्त होगी।

पर आदमी अपने जीवन के लिए रास्ता चुनता है। नागामल जी ने रास्ता चुना कि पढ़-लिखकर नौकरी करेंगे। हम सब रास्ता चुनते हैं। गुप्ता जी ने चुना कि ट्रांसपोर्टर का काम करेंगे। फिर इन्होंने इसे क्रियान्वित किया। जो भी रास्ता चुनता है, फिर क्रियान्वित करने को अपनी ताकत

लगाता है। हम उसे अमलीयामा पहनाने के लिए ताकत लगाते हैं। हम सब एक रास्ता बनाकर क्रियान्वित करते हैं। हम सब उसकी प्राप्ति कैसे करते हैं? उस लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए वो क्रिया करते हैं। अगर जीवन का रास्ता क्लर्क का चुना तो पढ़ाई शुरू करते हैं। ट्रांस्पोर्टर का चुना तो गाड़ियाँ खरीदते हैं।

इसी तरह आदमी भक्ति में भी एक विषय चुनता है। वो विषय उसका अपना चुनाव है। कुछ वैष्णव भक्ति चुने। उन्होंने वैष्णव गाथा सुनी तो मानने लगे। फिर वो माँस भी नहीं खा रहे हैं। कुछ ने सोचा कि माँस तो खाना है। वो शैव सम्प्रदाय में चले गये। इसका मतलब है कि हरेक अपने विचार से रास्ता चुन रहा है। उसकी पूर्ति के लिए ईश्वरीय ताकत भी ले रहा है और शारीरिक भी। पहलवान लोग अधिकतर हनुमान जी की भक्ति कर रहे हैं। 52 वीरों में हनुमान जी भी हैं। अर्जुन, वासुदेव, बालि, हनुमान जी आदि 52 वीर हुए। अब बात यह उठी कि हम सब भक्ति में अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए अपने इष्ट की भी ताकत लेते हैं क्या? अगर हाँ, तो सूत्र क्या है? हम वो ताकत ध्यान के द्वारा प्राप्त करते हैं।

ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान ही संत बखाना।।

शिवजी की भक्ति वाला भी ध्यान शिवजी में लगा रहा है। एक नशा करने वाले ने शिवजी को चुना। उसकी धारणा थी कि भोला भंडारी बी भाँग पीकर मस्त रहता था। नहीं, शिवजी महाराज नहीं पीते थे। खैर, इसका मतलब है कि हम अपनी सुविधा अनुसार ही चुनते हैं। अब लाले लोग लक्ष्मी जी की भक्ति करते हैं, क्योंकि पता है कि वही स्रोत है। जो वैकुण्ठ धाम चाहता है, वो विष्णु जी की भक्ति करता है। वो भरोसा कर रहा है कि विष्णु जी हमें पहुँचा देंगे।

इसका मतलब है कि भक्ति में भरोसा है। क्राइस्ट कह रहे हैं कि प्रभु मुक्ति का दाता है। विश्वास जवानी नहीं हो। उसके लिए शर्त है कि बाइबिल की हरेक बात पर चलो। हमने भी कहा कि यदि अनुकंपा प्राप्त करनी है तो सात नियम का पालन करना।

अब भक्ति में एक भरोसे की बात आई। आप मोबाइल चला रहे हैं। उसमें एक सिम पड़ी हुई है, तभी चला पा रहे हैं। वो सिम मान लो कि एयरटेल की है। अब एयरटेल का टॉवर पास में होना चाहिए, तभी चलेगी। वो टॉवर एक्सचेंज से संबंधित है। उसी के द्वारा नम्बर दिये गये हैं। अपने इष्ट से उर्जा पाने के लिए एक कनेक्शन लेना होता है। वो है— विश्वास रूप सिम। साहिब की वाणी का बार-बार ऐसे ही हवाला नहीं दे रहा हूँ। समझें। वे बार-बार वाणी में कह रहे हैं-

तू मोको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।।
ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में।
ना मंदिर में न मस्जिद में, ना काशी कैलाश में।।
ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं बरत उपवास में।
क्रिया कर्म में मैं न रहता, नहीं योग सन्यास में।।
नहीं प्राण में नहीं पिंड में, न ब्रह्माण्ड अकाश में।
ना मैं भृकुटि भँवर गुफा में, नहीं नाभि के पास में।।

कह रहे हैं कि तीर्थ स्थानों में नहीं रहता हूँ। व्रत, उपवास आदि में भी नहीं हूँ। मंदिर, मस्जिद आदि में भी नहीं हूँ। जंगलों में भी नहीं हूँ। किसी घोर तपस्या से भी नहीं मिलूँगा। फिर कहाँ है? कैसे मिलेगा?

खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, एक पल की तलाश में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, मैं रहता विश्वास में।।

कह रहे हैं कि भरोसे में रहता हूँ। भरोसा क्या? वाह, रामायण भी कह रही है—

कहो कौन सिद्ध बिन विश्वासा।।

कोई भी सिद्धि भरोसे के बिना प्राप्त नहीं होती।

मैं ईसाइयों से पूछता हूँ कि क्राइस्ट के पास कैसे जायेंगे? कहते हैं कि भरोसा है। ज्ञानियों से पूछता हूँ कि वाहे गुरु के पास कैसे जायेंगे? कहते हैं कि जायेंगे। सूत्र कोई बोल नहीं पाता है। दरअसल ध्यान और विश्वास भक्ति के दो अंग हैं। ये भक्ति के पूर्वक हैं।



सत्संग में शांति चाहिए

सत्संग में एकाग्रता चाहिए। उस समय कोई डिस्टर्ब करता है तो बुरा मान जाता हूँ। क्योंकि तब अपने गन्तव्य तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है। उस समय आप और हम एक होते हैं। जब भी आदमी एकाग्र होता है तो दिमाग को तनाव आता है। उससे दिमाग थकता है। गाड़ी चलाने के लिए भी एकाग्रता चाहिए। ड्राइवर बुद्धिमान होता है। उसे एकाग्र होना आता है। वो अपने मुकाम पर पहुँचना चाहता है। आदमी गाली क्यों बकता है? किसी की पिटाई क्यों करता है? गुस्सा आया तो पीटा क्यों? शांति के लिए। चार गाली देकर ठंड पड़ जाती है। गाली आदमी शांति के लिए बकता है। पिटाई भी शांति के लिए करता है। अब तसल्ली हुई। अच्छी तसल्ली है। ड्राइवर तसल्ली के लिए गाली बकता है।

माताएँ रोती हैं। टेंशन को दूर करने के लिए रोती हैं। आश्रम में एक लड़की को डाँटता हूँ तो वो या तो कमरे में जाकर रोती है या फिर सीढ़ियों पर बैठकर रोती है। मैं किसी कारण से बुलाता हूँ। जब देखता हूँ तो वो रोई होती है। एक दिन मैंने पूछा कि रोई क्यों? कहा कि नहीं रोऊँ तो अटपटा लगता है, अच्छा नहीं लगता है। वाह, टेंशन मिटाने के लिए रोता है इंसान।

जैसे ड्राइवर को बुरा लगता है यदि कोई साइड न दे या गलत क्रास ले। इस तरह सत्संग में डिस्टर्ब होता है तो बुरा लगता है। मैं ज्ञान रूपी गाड़ी को चला रहा होता हूँ। एक दिव्य अनुभूति को ब्रेक लग जाती है।

क्रोध आया तो आदमी गाली क्यों बकता है? तसल्ली के लिए। पर यह तसल्ली का तरीका ठीक नहीं है। हमें चाहिए कि सोचें कि इसकी सोच ही इतनी थी। हमसे भी गलती होती है। हम चाहते हैं कि माफी मिले। जब हम माफी की आकांक्षा करते हैं तो दूसरे के प्रति भी ऐसा ही सोचें।

सत्संग में बच्चा रोता है तो मैं कहता हूँ कि इसे बाहर ले जाओ। माई नहीं उठती है। मैं फिर कहता हूँ कि बाहर जाओ। वो नहीं उठती है। मैं सोचता हूँ कि यह शर्म कर रही है। मैं अपमान नहीं करना चाहता हूँ। शिवजी ने उमा को आत्मज्ञान की बात बताई थी तो पक्षियों को भी वहाँ से भगा दिया था।

तो मैं एकाग्रता से वो बात आपतक पहुँचाता हूँ। कई चीजें एकाग्रता से पहुँचती हैं।



जीव साहिब से बिछड़ गया

काल निरंजन ने साहिब का,
कई युगों तक तप किया।
इच्छा जब साहिब ने पूछी,
कई युगों का राज्य लिया।
काल ने साहिब से फिर,
माँग हंसों को लिया।
सत्य सृष्टि मैं करूँगा,
निरंजन ने यह वचन दिया।
पर निरंजन ने जीव को,
चौरासी में डाल दिया।
और स्वयं मन बनके,
सबके भीतर घर किया।
काल के जाल में हंस जब फँस गया,
चौरासी की आग में हंस झुलस गया।

काल ने ऐसा पहरा लगाया हंस पर,
एक भी न वापिस अमर लोक हंस गया।
हंस चेताने को साहिब,
प्रगट भये तब काशी में।
नाम की महिमा बताकर,
समर्पित जीव गुरु को किया।
ऐसे हम बिछड़े हुओं को,
प्रीतम से फिर मिलने का,
अमर लोक को चलने का,
एक और अवसर दिया।
यही है एक अनहोनी घटना,
जब जीव साहिब से बिछड़ गया।
क्यूँ जीव साहिब से बिछड़ गया,
यों जीव साहिब से बिछड़ गया।।

विवाह

प्राचीन जमाने में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे। पहला है स्वयंवर, जिसमें लड़की आमंत्रित लोगों में से अपना वर स्वयं चुनती थीं। दूसरा था प्रतियोगिता, जिसमें कोई शर्त रखी जाती थी। जो उस शर्त को पूरा करता था, उसी के साथ लड़की का विवाह कर दिया जाता था। पुराने जमाने में योद्धा लोग थे। कोई भी स्त्री बारात में नहीं जाती थी, क्योंकि लुटेरे लूट लेते थे। तलवारें होती थीं। जंगल का रास्ता होता था। बाराती लोग तलवारें लेकर जाते थे और लड़की को व्याहकर ले आते थे। अब तो लड़के को पता ही नहीं होता है कि क्यों तलवार पकड़े हुए है। फिर बाजे, ढोल बजाए जाते थे, क्योंकि जीत कर आने की खुशी में ढोल बजते थे।

तो तीसरा था मेला विवाह। राज लोग, सरपंच लोग आदि कहते थे कि जिनको विवाह करना है, वो आ जाएँ। दुल्हे–दुल्हिन तैयार होकर जाते थे। राजा लोग लड़की लड़के का मेल करके विवाह करवा देते थे। जिनका नहीं हो पाता था, वो शाम को निराश घर लौटते थे। उनसे सहन नहीं होता था और वो आत्महत्या कर लेते थे। इसी कारण से यह मेला विवाह बंद कर दिया गया। फिर चौथा गंधर्व विवाह होते थे, जिसको लव मेरिज कहते हैं। अब भी होता है। पाँचवाँ सामूहिक विवाह होते थे। आचार्य लोग, राजा लोग वर–वधू को आशीर्वाद देकर उनका विवाह एक साथ करवा देते थे। छठा धार्मिक स्थानों में शादी होती थी। सातवाँ यज्ञ करवाकर वेद रीति से विवाह होता था। आठवाँ राजा लोग, गुरु लोग जयमाला पहनवाकर करवाते थे।

यह विवाह केवल शारीरिक रिश्ता ही नहीं है, यह वैचारिक रिश्ता भी है। यह मामूली नहीं है। इसलिए इसे धार्मिक अनुष्ठान के रूप में भी मनाया जाता था। उस दिन दोनों पति पत्नी संकल्प करते हैं कि

आज से हम दोनों के संकल्प एक होंगे, जरूरतें एक होंगी। जो तुमको पसंद होगा, वही हमको भी होगा। दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं। दोनों एक दूसरे में समाहित हो जाते हैं। हिंदू धर्म में एक ही बार विवाह की रीति है। इसमें तलाक है ही नहीं। स्त्री बच्चा उत्पन्न करके अपना नूर खो बैठती है। इसलिए इससे धोखा नहीं करना है, इसे छोड़कर दूसरी के पास नहीं जाना है।



मेरा अनुभव

नाम लिया है गुरुदेव जबसे,
चाहत रही न कोई तबसे।
रहता हूँ गुरु नाम में खोया,
मन हमारा रहता सोया।
मन का ज़ोर न कोई चलता,
पाप न कोई दिल में पलता।
अब न विषय विकार सताते,
भोग विलास निकट नहीं आते।
हर पल तुम हो साथ हमारे,
रोवें पाँचों चोर बिचारे।
रोम-रोम गुरु नाम है जपता,
गुरु की महिमा गाता न थकता।

मैं मूरख तो इक भोगी था,
सभी इंद्री-सुख रोगी था।
आतम मेरा तुम ही जगाया,
मुझको सही मारग दिखलाया।
सत्य नाम देकर मुझे गुरु ने,
अमर लोक का वासी बनाया।
साहिब दीन्हा नव-जीवन मुझको,
सहस्रों बार नमन है गुरु को।
मैं हूँ मधु जी दास तुम्हारा,
मेरा केवल तुम हो सहारा।
दया हमेशा मुझ पर करना,
कभी भी मुझको तुम न बिसरना।।

अनमोल रत्न

☞ हम मिटने को तैयार हैं, पर अपना सिद्धांत नहीं छोड़ सकते हैं।

☞ जीवन को सकारात्मक बनाएँ। चेतन बनें।

☞ जो बुद्धिमान लोग हैं, उनकी जीवन शैली ऐसी होती है कि भूलकर भी किसी को अनुचित बात नहीं कहते हैं।

☞ **नाम प्रताप कहूँ समझाई। जेहि देख काल डराई।।**
भूत और यमदूत मौसेरे भाई हैं। नाम के बाद यमदूत नहीं आ सकेगा। अगर नरक में भी डाल दिया तो उस नरक को ख़तरा है। पूरे नरक को ख़तरा है। यम भी नज़दीक नहीं आयेगा।

☞ जैसे इंसान में एक जान है। यह जान क्या है? क्या यह आत्मा है? क्या जान और आत्मा एक ही चीज़ है? आवाज़ और शब्द एक ही हैं क्या? नहीं। शब्द आवाज़ पर चलते हैं, पर शब्द एक अलग चीज़ है। इसी तरह आत्मा भी जान में फँसी है। स्वाँसा में जान है। आत्मा का ही पॉवर है, पर स्वाँसा में चल रही है।

हमारी जान स्वाँस और आत्मा के बीच की चीज़ है। जान को आत्मा भी नहीं कह सकते हैं, स्वाँस भी नहीं कह सकते हैं। दोनों के बीच की चीज है।

☞ मैं कुछ भी एक कदम आगे बढ़कर अपने बारे में नहीं कहना चाहता हूँ। अपनी ताकत का इज़हार भी नहीं करना चाहता हूँ। जब भूत प्रेत वाला कोई आता है तो मैं पहले देखता हूँ

कि प्रेतात्मा है कि नहीं। यदि हो तो एक सैकेंड में भगा देता हूँ।

☞ **कोई किसी की आत्मा को कुछ नहीं दे सकता है।**

जितने भी महात्मा हैं, कोई किसी को थोड़ा प्रभावित कर सकता है, पर अगर चाहे कि कुछ दे तो नहीं दे सकता है। कोई भी किसी की आत्मा को एक सूई जितनी चीज़ नहीं दे सकता है। मैंने जो वस्तु आपको दी, उसे आप समझ सकते हैं। मैंने वो चीज़ दी है, जो आपकी पकड़ में नहीं थी, आपकी पहुँच में नहीं थी। मैंने आपके व्यक्तित्व को जगा दिया। यह पी.एच.डी. वाला भी नहीं जगा सकता है। आपके गवाह आपके घर वाले भी नहीं हैं। आपके बारे में वो भी नहीं जानते हैं। आपके कर्मों के बारे में, आपकी सोच के बारे में आपसे बेहतर कोई नहीं जानता है। आप अपने कर्मों के बेहतरीन गवाह हैं। आप देख सकते हैं कि पहले आप क्या थे और अब आप क्या हैं।

☞ **आप मेरा ध्यान नहीं कर पायेंगे।**

आप मेरा ध्यान करना चाहोगे, यह मिमोरी से है। इससे मेरा ध्यान नहीं कर पायेंगे। पूरे एकाग्र हो जायेंगे तो सुरति से ध्यान में आ जाऊँगा। निरंजन को परम पुरुष ने यही शाप दिया था कि मेरा ध्यान नहीं कर पायेगा। संतों में भी परम-पुरुष का नूर होता है, इसलिए उनका भी ध्यान नहीं कर पायेंगे। अन्य किसी का भी करना चाहेंगे, हो जायेगा, पर संतों का नहीं हो पायेगा। निरंजन नहीं कर पाता है सुरति। जब भी देवता प्रास्त होने लगते हैं या त्रिदेव पर कोई संकट आता है तो आदि शक्ति परम-पुरुष की सुरति करती है और रक्षा होती है। इस तरह पूरी संरचना में साहिब का रोल कहीं न कहीं है।

☞ यदि दिल में कपट रखोगे तो समझो कि निरंजन साथ में खड़ा

है। जब कपट रहित हो जाओगे, जब दिल दर्पन की तरह साफ होगा, तब साहिब का नूर आयेगा।

☞ नाम का सुमिरन बहुत ज़रूरी है। अगर नहीं करना चाहते तो मत करो, पर फिर शर्त है कि मन के साथ भी नहीं घूमना। अगर सुमिरन नहीं कर रहे हो तो फिर मन के साथ ही घूम रहे हो, क्योंकि यह मन कहीं-न-कहीं लगेगा ही। फिर आपका नुकसान हो जायेगा, क्योंकि ऐसे में मन का ही रंग चढ़ेगा। यदि सुमिरन में नहीं है तो सीधी सी बात है कि संसार में ही घूमेगा, क्योंकि सुमिरन मन की रीति है, जहाँ चाहे लगा लो।



उठ जाग हंस

उठ जाग हंस तू चल सतलोका,
स्वप्न रूपी संसार है धोखा।।
मोह माया में डाल काल ने,
नित्य रूप आतम को रोका।
छल से हर जीव को उसने,
जनम-मरण अग्नि में झोंका।
चौरासी में उलझाकर,
भोज करे वह सहस्र जीवों का।
धरम-करम में उलझाकर,
काल बना राजा धर्मों का।
परंतु परम सत्य है बंधू,
जीव का घर तो है सतलोका।
जहाँ नहीं प्रलय और साया,
ना ही प्रभाव पाँच तत्वों का।
प्रेम ही प्रेम है जहाँ छलकता,
घर है वह तो परम पुरुष का।
किस विध पहुँचे वहाँ आत्मा,
साहिब दे रहे तुझे यह मौका।
सत्य नाम धन, मन को मार,
ध्यान कर तू सत्य गुरु का।
होगी अगर कृपा सतगुरु की,
पाप कटेगा सब जन्मों का।
यम नहीं छू पाएगा तुझको,
बनेगा वासी अमर लोक का।
तो मेरी विनती सुनो परम प्रिय,
उठ जाग और चल सतलोका।।

तेरी रहमत

तेरी इक निगाह पे ही, सब जज़बात बदल जाते हैं।
ग़म की काली रातें, खुशियों की सौग़ात बदल जाते हैं।
वक्त कितना ही हो बेवफा लेकिन,
तुम जो नज़र डाल दो, तो हालात बदल जाते हैं।
तुम हमेशा रहते हो, हमनवा-हमसुखन,
बाकी तो वक़्त की चाल पर,
सब साथ बदल जाते हैं।
कोई किसी से नहीं तमन्ना,
न गुज़ारिश तुम्हारी,
माँग कर तुमसे फरियादी खैरात,
बदल जाते हैं।
कहने को तो यूँ रहते हो तुम,
अक़्स में मेरे,
नाम तुम्हारा तेले ही,
खयालात बदल जाते हैं।
यूँ तो ज़हन में रहते हैं,
कई सवाल अजीबो-ग़रीब,
तस्सवुर्र तुम्हारा आते ही,
सवालात बदल जाते हैं।
अपनी रहमत की नज़र,
साहिब हमेशा रखना मुझपे,
तेरे करम से ग़म सभी,
राहत की बरसात में बदल जाते हैं।।

मैं तो कुछ भी नहीं

ना मैं कुछ था और ना हूँ,
सतगुरु तेरे बिना।
बिना तुम्हारे मुश्किल है,
शब्दों का मिलना।
मैं तो कहाँ था किसी भी,
ज़िक्र के काबि़ल।
मेरी हर कविता की,
प्रेरणा तुम हो।
मेरे हर ख्याल, हर ख्वाब में,
साहिब तुम हो।
यह तुच्छ जीवन सतगुरु,
है तुम्हरे अर्पण।
इच्छा बस इतनी है कि हर दिन,
पाऊँ साहिब तुम्हरे दर्शन।
यह छोटी सी भेंट,
गुरुदेव तुम्हारी नज़र करता हूँ।
तुम्हारी रहमत से ही अब,
सबकी नज़रों में मैं कद्र रखता हूँ।।

साहिब आए काल जगत में

साहिब आए काल जगत में,
देने यह संदेश।
जहाँ प्रलय माया नहीं,
ऐसा है इक देश।
उसके समान दूजा नहीं कोई,
तीन लोक से न्यारा है।
काल पुरुष की छाया नहीं,
परम पुरुष का द्वारा है।
परम पुरुष के आनन्द में डूब,
माटी के पुतले को खोकर,
वहाँ रहता जीव हमारा है।
नहीं जानते सुन नर जिसको,
वेद भी जानत हारा है।
करते साहिब बात जहाँ की,
देश वह सबसे प्यारा है।
चल हंसा तू देश हमारे,
साहिब देत पुकारा है।
सत्य तो केवल अरम लोक है,
झूठा यह संसारा है।।



अनमोल मानव तन

मानव तन अनमोल है,
मत खोवे बेकार।
देव भी इस देही को तरसें,
मिले न बारम्बार।
पा सकते हम इसी देह में,
साहिब का दीदार।
अन्य चौरासी लाख देह तो,
काल का हैं आहार।
इसी देह में काल देत है,
बंधन कई हज़ार।
काल हंस को है उलझाए,
देके विषय विकार।
इसके मोह-पाश से बचिए,
रहिए आठ पहर होशियार।
माया मोह को तज दो बंधू,
है यह कारागार।
इस बंधन को तोड़ करो तुम,
सत्य नाम आहार।
पूरन गुरु से प्रीत लगाओ,
ले जाएँ जो अमर द्वार।
फिर फिर रहोगे मरते वरना,
होगा जन्म कई-कई बार।
मृत्यु लोक के भव से बंधू,
पूर्ण गुरु ही करते पार।
गुरु का सुमिरन ही करो,
हर दिन-पल-हर बार।

नाम बनाओ ढाल ग़र,
काल करत प्रहार।
गुरु बाँध दे मन चंचल को,
पलें न वहाँ विकार।
गुरु बिन मन भटका देवे,
डाले भरम हज़ार।
परंतु गुरु नाम के आगे,
मन होवे लाचार।
चल न पाए ज़ोर काल का,
कर न पाए वार।
हीरा जन्म अमोल को,
खोना मत बेकार।
गुरु चरणों में कर दो अर्पण,
जीवन के दिन चार।
गुरु ही प्रीतम गुरु ही स्वामी,
गुरु ही पालनहार।
गुरु की भक्ति है ही बंधू,
सब ग्रंथों का सार।
गुरु के बिना यह हंस है,
ज्यों नाव बिना पतवार।
गुरुमुख बनके देखिए,
हो जाओगे पार।
इसीलिए वाणी में साहिब,
करते यह इकरार।
हरि सुमिरे सो वार है,
गुरु सुमिरे सो पार।।

साहिब हमको ले चलो

साहिब हमको ले चलो,
अमर लोक की सैर कराने।
मिल जाए इस जीव को,
मुक्ति साहिब इसी बहाने।
चौरासी के चक्कर में,
घूमे हम तो कई ज़माने।
अमर धाम पहुँचा दो अब तो,
इस जीव के सही ठिकाने।
संसार के सभी हंसों को,
लगा हुआ है काल भरमाने।
पूजे सब पत्थर की मूरत,
परमातम का मरम न जाने।
नहीं चाहते सत्य वे सुनना,
बैठे अपनी हठ को ठाने।
आपको परम-पुरुष ने भेजा,
काल जाल से हमें छुड़ाने।
सांसारिक सब चाहे न माने,
पर हमको साहिब ले चलो,
अमर लोक की सैर कराने।।

साहिब आपको चाहें ऐसे

साहिब आपको चाहें ऐसे,
चल को मछली चाहे जैसे।
जलना चाहें हम भी वैसे,
प्रेम में जले पतंगा जैसे।
मिलना चाहें रंग में तुम्हारे,
दूध में मिलता पानी जैसे।
तुम संग हर पल चलना चाहें,
चले रात संग चँदा जैसे।
चाहें हर दम देखें तुमको,
चकोर देखता चाँद को जैसे।
रहते हो तुम दिल में मेरे,
खुशबू रहती पुष्प संग जैसे।
बसे हुए तुम हम में ऐसे,
माँ में बसती ममता जैसे।
तुम बिन जीवन है इस भाँति,
बिना माझी के नाव हो जैसे।
व्यर्थ है तुम बिन जीवन मेरा,
मसि बिना ज्यूँ कलम हो जैसे।।



साहिब जपियो

साहिब जपियो, साहिब जपियो,
जिव्हा मेरी तू न थकियो।
चाहे कटकर तू गिर जाना,
शब्द कोई और तू न कहियो।
जागे रहियो, जागे रहियो,
नैना मेरे जागत रहियो।
राह एकादश द्‌वारे पर,
तुम साहिब की तकते रहियो।
सुनते रहियो, सुनते रहियो,
कानों मेरे सुनते रहियो।
साहिब की धुन, शब्द साहिब के,
ध्यान लगाकर सुनते रहियो।
सोये रहियो, सोये रहियो,
मनुवा मेरे सोये रहियो।
अब तो होगा मिलन साहिब से,
संसार तेरा छाड़ हंस चलियो।।

मेरे साहिब

सुनो बंधुओ मेरे साहिब,
प्रेम सभी से करते हैं।
कृपा दृष्टि डाल सभी पर,
चिंता सबकी हरते हैं।
नाम दान देकर मेरे साहिब,
कल्याण जीव का करते हैं।
माया के इस भव सागर से,
पार जीव को करते हैं।
साहिब की जो शरण में आएँ,
जीव पहुँच सतलोक को जाएँ।
फिर ना कभी जन्मते वे जन,
फिर-फिर न वो मरते हैं।
सुनो बंधुओ मेरे साहिब,
उद्धार जीव का करते हैं।
दूर कर अज्ञान तम,
ज्ञान प्रकाश को भरते हैं।
अपने पावन स्पर्श से साहिब,
मुक्त काल से करते हैं।।



साहिब अपनी भक्ति देना

सदा ध्यान आप में हो,
साहिब ऐसी भक्ति देना।
पाँचों चोरों से हम जीतें,
साहिब इतनी शक्ति देना।
सदा सत्संग में हम आएँ,
साहिब ऐसी बुद्धि देना।
गुरु का ही गुणगान करें,
ऐसी मन की शुद्धि देना।
मन को मार सतलोक को जाएँ,
ऐसी सुंदर युक्ति देना।
फिर न कभी गर्भ में आएँ,
ऐसी सच्ची मुक्ति देना।
साहिब हम संसारी जीव,
हमको अपनी सुरति देना।।

न हत्या न भूत लगे

लगे न उनको हत्या,
छुएँ न उनको भूत,
जो जन हैं साहिब के दूत।
सँवरे उनका वर्तमान,
सँवरे उनका भविष्य,
जो जन साहिब के शिष्य।
सालोक्य सामीप्य सायुज्य से उच्च,
उन्होंने सच्ची मुक्ति पायी,
जो जन हैं साहिब के अनुयायी।
आते फिर न कभी गर्भ में,
जाते वो हैं अमर धाम,
पास है जिनके साहिब नाम।
लगे न उनको हत्या,
छूए न उनको भूत,
जो जन होये साहिब के,
दूर रहे जमदूत।



साहिब के दरबार में

कुछ भी माँगो सब मिलता है,
साहिब के दरबार में।
इच्छा करके तो तुम देखो,
सुख हैं खड़े कतार में।
साहिब जैसा कोई न दूजा,
इस मिथ्या संसार में।
जितना हो सके बंदगी कर ले,
जीवन के दिन चार में।
साहिब नाम ही है सहायक,
चौरासी मझदार में।
मुक्ति चाहो, तो आओ मानव,
साहिब के दरबार में।
सुख–शांति, युक्ति–मुक्ति,
गुरु के बस एक वार में।
चाहे जो भी माँगो सब मिलता,
साहिब के दरबार में।।

मेरे जीवन की नैया

मेरे जीवन की नैया है,
साहिब तुम्हरे हाथ।
तुम ही मेरे जीवन साथी,
तुम ही मेरे नाथ।
तुम ही कर्त्ता, तुम ही विधाता,
तुम ही पालन हार।
प्रेम–प्रतिष्ठा, मुक्ति–युक्ति,
तुम ही सबका सार।
मेरी शान, मेरी शोहरत,
साहिब केवल तुमसे।
तुम ही मेरे प्रियतम सतगुरु,
मुझे प्यार है केवल तुमसे।
जीवन मेरा, मृत्यु मेरी,
अब तुम्हरे आधीन।
तुम हो एक विशाल सागर,
मैं हूँ एक तुच्छ मीन।।



सुबह कभी तो आएगी

वह सुबह कभी तो आएगी,
जब हर मानव में प्यार होगा।
वह सुबह कभी तो आएगी,
जब एक सारा संसार होगा।
जब जाति धर्म का झगड़ा छोड़,
विश्व शांति की बात होगी।
वह सुबह कभी तो आएगी,
जब खत्म हिंसा की रात होगी।
वह सुबह कभी तो आएगी,
भयमुक्त जिस दिन संसार होगा।
वह सुबह कभी तो आएगी,
जब संपूर्ण विश्व में प्यार होगा।
जब रोटी कपड़ा और मकान,
पास सभी के होगा समान।
वह सुबह कभी तो आएगी,
वह सुंदर सुबह जिसका स्वप्न,
मैं अक्सर देखा करता हूँ।
वह सुबह कभी तो आएगी,
भूख जब रोटी खाएगी।
वह सुबह कभी तो आएगी,
न जाने वह सुबह कब आएगी।।

माया नगरी के दुख

अजब तमाशा देखा हमने,
इस मिथ्या संसार में।
दुख से वंचित कोई न देखा,
दस में न हज़ार में।
कहीं धन न होने का दुख है,
कहीं धन पाकर भी दुख है,
कोई निःसंतान होकर के दुखी,
कहीं संतान ही देती दुख है।
किसी की मिटती भूख नहीं है,
कहीं खाना है पर भूख नहीं है।
कहीं भरे भंडार हैं सारे,
फिर भी मिलता सुख नहीं है।
गज़ब री माया तेरी चाल,
सबको रखा भरम में डाल।
काम क्रोध मद लोभ मोह से,
बुना है तूने विचित्र जाल।
तन का दुख है, मन का दुख है।
कथना कठिन जीवन का दुख है।
परम सुखदायी संसार में रहना,
उस पर अधिक यहाँ मरना दुख है।



कैसा रचनाकर हमारा

यह कैसा अद्भुत खेल रचा है,
समझना मुश्किल, बूझना मुश्किल।
बात-बात में भेद छुपा है,
जिसको मन से भेदना मुश्किल।
इतना विशाल ब्रह्माण्ड रचाया,
फिर पल में मृत्यु निद्रा सुलाया।
इतने सुंदर पुतले बनाये,
फिर जाने क्यों प्रलय अग्नि में जलाये।
अद्भुत यह संसार बनाया,
सबको मोह माया में फँसाया।
कोई रोता निर्धन क्यों मैं,
कोई रोता भूखा क्यों मैं,
कोई धनी दुखड़े का मारा,
कोई अधिक खाके बिमारा।
किसी को मोह पिता का सुत का,
किसी को डराये भय मृत्यु का।
कैसा रचयिता सृष्टि का बैठा,
खुद को जो भगवान है कहता।
किसी को छल से, किसी को बल से,
किसी को भय से, किसी को जप से,
अँधकार में सबको रखता।
अगर रचयिता प्रेम ही करता,
तो इतने कष्ट से कोई न मरता।
कोई न जन्म की पीड़ा सहता,
कोई न मृत्यु के भय में रहता।
पाँच चोरों से कौन बचा है,
कैसा घट का खेल रचा है।
यह संसार यह संसार सच में,
समझ न आया मुझको यार।
कैसा यह रचनाकर हमारा है,
सबको जन्म देके, दुख देके निर्दयता से मारा है।।

अरज़ी हमारी

दुनियादारी ने हमें यह सिखाया है,
समस्त संसार काल की माया है।
इस माया से जो छूटा,
उसी ने साहिब को पाया है।।
भाई–बहन, मित्र–बाँधवा,
छोड़ गए सब साथ।
मेरी जीवन डोर साहिब जी,
है अब तुम्हरे हाथ।।
अपने से हमें दूर न करना,
साहिब इतनी अरज़ी हमारी।
मारो–तारो जो करो,
आगे मरजी तुम्हारी।।
कर रहमत मेरे साहिबा,
करदो बेड़ा पार।
एक तो है सागर यह गहरा,
एक नाव फँसी मझदार।।

सच्ची मुक्ति

तू ही तू सतगुरु, तू ही तू,
दिन में तू है रात में तू,
मेरी हर जज़्बात में तू।
मेरी हर इक चाहत तू है,
दिल की मेरे राहत तू है।
नींद में तू है ख्वाब में तू,
मेरी हर एक बात में तू।
आगे–पीछे, यहाँ–वहाँ,
तू ही मेरा सारा जहाँ।
आग़ाज़ में तू अंजाम में तू,
मेरी सुबह शाम में तू।
सुर में तू संगीत में तू,
मेरी हर एक गीत में तू।
मेरी आत्मा की मुक्ति तू है,
आध्यात्म की युक्ति तू है।
बहुत जतन करके यह जाना,
आख़िर सच्ची भक्ति तू है।।



अंकुरी जीव

सुनो बंधुओ एक अंकुरी जीव की अमर कहानी,
जिसने गंताग से आगे हर जन्म लिखा कहानी।
भक्ति विमुख हर जन्म हुआ वो प्राणी,
परमात्म से मिलने की थी पर उसने ठानी।
हर जन्म कभी पुण्य किए कभी पाप,
कोटि तीर्थ–व्रत कीन्हे, सहा संताप।
हर बार प्रभु की पीड़ा में व्याकुल,
रहा प्यासा हर जन्म और किया विलाप।
बीते युगन युग पर ना मुक्त हुआ वो,
परमात्म के प्रेम में क्षुब्ध हुआ वो।
हर जन्म मोक्ष की इच्छा में विक्षिप्त,
जीव अंकुरी हुआ वो।
साहिब ने कर दी कृपा एक दिन उस पर,
लिया उसकी जीवन डोर को थाम,
देकर नाम दान के धन को,
लेकर चले उसे अमर धाम।
जिस दिन उस जीव को परम ज्ञान प्राप्त हुआ,
मिटी सभी इच्छाएँ उस दिन समस्त दुख समाप्त हुआ।
यह ही है अंकुरी जीव की अमर कहानी,
उस जीव को जब अमर धाम प्राप्त हुआ।।



मन निरंजन सबको ठगा

ऐसा यह मन भयो लुटेरा,
लूट डार्‍यो जग का डेरा।
जीव एक भी छूटे नाहीं,
मन बनायो ऐसा घेरा।
भूल गयो सत्य घर का रस्ता,
जीव बिचारा बीच अँधेरा।
काया को यह समझे अपना,
घूमे चौरासी का फेरा।
विषय विकार में खोयो हंसा,
कहन लगा यह मेरा-मेरा।
ऐसा यह मन भयो लुटेरा,
लूट लियो सब जग का डेरा।।

अंतःकरण की आवाज़

कुछ कहना है मुझे पर,
होता नहीं वर्णन दुख का।
इस संसार में कैसे-कैसे,
प्राणी सामान जुटाए सुख का।
कोई धन-संपत्ति अर्जित करता,
कोई सुंदर स्त्री को मोहित करता।
कुछ अच्छे पकवान खाके मस्त है,
कोई घर-भंडार है भरता।
इस सबके बाद भी कारण,
मिला ना क्या है दुख का।
रस्ता मिला नहीं किसी को भी,
क्या है रस्ता सत्य सुख का।
अब भक्ति मार्ग पर चलना,
किसी को भी याद नहीं,
अंतःकरण की इस युग में,
सुनता कोई आवाज़ नहीं।।



कलयुग का संसार

यह संसार, यह संसार, समझ न आया मुझको यार।
धन की भूख चहुँ ओर है छाई, सबको है दौलत से प्यार।
पैसे के हैं सभी दिवाने, सभी लगे हैं उसे कमाने।
इसी के लिए लोग बुन रहे, झूठ-सत्य के ताने-बाने।
कोई पाप करे कोई बेइमानी, दूध तो क्या बिकता पानी।
मिटा के रहेंगे ईमानदारी को, सबने है मन में ठानी।
मानवता अब ख़त्म हो गई, बनके वह इतिहास खो गई।
मानव-मानव एक समान, यह तो कल की बात हो गई।
कोई लड़े राम नाम पर, कोई रहिमन वास्ते मर रहा।
मानव मार मानव को स्वयं ही, मानवता का वध कर रहा।
संसार बंट गया कई टुकड़ों, कई देशों में, कई धर्मों में।
अपना-अपना पक्ष दबाएँ, उलझ गए हैं सब भरमों में।
मैं हूँ अच्छा हर कोई कहता, अपने ही अभिमान में रहता।
कोई अधिक खा के मर जाता, कोई आजीवन भूखा रहता।
जुआ-शराब-माँस इत्यादि, इसकी है सबको आज़ादी।
भूल गए इतिहास नव-मानव, करते हैं सबकी बर्बादी।
प्रभु का सिमरना सब हैं भूले, मधुशाला में पड़े हैं झूले।
भक्ति मार्ग की बात ही छोड़ो, देश भक्ति भी करना भूले।
लोक लाज अब यहाँ रही न, प्रेम भाव अब यहाँ कहीं न।
मुश्किल जीना हो गया कलयुग में,
संसार रहन की जगह रही न।।



पुस्तक सूची
हिन्दी में

1. परा रहस्या
2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु
3. पावन प्रार्थनाएँ
4. सद्‌गुरु चालीसा
5. वार्षिक डायरी
6. सद्‌गुरु भक्ति
7. कहाँ से तू आया और कहाँ तुझे जाना रे?
8. सत्संग सुधारस
9. नाम अमृत सागर
10. अमृत वाणी
11. सद्‌गुरु नाम जहाज़ है
12. चल हंसा सतलोक
13. कोटि नाम संसार में तिनते मुक्ति न होय
14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला कोय
15. गुरु सुमिरै सो पार
16. तीन लोक से न्यारा
17. सेहत के लिए ज़रूरी
18. सहजे सहज पाइये
19. रोगों से छुटकारा
20. सद्‌गुरु महिमा
21. भक्ति के चोर
22. अनुरागसागर वाणी
23. भक्ति सागर
24. हरि सेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक
25. सत्य नाम के सुमरते उबरे पतित अनेक
26. काग पलट हंसा कर दीना
27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग खोजे बन माहिं
28. गुरु पारस गुरु परस है
29. गुरु अमृत की खान
30. शीश दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान
31. मूल सुरति
32. भृंग मता होय जिहि पासा, सोई गुरु सत्य धर्मदासा
33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
34. गुरु संजीवन नाम बतावे
35. नाम बिना नर भटक मरे
36. रोगों की पहचान
37. यह संसार काल को देशा
38. न्यारी भक्ति
39. साहिब तेरी साहिबी सब घट रही समाय
40. जाप मरे अजपा मरे अनहद भी मर जाए

41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के निदान में
42. सुरति समानी नाम में
43. सबकी गठरी लाल है, कोई नहीं कंगाल
44. निन्दक जीवे युगन युग काम हमारा होय।
45. निराले सद्गुरु
46. कुँजड़ों की हाट में हीरे का क्या मोल
47. जीवड़ा तू तो अमर लोक का पड़ा काल बस आई हो
48. मुझे है काम 'सद्गुरु से जगत रूठे तो रूठन दे'
49. जेहि खोजत कल्पो भये घटहि माहिं सो मूर
50. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
51. बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय
52. अँधी सुरति नाम बिन जानो
53. सत्यनाम निज औषधि सद्गुरु दई बताय
54. सेहत संजीवनी
55. भक्ति दान गुरु दीजिए
56. मन पर जो सवार है ऐसा ऐसा विरला कोई
57. सत्यनाम है सार बूझौ सन्त विवेक करि
58. रोग निवारक
59. मुक्ति भेद मैं कहौं विचारी
60. "तेरा बैरी कोई नहीं तेरा बैरी मन"
61. सुरति का खेल सारा है
62. सार शब्द निहअक्षर सारा
63. करूँ जगत से न्यार
64. बिन सत्संग विवेक न होई
65. सत्य नाम को जनि कर दूजा देई बहा
66. सुरत कमल सद्गुरु स्थाना
67. अब भया रे गुरु का बच्चा
68. मनहिं निरंजन सबै नचाए
69. सत्यपुरुष को जानसी तिसका सतगुरु नाम
70. आपा पौ आपहि बँध्यो
71. सत्य भक्ति का भेद न्यारा
72. जपो रे हंसा केवल नाम कबीर
73. सत्य भक्ति कोई बिरला जाना
74. जगत है रैन का सपना
75. 70 प्रलय मारग माहीं